Prof. Asha Gupta

ISSN : 2394-7845

JOURNAL OF EDUCATION IN TWENTY FIRST CENTURY

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. X, Number - 8 January-February, 2023

Chief Editor
Dr. S. Sabu
Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O.,
Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor
S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation
4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

CONTENTS

Election Analysis of Nagpur Teachers Constuency Vidhan Parishad of Maharashtra Legistative Council 2023 — 1
Dr. Sanjay N. Kaninde

Labour Code Benefits for Workers — 4
Dr. Abha Agarwal

Academic Achievement of Secondary Students in Relation to their Family Environment in West Bengal — 14
Priyanka Das

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन (जनपद बिजनौर के सन्दर्भ में) — 30
डॉ. नीलाक्षी रानी

महाविद्यालयी प्राध्यापकों में कार्यस्थल तनाव का अध्ययन — 35
नजमुन्निसा और डॉ. शशि सिंह

जिला नियोजन व्यवस्थाः एक अध्ययन — 42
विष्णु शंकर दुबे

A Study on the Role of Higher Education in Socio-Economic Development of Telangana State Issues and Challenges — 51
Shankar Adepu

Study of Unlimited Growth of Universe — 59
Dr. Shiva Kant Pathak

Social Competence and Academic Achievement of Secondary School Tribal Students in Idukki District — 70
Dr. Shaiju Francis

प्रेमचन्द और प्रगतिशीलता — 75
प्रो. आशा गुप्ता

Ezra Pound as a Walking Encyclopedia: Examining his Literary and Non- Literary Thoughts — 82
Dr. Andleeb Zahra

प्रेमचन्द और प्रगतिशीलता

प्रो. आशा गुप्ता*

प्रगतिशीलता मानव का प्रधान गुण है। वह एक ही परिस्थिति में अधिक समय तक बँधकर नहीं रह सकता। परिवर्तन उसका धर्म है। यह प्रगतिशीलता प्रत्येक क्षेत्र में देखी जा सकती है। चाहे वह प्रकृति हो या प्रवृत्ति, धर्म हो या आचरण या फिर समाज हो या साहित्य। छायावाद की अतीन्द्रयता से विह्वल हिन्दी साहित्य भी परिवर्तित हो रहा था। वह अपनी छायावादी कैचुली को उतारने हेतु छटपटा रहा था। यह प्रगतिशीलता राजनीतिक स्वार्थों से अनुप्रेरित कोई वाद नहीं था, बल्कि नव्य दृष्टि और पृथक कर्मशीलता को प्रेरणा देने वाली एक व्यापक विचारधारा है जो मानव कल्याण एवं सर्व समानता को धारण करने की सलाह देती है। इस दृष्टि से हम प्रगतिशीलता को लोकमंगल की भावना से जोड़कर, मानव हित को सर्वोपरि मानने वाली शक्ति के रूप में, देख सकते हैं। वैसे भी मानववाद का प्रतिपाद्य मनुष्य का लौकिक सुख है, न कि किसी कल्पित संसार का मरणोत्तर आनंद। एक ऐसा सुख जो उसको प्राप्य है और जो किसी पराशक्ति की स्थिति या भू–भंगिमा पर निर्भर नहीं है। मानव महत्व के प्रति एक अटूट विश्वास को मानववाद का मर्म माना जा सकता है।''1

साहित्य में यह प्रगतिशील दृष्टकोण कोई आकस्मिक घटना नहीं वरन् यह चिंतन और विकास की एक दीर्घ परम्परा का परिणाम और प्रतिफल है। यदि हिन्दी साहित्य को उठाकर देखा जाए तो प्रत्येक युग के वर्गीकृत समाज में संघर्ष दृष्टव्य होता है। जिसके फलस्वरूप तद्युगीन साहित्य में ऐसे युगदृष्टा साहित्यकार का उदय होता रहा है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से तदयुगीन समाज की कुरीतियों, अनीतियों तथा अनाचार के विरूद्ध तलवार रूपी कलम का आश्रय लेकर निम्न वर्ग का शोषण करने वाले शोषक वर्ग का जमकर विरोध किया तथा त्रस्त, पीड़ित और मर्दित मानवता का पक्ष लेते हुए अपने शब्दकोश से ऐसा वातावरण प्रस्तुत किया कि शोषक वर्ग मन ही मन क्रोधित होते हुए भी कुछ कह नहीं सका और तिलमिला कर रह गया।

ऐसे साहित्यकार ही उस समय प्रगतिशील लेखक संघ के संवाहक बने। उनकी दृष्टि पराशक्ति तथा आध्यत्मिकता के कच्छप–आवरण को भेदकर धर्म निरपेक्षता, मानव सेवा तथा मानव सत्ता के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार कर मानव को सर्वोपरि मानने का साहस कर सकी।

ये सत्य भी है कि एक प्रगतिशील लेखक सामाजिक यथार्थ को निरन्तर परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया में देखता है। वह जानता है–समाज का नियमन और संचालन करने वाले सामाजिक यथार्थ के प्रतिमान अपरिवर्तनशील कैसे हो सकते है? एक प्रगतिशील साहित्यकार अतीत के प्रशस्तिगान और वर्तमान के तथ्यात्मक वर्णन को ही अपना साहित्यिक दायित्व नहीं मान सकता वरन् मानवशक्ति की विराटता से उत्पन्न असीम सम्भावनाओं और समाज को बदल सकने का उसका विश्वास अडिग रहता है। वह अपने साहित्य के माध्यम से समाज की दशा और दिशा बदलने की शक्ति रखता है। समाज के यथार्थ के आश्रय से ही प्रगतिशील

*हिन्दी विभाग, साहूरामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, एम.जे.पी. रू.ख. विश्वविद्यालय।

हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द प्रगतिशील आन्दोलन से इसीलिए जुड़े कि वे अपने जीवन में धारण – अपने प्रगतिशील विचारों को जनता के समक्ष रख सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नवल किशोर – 'मानववाद और साहित्य' – दिल्ली, 1962– पृष्ठ – 17
2. अमृतराय – 'नई समीक्षा', हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, बनारस, पृष्ठ – 52)
3. डॉ0 शिवकुमार मिश्र – 'मार्क्सवादी साहित्य चिंतन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृष्ठ – 456'
4. डॉ0 राम विलास शर्मा – 'लोकजीवन और साहित्य', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1955 – पृष्ठ – 8'
5. डॉ0 राम विलास शर्मा – उपन्यास और लोकजीवन की भूमिका – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1956 पृष्ठ 'ज'।
6. डॉ0 जनेश्वर मिश्रा – 'प्रेमचन्द्र की वैचारिक तथा रचनात्मक पृष्ठभूमि' यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, बी–137 कर्मपुरा नई दिल्ली : 1998 पृष्ठ 20–21
7. श्री अमृतराम 'कलम का सिपाही' पृष्ठ 608
8. 'प्रगतिशील लेखक संघ के लखनऊ अधिवेशन में सभापति के आसन से दिया गया भाषण – 'कुछ विचार' के पृष्ठ – 95'
9. नवल किशोर – 'मानवावाद और साहित्य,' दिल्ली 1972, पृष्ठ – 17
10. प्रगतिशील लेखक संघ के लखनऊ अधिवेशन में सभापति के आसन से दिया हुआ भाषण कुछ विचार पृष्ठ – 10
11. प्रेमचन्द्र – ''जीवन में साहित्य का स्थान'' (कुछ विचार) इलाहाबाद 1973, पृष्ठ – 17
12. डॉ0 राममिलास शर्मा – 'प्रेमचन्द्र', प्रथम संस्करण 1941, पृष्ठ 174
13. प्रेमचन्द – 'प्रगतिशील लेखक संघ के मंच से दिया गया भाषण' – इलाहाबाद – 1973 'कुछ विचार', पृष्ठ – 20।

ved: 28 April, 2022; **Accepted:** 28 Jun.-2022, **Published:** July-December, 2022, Issue
ISSN : 2394-4366

भारत में महिलाओं को संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार एवं सरकार द्वारा उनके कल्याणार्थ प्रमुख कार्यरत योजनाएँ

श्रीमती सीमा अग्रवाल
सिएट प्रोफेसर –
माजशास्त्र विभाग,
हू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय,
ली – 243001 (उ.प्र.)
मेल :
maagar2@gmail.com

कनिका पाण्डेय
सर – समाजशास्त्र विभाग,
रामस्वरूप महिला महाविद्यालय,
– 243001 (उ.प्र.)
ल :
apandey25508@gmail.com

सारांश

सर्वप्रथम हम महिलाओं के ऐतिहासिक पहलू पर दृष्टिपात करेंगे– वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त उन्नतशील मानी जाती है, स्त्री महत्वपूर्ण कार्यों में भी समान भागीदारी करती थी। वैदिक काल के बाद उनकी स्थिति में गिरावट आने लगी जो विदेशी आक्रमणकारियों की घुसपैठ के साथ अपने चरम पर पहुँची। इन विदेशी आक्रांताओं में मुसलमानों का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है कि उन्होंने महिलाओं का अपहरण करके भ्रष्ट किया और इसीलिए परदा प्रथा, सती–प्रथा, जौहर–प्रथा, बालिका शिशु हत्या जैसी कुरीतियाँ जन्म ली। महिलाओं से जुड़ी योजनाओं को तीव्र गति देने के लिए 1985 में महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना की गई तत्पश्चात् 30 जनवरी, 2006 को महिला एवं बाल विकास मंत्रालय बना दिया गया जिसमें महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कानूनी संरक्षण के साथ–साथ भारत सरकार द्वारा उनके कल्याणार्थ कुछ प्रमुख कार्यरत योजनाएँ उल्लेखित की गयीं।

भारत में महिलाओं की स्थिति के बारे में कुछ कहने के लिए उसके अतीत को भी समझना होगा, अनेक कालों में महिलाएँ समाज की मुख्य धारा में रही या हाशिए पर इन सब पहुलओं का विश्लेषण करना होगा। सर्वप्रथम हम महिलाओं के ऐतिहासिक पहलू पर दृष्टिपात करेंगे– वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त उन्नतशील मानी जाती हैं, स्त्री महत्वपूर्ण कार्यों में भी समान भागीदारी करती थी। वैदिक काल के बाद उनकी स्थिति में गिरावट आने लगी जो विदेशी आक्रमणकारियों की घुसपैठ के साथ अपने चरम पर पहुँची। इन विदेशी आक्रांताओं में मुसलमानों का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है कि उन्होंने महिलाओं का अपहरण करके भ्रष्ट किया और इसीलिए परदा प्रथा, सती–प्रथा, जौहर–प्रथा, बालिका शिशु हत्या जैसी कुरीतियाँ जन्म ली। मध्ययुगीन महिलाओं की स्थिति के बारे में प्रस्तुत उदाहरण प्रतिनिधिक ही जान पड़ता है–

'दसवीं और ग्यारहवीं सदियाँ हमारे देश में मुसलमानों के आगमन की साक्षी रही हैं। जिन्होंने बाद में यहाँ अपने पैर मजबूती से जमा लिए। जब हिन्दू संस्कृति का एक ऐसी संस्कृति से टकराव हुआ जो एकदम भिन्न थी तो समाज के अगुवाओं ने अपने हितों, विशेषकर महिलाओं की स्थिति की सुरक्षा के लिए नियम कानून बनाना शुरू कर

ISSN 2394-4366
Vol. 8 , Issue-31+32, July-December, 2022

ABHINAV GAVESHNA

(Multi Disciplinary Quarterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal)

An International Refreed/Peer Reviewed Research Journal of Humanities
Arts, Literature, Culture, Commerce, Science & Social Science

Chief Editor :
Dr. Ranju Kushwaha

Editor :
Dr. Jaya Mishra

अभिनव गवेषणा

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

वर्ष 8, अंक-31+32, जुलाई-दिसम्बर, 2022

Dr. Anamika Kaushiva

International Journal of Arts, Humanities and Social Studies (IJAHSS)

(An International, Open Access, Peer Reviewed Journal)

ISSN: 2582-3647(*Online*)

Date: 06-03-2023

AUTHOR CERTIFICATE

It is hereby certified that the paper titled "A study of Trends of Economic Indicators in India in the Post Covid Period – Facts and Issues of Concern"

by

"Dr. Anamika Kaushiva"

After review is found suitable and has been published in the following journal

Journal Name:	International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
Abbreviated key title:	*Int Jr Arts Huma Soci Studies*
ISSN (*Online*):	2582-3647
Publisher:	IJAHSS
Country of Origin:	India
Website:	https://ijahss.in

Details of Published Article as follow

Volume :	5
Issue :	1
Year :	2023
Manuscript ID :	IJAHSS0501027

Good luck for your future endeavours

Editor In Chief
Dr. Vinay Kumar

This document certifies that the manuscript listed above was submitted by above said respected author
To verify the submitted manuscript please visit our website www.ijahss.in
Or Email us: ijahsrasn@gmail.com

International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
Abb. Key Title: Int J Arts Huma Social Studies
Website: https://www.ijahss.in/
Volume 5; Issue 1; Jan-Feb 2023; Page No. 59-66
OPEN ACCESS
e-ISSN: 2582-3647
Original Paper

A study of Trends of Economic Indicators in India in the Post Covid Period – Facts and Issues of Concern

Dr. Anamika Kaushiva
Professor, Department of Economics, Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly, U.P.

*Corresponding Author
Dr. Anamika Kaushiva

ABSTRACT
Three waves of COVID -19 pandemic across the globe severely affected the e all nations. Two years of slowdown disrupted the global value chains which interconnect all the nations. At the domestic level all economies suffered from a fall in demand and purchasing power on one hand and fall in production and investment due to lockdowns. Before the world could revive from the impact of pandemic, the Ukraine-Russia War worsened the global situation. The falling growth rates in advanced economies, inflationary trends across the globe seem to imply that the world economy is moving towards a recession. India is witnessing downward trends in many economic indicators and inflation though its growth rate continues to be better than many neighboring economies. This study attempts to analyse the economic situation in India in this scenario. The study outlines the growth trends in economic indicators: Growth rate of gross domestic product, saving-investment trends, growth of manufacturing sector, employment level, inflation, and the state of the Rupee in the post pandemic period. Secondary data from various resources has been used. The analysis of data on these fronts reveals that recission is around the corner at the global level but India is performing better than many nations. Still, the economists are worried about India's 'K Shaped' trend in consumption expenditure which is broadening the socio-economic disparity of the rich and the poor. The level of optimism in both the consumer and the private investor continues to be very low. In the rural economy, growth has become stagnant. If the global recessionary trends result in the diversification of supply chains away from China towards India and India's manufacturing sector picks up, India may benefit from the global headwinds.

Keywords: *Covid Pandemic, Growth, Investment, Employment, Inflation, Recession*

1. INTRODUCTION

Three waves of COVID -19 pandemic across the globe severely affected the economy of all nations. Two years of slowdown disrupted the global value chains which interconnectall the nations and severely affected international trade. At the domestic level all economies suffered from a fall in demand and purchasing power on one hand and fall in production and investment due to lockdowns. Before the world could revive itself from the impact of pandemic, the Ukraine-Russia War worsened the global situation. The falling growth rates in advanced economies, inflationary trends across the globe as well as economic crisis in nations Sri Lanka seem to imply that the world economy is moving towards a recession. India is witnessing downward trends inmany economic indicators and inflation though its growth rate continues to be better than many neighboring economies. This study attempts to analyze the economic situation in India in this scenario. The Study has been made in foursections:introduction, the second section gives a review of literature, the third section has stated the research methodology, the fourth section studies the growth trends in economic indicators: saving -investment trends, growth of manufacturing sector, unemployment level, inflation, and the state of the Rupee in the post pandemic period and the impact of global recessionary headwinds.

2. Review of Literature

The covid pandemic severely impacted all the economics in this era of globalization characterized byinterconnected production markets, global value chains, interlinked financial networks. In the FY 2022, as the world economies starting picking up after the pandemic, the rising inflationary rates and the consequent tightening monetary policies slowed down the growth rates of all economies. The economic thinkers across the globe are now focusing their eyes on the recessionary clouds and India too is worried. Shaktikanti Das (Indian Express, Nov. 2022) stated that factors like increasing interest rates, increasing oil prices due Russia-Ukraine war, inflation, aggressive and synchronised tightening of monetary policies across the globe are causing a global recession. This will weaken the growth rate of the Indian Economy[1]. Shantanu Sengupta (Business Today, Nov. 2022) forecasts that India's economic growth is expected to slow down to 5.9% next year, from an estimated 6.9% growth in 2022 because of fading of impact of post -covid boosts

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:6(4), June: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd June 2022
Publication Date:10th July 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.06.64

INDIA'S NATIONAL MONETISATION PIPELINE FOR INFRASTRUCTURAL EXPANSION – A BRIEF REVIEW

Dr. Anamika Kaushiva
Associate Professor, Department of Economics,
Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Affiliated to M.J.P. Rohilkhand University
Bareilly, Uttar Pradesh, India

Abstract

The target of the Government of India to make the economy a 5 trillion-dollar economy by 2025, along with the need to give a boost to economy in the wake of Covid-19 pandemic, has made rapid investment in infrastructure the need of the hour. In the 2019, the GOI announced its National Infrastructure Pipeline (NIP) for financial years 2019-20 to 2024-25 and planned to invest Rs. 111 lakh crores in infrastructural projects. Accordingly, all infrastructure ministries, along with the NITI Aayog and Ministry of Finance, outlined the National Monetisation Pipeline (NMP) which was launched on 23 Aug 2021 to raise Rs. 6 Lakh crore by leasing out public infrastructural assets over the four years, from FY 2022 to FY 2025. The Centre identified 13 sectors in infrastructure to achieve this target, the most important being railways, highways, telecom and airports. The 'National Monetisation Pipeline' plans asset monetisation of potential brownfield infrastructure asset for generating sustainable infrastructure financing. The programme states that the ownership of the assets will remain with the government and the right to use the asset will be transferred to the private entities for a predefined tenure. This paper briefly focuses on the concept of asset monetisation and its models. The National Monetisation Pipeline project has been analysed to understand its objectives, framework and the proposed plan. The paper also argues upon the benefits and challenges of the NMP.

Keywords: Asset Monetisation, Brownfield Assets, Infrastructure, Investment

Introduction

The target of the Government of India to make the economy a 5 trillion-dollar economy by 2025, along with the need to give a boost to economy in the wake of Covid-19 pandemic, has made large scale and rapid investment in infrastructure is the need of the hour to drive economic growth. The government has planned to encourage private sector investment and use its efficiencies as well as raising funds by monetisation of brownfield assets which have been created. The government also justifies that asset monetisation is the best alternative tool, given the situation of limited fiscal resources, increasing burden of welfare spending in the post pandemic period and low levels of investments in greenfield infrastructure projects.

In the 2019, the GOI announced its National Infrastructure Pipeline (NIP) for financial years 2019-20 to 2024-25 and planned to invest Rs. 111 lakh crores in socio-economic infrastructural projects. On one hand this would lead to generation of employment, environment for ease of doing business, and on the other it would pave the path of achieving the Sustainable Development Goals 2030. Atanu Chakraborty, the chairperson of the NIP Task-force submitted its final report in May 2020 and recommended that:

- In order to drive economic growth infrastructural projects worth Rs. 111 lakh crore is needed to be constructed in the period of 2020-2025.
- Roads, railways, energy and urban projects will account for approximately 70% of this investment.
- The centre-state sharing will be 39% and 40% respectively while the private sector will have a share of 21%.

Accordingly, all infrastructure ministries, along with the NITI Aayog and Ministry of Finance, outlined the framework, objectives and procedure of National Monetisation Pipeline (NMP) which was launched on 23 Aug 2021 to raise Rs. 6 Lakh crore by leasing out public infrastructure assets over the four years, from FY 2022 to FY 2025. The Centre identified 13 sectors in infrastructure to achieve this target, the most important being railways, highways, telecom and airports. The NMP proposed to raise revenues of approximately 14% of the Centre's outlay of Rs. 43.39 lakh crore under National Infrastructure Plan. The 'National Monetisation Pipeline (NMP)' plans asset monetisation of potential brownfield infrastructure asset for generating sustainable infrastructure financing. The programme states that the ownership of the assets will remain with the government and the right to use the asset will be transferred to the private entities for a predefined tenure.

Methodology

This paper briefly focuses on the concept of asset monetisation and its models. Asset monetisation has been discussed in the Indian context and the National Monetisation Pipeline project has been analysed to understand its objectives, framework and the proposed plan. The paper also argues upon the benefits and challenges of the NMP. The study has been based on exploratory research

Prof. Preeti Pathak

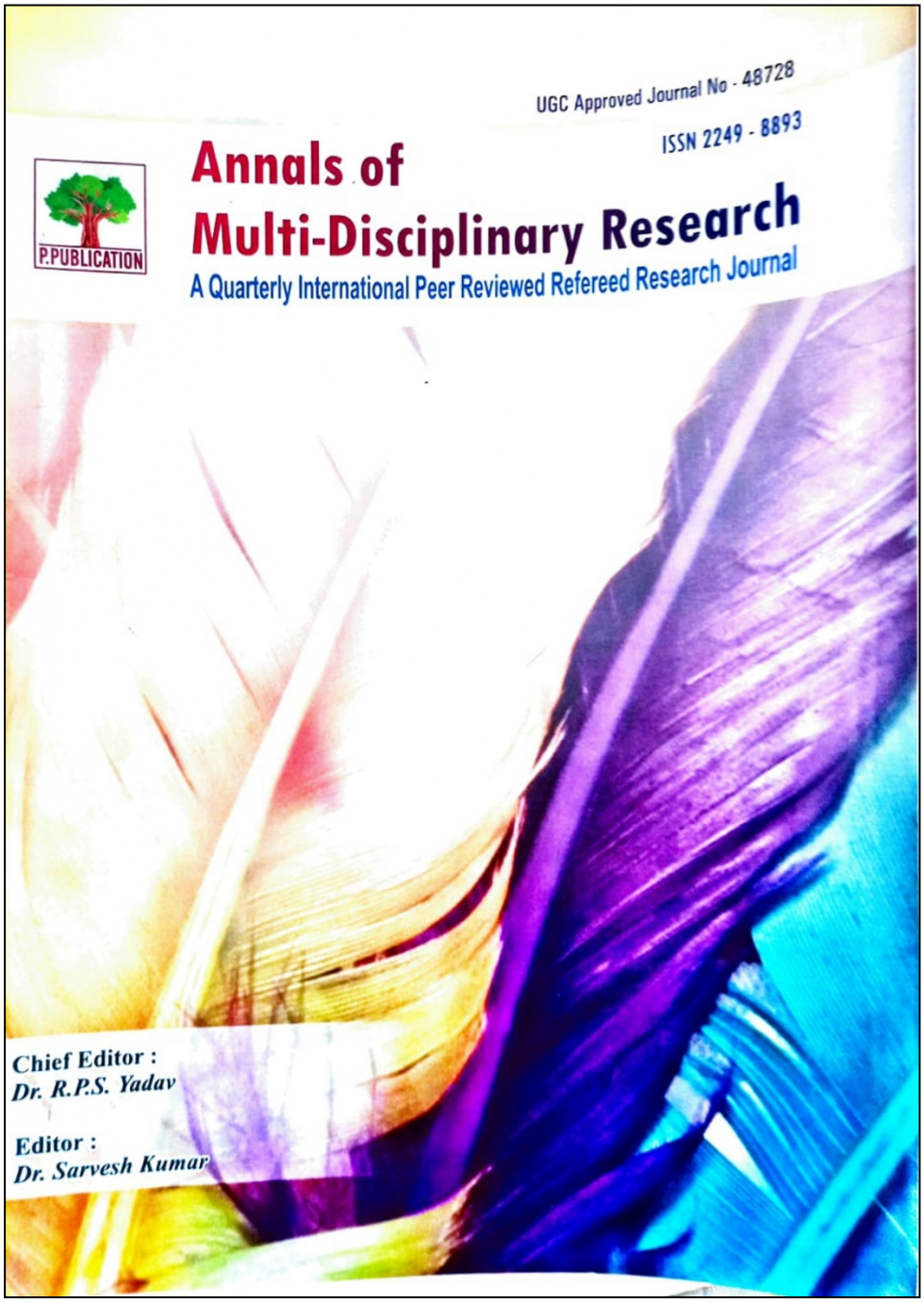

UGC Approved Journal No – 48728
(IIJIF) Impact Factor - 4.034

ISSN 2249 - 8893

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Volume 12 **Issue IV** **December 2022**

Editor
Dr. Sarvesh Kumar
UPRTOU Allahabad

Chief Editor
Dr. R. P.S. Yadav
Incharge Director,
School of Humanities
UPRTOU Allahabad
www. annalsmdresearch.com

E-mail : annalsmdresearch@gmail.com www. annalsmdresearch.blogspot.com

राजभाषा हिंदी : संवैधानिक एवं वैधानिक स्थिति

प्रो. प्रीति पाठक

भाषा विचार अभिव्यक्ति का माध्यम होती है और राजभाषा राज्य या प्रशासन के कार्यों के लि योग की जाने वाली आधिकारिक भाषा होती है। राजभाषा शासन तथा जनता के मध्य संपर्क सेतु व र्य करती है। इसके माध्यम से जनता न केवल अपने देश की नीतियों और प्रशासनिक निर्णयों व ान सकती है अपितु नीति निर्माण में भाग भी ले सकती है। अतः राजभाषा ऐसी होनी चाहिए जो दे ी अधिकांश जनसंख्या द्वारा बोली और समझी जाती हो। भारतवर्ष विविधताओं से भरा देश है, य नेकों भाषाएँ बोली और समझी जाती हैं किन्तु उनमे से हिंदी ही ऐसी भाषा है जो देश की अधिका नसंख्या द्वारा बोली और समझी जाती है। हिंदी भाषा बहुत ही विशिष्ट भाषा है। इसमें अन्य भाषा शब्दों को समाहित करने की अद्भुत क्षमता है। इस भाषा को जैसा लिखा जाता है वैसा ही प ाता है। इस भाषा को समझना और सीखना बहुत ही सरल है और इसे सीखने में समय भी बहु म लगता है। हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह 11वीं शताब्दी से ष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय यद्यपि राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी और अंग्र होते थे तथापि पूरे देश में हिंदी ही पारस्परिक सम्पर्क, संवाद, संचार, विचार–विमर्श और व्यवहार व ाध्यम थी। हिन्दी प्रत्येक क्षेत्र में जनता के विचार–विनिमय का साधन थी चाहे वह पत्रकारिता का ह हा हो या स्वाधीनता संग्राम का। भक्तिकाल के सन्तों ने अपनी रचनाएँ हिन्दी भाषा में कीं। स्वतंत्र ान्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता ने महान भूमिका निभायी। राजा राममोहन राय और स्वामी दयान रस्वती जैसे समाज सुधारक, महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानी अ ुब्रह्मण्य भारती जैसे अनेक महापुरुष हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे।

महात्मा गांधी ने 1917 में भरूच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण ाजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी क ऐसी भाषा है जो राजभाषा के रूप में अपनाये जाने योग्य है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वा ोली और समझी जाने वाली भाषा है। इसमें समस्त भारतवासियों को धार्मिक, आर्थिक, और राजनीति रूप से जोड़ने की अद्भुत क्षमता है। एक 'राजभाषा' के लक्षणों का उल्लेख करते हुए उनहोंने कहा के राजभाषा ऐसी होनी चाहिए जो सरकारी अधिकारियों द्वारा सरलतापूर्वक सीखे जाने योग्य अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली और समझी जाती हो; पढ़ने, लिखने, बोलने और समझने में सरल और परस्पर धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार में सक्षम हो। उन्होंने कहा कि ऐसी भाषा चुनाव करते समय क्षणिक हितों पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि भारत सन्दर्भ में हिन्दी भाषा इन कसौटियों पर पूर्णरूपेण खरी उतरती है।

भारतीय संविधान, हिंदी (देवनागरी लिपि) को भारत की राजभाषा घोषित करता है। साथ यह केंद्र सरकार पर हिंदी भाषा के प्रसार में अभिवृद्धि करने और उसे विकसित करने का कर्त्तव्य अधिरोपित करता है जिससे कि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति की वाहक बन सके। संविधान ने 14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और संविधान राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति मे ही 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिं दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राजभाषा हिन्दी की विकास–यात्रा

हिन्दी दीर्घकाल से भारतवर्ष में जन–जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। भक्तिक

Dr. Seema Gautam

Knowledgeable Research –Vol.1, No.4, *November 2022*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

मुगल बादशाह बाबर और जहांगीर के संस्मरणों में भारतीय समाज की झलक

डॉ सीमा गौतम,
सह आचार्य,
साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
डॉ दीपक सिंह
सहायक आचार्य
स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय, शाहजहांपुर।
Email: visendeepaksingh@gmail.com

****

ABSTRACT

भारत के मुगल राजकुमार और मध्य एशिया के उनके रिश्तेदार न केवल महान योद्धा और साम्राज्य निर्माता थे, बल्कि उनमें से कई के पास परिष्कृत साहित्यिक रुचि भी थी और उनमें अपने आसपास के विभिन क्षेत्रों के विकास का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की जन्मजात क्षमता थी चाहे वह राजनीतिक हो सैन्य या सामाजिक सांस्कृतिक महत्व का हो, भारतीय मुगल राजकुमारों ने न केवल महान विद्वानों और साहित्यिक हस्तियों को संरक्षण दिया, बल्कि वे स्वयं साहित्यिक कार्यों और ऐतिहासिक इतिहास के लेखक भी थे। उनमें से दो, जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर - भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक और उनके परपोते और भारत के चौथे मुगल शासक नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर ने अपने संस्मरण स्वयं लिखने का असाधारण कार्य किया। बाबर ने इसे अपनी मूल भाषा चागताई तुर्की में लिखा था, जिसे तुजुक-ए-बाबुरी, वाकियात-ए-बाबुरी या बाबर नामा के नाम से जाना जाता है। तीसरे मुगल शासक अकबर के शासनकाल के दौरान उनके नवरत्नों या प्रतिष्ठित दरबारियों में से एक अब्दुल रहीम खान-ए-खाना द्वारा 1589 - 90 ईस्वी में इस कार्य का फारसी में अनुवाद किया गया था और अध्ययन में इसका उपयोग किया गया है। भारतीय लोग व्यापार और वाणिज्य करते हैं, लेकिन न तो इन बहुमूल्य धातुओं के स्रोत का उल्लेख है और न ही उस समय भारत में निर्मित और व्यापार की जाने वाली वस्तुओं और माल के प्रकार का विवरण दिया गया है। लेकिन बाबर ने भारत में प्रचलित कृषि प्रणाली और सिंचाई पद्धतियों को समझने में गहरी रुचि दिखाई। इसके लिए वह लिखते हैं: "शरद ऋतु की फसलें भारी बारिश से अपने आप उगती हैंय और अजीब बात यह है कि वर्षा न होने पर भी वसंत ऋतु की फसलें उगती हैं। पेड़-पौधों की सिंचाई बाल्टियों में या पहिये से लाये गये पानी से की जाती है। उन्हें दो या तीन वर्षों तक लगातार सिंचित किया जाता हैय जिसके बाद उन्हें पानी की जरूरत नहीं पड़ती.

Keywords: *मुगल राजकुमार और मध्य एशिया, मुगल साम्राज्य, भारतीय समाज, व्यापार और वाणिज्य*

****

भारत के मुगल राजकुमार और मध्य एशिया के उनके रिश्तेदार न केवल महान योद्धा और साम्राज्य निर्माता थे, बल्कि उनमें से कई के पास परिष्कृत साहित्यिक रुचि भी थी और उनमें अपने आसपास के

उनका कहना है कि कश्मीर में ऊनी कपड़े बहुत आम थे। पुरुष और महिलाएँ ऊनी अंगरखा पहनते थे, जिसे वे "पट्टू" कहते थे। कश्मीरियों का मानना था कि अगर उन्होंने अंगरखा नहीं पहना तो हवा उन पर असर करेगी और उनका खाना पचाना मुश्किल हो जाएगा। कश्मीर के पुरुष अपना सिर मुंडवाते थे और गोल पगड़ी पहनते थे, और आम महिलाएँ साफ कपड़े नहीं पहनती थीं। उन्होंने तीन–चार साल तक एक ही अंगरखा इस्तेमाल किया, जिसे वे बुनकरों के घर से बिना धोए लाए थे और उसे एक अंगरखा में सिल दिया, और जब तक वह टुकड़े–टुकड़े न हो जाए, तब तक धोया नहीं जाता था।[24] इन्हें छोड़कर, जहाँगीर के संस्मरण उस समय की पोशाक के बारे में विस्तृत और व्यवस्थित वर्णन से रहित हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि सम्राट, पहले से ही भारत में बसे होने के कारण, देश के आम लोगों की पोशाक शैली में कुछ भी असाधारण नहीं पाते थे। लेकिन उन्हें कश्मीरियों, ब्राह्मणों और सन्यासियों की वेशभूषा में विशिष्टता अवश्य दिखी होगी जिसका जिक्र उन्होंने अपने संस्मरणों में किया है।

निष्कर्षतः जहाँ तक भारतीय समाज और संस्कृति के बारे में बाबर और जहाँगीर के विचारों का सवाल है, यह उल्लेखनीय है कि बाबर विभिन्न धर्मों, विशेषकर हिंदू धर्म के बारे में कोई राय नहीं देता है। लेकिन जहाँगीर हिंदू धार्मिक विश्वास के कुछ पहलुओं, जैसे ईश्वर के अवतार के सिद्धांत, के आलोचक रहे हैं। जब अन्य पहलुओं की बात आती है, विशेष रूप से समाज के धर्मनिरपेक्ष और गैर–धार्मिक पहलुओं की, तो बाबर इसकी तीखी आलोचना करता था।

"हिंदुस्तान कुछ आकर्षणों का देश है। इसके लोगों की शक्ल अच्छी नहीं हैय सामाजिक मेलजोल, भुगतान और मुलाकातों में कोई कमी नहीं हैय प्रतिभा और क्षमता का कोई नहींय शिष्टाचार का कोई नहींय हस्तशिल्प और कार्य में कोई रूप या समरूपता, पद्धति या गुणवत्ता नहीं होतीय न अच्छे घोड़े हैं, न अच्छे कुत्ते हैं, न अंगूर, खरबूजा या अव्वल दर्जे के फल, न बर्फ या ठंडा पानी, न बाजारों में अच्छी रोटी या पका हुआ भोजन, न गर्म स्नान, न कॉलेज, न मोमबत्तियाँ, मशालें या कैंडलस्टिक्स, "[25] मुगल साम्राज्य के संस्थापक ने अपने संस्मरणों में लिखा है। लेकिन जहाँगीर भारत की सराहना करता है, विशेषकर इसकी वनस्पतियों, जीवों और इसके परिदृश्य की। सम्राट के संस्मरणों से उस भूमि के प्रति उसके अपार प्रेम का भी पता चलता है, जिस पर वह शासन करता है। उन्होंने कश्मीर[26] की प्राकृतिक सुंदरता और मांडू[27] की सुखद जलवायु की सराहना की।

जहाँगीर अपनी जन्म भूमि के प्रति एक स्वाभाविक बंधन महसूस करता है, वहीं बाबर खुद को अपने मूल देश से "निर्वासित" के रूप में देखता है। तो, लेन पूले का मानना है कि "हालाँकि उसने ख्बाबर, ने अपने नए साम्राज्य पर विजय प्राप्त की, लेकिन उसे यह पसंद नहीं आया।[28] ए.एल. श्रीवास्तव भी लिखते हैं कि बाबर ने भारत को "एक विजेता की नजर से देखा।"[29] बाबर को भारत में जो एकमात्र चीजें पसंद आईं, उनका वर्णन इस प्रकार किया गया हैः "हिंदुस्तान की सुखद चीजें यह हैं कि यह एक बड़ा देश है, और इसमें सोने और चांदी का भंडार है। बारिश के दौरान इसकी हवा बहुत अच्छी होती है।" [30] इसलिए, ईश्वरी प्रसाद सही टिप्पणी करते हैंः "अपने महान पूर्वज बाबर के विपरीत, वह ख्जहाँगीर, भारतीय चीजों का प्रेमी है, भारतीय परिवेश में आनंद महसूस करता है।" [31]

कश्मीर की मनभावन घाटी, अपने शानदार केसर के खेतों और घास के मैदानों के साथ, सम्राट के लिए एक सदैव मनमोहक भूमि थी। उन्हें कश्मीर में गर्मी का मौसम बिताना बहुत पसंद था, जिसे उन्होंने "अनन्त वसंत का बगीचा, एक रमणीय फूलों का बिस्तर" कहा था।[32]

बाबर ने पहली बार 1519 ई. में बाजौर के किले पर कब्जा करके और अटक को पार करके भारत पर आक्रमण किया था, और भारत पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली और 1526 में पानीपत की लड़ाई में अपनी जीत के बाद एक साम्राज्य की स्थापना की थी। लेकिन उन्होंने अल्प जीवन जीया और 1530 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। अगर वे लंबे समय तक जीवित रहते और यहां के लोगों और स्थानों को अधिक देखते तो शायद उन्होंने भारत के बारे में अपनी टिप्पणियों में संशोधन किया होता।

संदर्भ:

1. बाबर, बाबर नामा, फारसी अनुवाद अब्दुर रहीम खान–ए–खाना, बॉम्बे, 1891, पृष्ठ – 178
2. वही, पृष्ठ–191
3. वही, पृष्ठ–191
4. वही, पृ. 199 एवं 200
5. जहांगीर, तुजुक–ए–जहांगीरी, संस्करण सैयद अहमद खान, 1864, पृ. 210
6. शिरीन मूसवी, मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था – एक सांख्यिकीय अध्ययन ब.1595, नई दिल्ली, 1987, पृष्ठ। 310
7. तुजुक–ए–जहाँगीरी, पृ. 207
8. मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था, नई दिल्ली, पृ. 313
9. अपराजिता रॉय, ''सम्राट जहांगीर के आत्मकथात्मक संस्मरण'' में परिचय, मेजर डेविड प्राइस, 1972, पृष्ठ-254
10. तुजुक–ए–जहाँगीरी, पी. 301
11. वही, पृ. 315
12. बाबरनामा, पृ. 205.
13. बाबरनामा, पृ. 204
14. तुजुक–ए–जहाँगीरी, पृ. 119–120
15. वही, पृ. 14.
16. वही, पृ. 341
17. वही, पृ. 176
18. वही, पृ. 34
19. ईश्वरी प्रसाद, ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया, इलाहाबाद, 1939, पृष्ठ, 375
20. वही, पृ. 67
21. बाबरनामा, पृ. 205
22. तुजुक–ए–जहाँगीरी, पृ. 171
23. वही, पृ. 89
24. वही, पृ. 301
25. बाबरनामा, पृ. 204
26. तुजुक–ए–जहाँगीरी, पृ. 124
27. वही, पृ. 45–46
28. स्टेनली लेन पूले, मेडीवल इंडिया अंडर मोहम्मडन रूलर्स, लंदन, 1963, पृष्ठ। 216
29. ए. एल. श्रीवास्तव, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, आगरा, 1971, पृ. 336
30. बाबरनामा, पृ. 205
31. ईश्वरी प्रसाद, ए शॉर्टी हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया, पृ. 233
32. तुजुक–ए–जहाँगीरी, अलेक्जेंडर रोजर्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, एन. दिल्ली, 1989, प्रस्तावना पृष्ठ। एक्स

Dr. Anita

IMPACT FACTOR IIFS-6.875

ISSN 2278-3911

अंक : 102 वर्ष : 30 संख्या : 1 जनवरी-मार्च,2023

SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

www.shodh-prakalp.com

Editor
DR. SUDHIR SHARMA

संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर जिला- दुर्ग (छ.ग.)

■ शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र, रायपुर का प्रकाशन
■ RESEARCH & RESEARCH DEVELOPMENT CENTRE, RAIPUR

■ अंतरराष्ट्रीय मानक मान्यता प्राप्त बहुप्रसारित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में मान्य शोधपत्रिका

Volume CII Number 1 Jan-March. 2023

U.G.C. NO. 63535(OLD LIST) email :shodhprakalp@gmail.com

IMPACT FACTOR IIFS-6.875 U.G.C. NO. 63535(OLD LIST)

शोध एवं अनुसंधान पर छत्तीसगढ़ से नियमित प्रकाशित एवं स्थायी पंजीकृत रिसर्च जर्नल

संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा

प्रबंध संपादक
डॉ. तृषा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा
स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय, हुडको, भिलाई नगर

मुख्य सलाहकार संपादक
डॉ. ए.आर. चंद्राकर
पूर्व कुलपति, पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त वि.वि. (बिलासपुर)

संपादन मंडल
डॉ. कृष्ण कुमार, (इंग्लैंड)
रमेश नैयर, (रायपुर)
डॉ. चित्तरंजन कर, (रायपुर)
डॉ. के.एल. वर्मा (रायपुर)
ए. के. शर्मा (मुंबई)
डॉ. तीर्थेश्वर सिंह (अमरकंटक)

संपादकीय पता:
डॉ. सुधीर शर्मा, संपादक
ई. डबल्यू. एस.,280, सेक्टर 4, आदिवासी हॉस्टल के पास, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, डंगनिया, रायपुर, 492010
फोन (0771) 4038958, 94253-58748

■
संपादक सहित सभी पद अवैतनिक

www.shodh-prakalp.com
email :shodhprakalp@gmail.com

SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प: एक परिचय

शोध एवं अनुसंधान गतिविधियों के स्वीकृत अध्ययन के लिए **शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र** की स्थापना की गई थी. शोध-प्रकल्प केंद्र द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक रिसर्च जर्नल है। शोध-प्रकल्प का संपादन मंडल देश के विभिन्न राज्यों के विद्वानों की सहभागिता से विगत बीस वर्षों से कुशलतापूर्वक कार्य कर रहा है. सहकारिता के आधार पर प्रकाशित इस रिसर्च जर्नल का प्रसार अविभाजित मध्य प्रदेश और नवीन छत्तीसगढ़ राज्य ही नहीं है अपितु जम्मू से लेकर तिरुवनंतपुरम् तक और नेपाल से लेकर अंडमान निकोबार तक है. देश के दूर-दूर के शोधार्थी और शोध-निर्देशक पत्रिका के आजीवन सदस्य बन चुके हैं और लेखकीय सहयोग भी दे रहे हैं. इसी तरह छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, अंडमान निकोबार, राजस्थान सहित अनेक राज्यों के विश्वविद्यालयों की शोध उपाधि समिति से शोध-प्रकल्प मान्यता प्राप्त हैं। 2017 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली ने शोध-प्रकल्प को मान्य किया है।

शोध-प्रकल्प को अंतरराष्ट्रीय मानक संख्या भी आबंटित है और जर्नल के रूप में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय से भी यह स्थायी रूप से पंजीकृत है. शोध-प्रकल्प का उद्देश्य विषयों की सीमाओं से परे जाकर स्वतंत्र रूप से गहन शोध की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है ताकि शोधपत्र न केवल गंभीर अध्येता के लिए उपयोगी हों बल्कि यह समाजोन्मुखी भी हो. इन्हीं उद्देश्यों का लाभ जर्नल को प्राप्त हो रहा है. शोध-प्रकल्प में कला और सामाजिक विज्ञान के विषयों के अलावा विज्ञान एवं अन्य विषयों के शोधपत्र भी समाहित किए जाते हैं. समय-समय पर विषय-विशेष के विशेषांक भी प्रकाशित होते हैं.

रचनाकारों से निवेदन:

शोध-प्रकल्प का प्रकाशन सामान्यतया जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर माह में किया जाता है. शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्नलिखित बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें:

1. शोधपत्र सामान्य रूप से अधिकतम 2000 शब्दों तक हो तथा अनिवार्य रूप से लगभग 200 शब्दों का सार-संक्षेप भी प्रेषित करें। शोधपत्र मौलिक एवं अप्रकाशित हो।
2. शोधपत्र ए-4 साइज के कागज पर टाइप या कंप्यूटर से एक तरफ ही मुद्रित हो और संदर्भ सहायक ग्रंथ-सूची अनिवार्य रूप से अंत में संलग्न कर प्रेषित करें. संदर्भ सूची में वर्णमाला क्रम में प्रस्तुत की जानी चाहिए, जिसमें क्रमशः उपनाम, मुख्य नाम कोष्ठक में प्रकाशन वर्ष, पुस्तक का नाम एवं पृष्ठ अंकित होना ही चाहिए. यदि पत्रिका का संदर्भ है तो शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, भाग एवं पृष्ठ क्रम दें. चित्र, नक्शे, ग्राफ पृथक से संलग्न करें।
3. शोध-प्रकल्प सहकारिता के आधार पर प्रकाशित की जा रही है इसलिए रचनाकारों से निवेदन है कि आजीवन सदस्यता ग्रहण कर अपना योगदान दें।

सदस्यता : आजीवन : 5000 रु. पाँच वर्ष : 2000 रु. (संस्थागत: 3000 रु.)

शोध-पत्र ई-मेल से प्रेषित करना अनिवार्य है ।

IMPACT FACTOR IIFS-6.875 U.G.C. NO. 63535(OLD LIST)

शोध-प्रकल्प
SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

राष्ट्रीय संपादन मंडल एवं समीक्षक ——— National Edtiorial & Refries Board

मुख्य परामशर्दाता एवं संरक्षक
डॉ. चित्तरंजन कर
पूर्व प्रोफेसर, साहित्य एवं
भाषा अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

विशेष परामशर्दाता
नंदकिशोर तिवारी
पूर्व कुलसचिव
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

इतिहास–पुरातत्व
डॉ. योगेश्वर तिवारी
प्रोफेसर, इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद (उ.प्र.)

इतिहास–संस्कृति
डॉ. प्रदीप शुक्ल
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
गुरू घासीदास वि.वि.,
बिलासपुर (छ.ग.)

कृषि एवं पयार्वरण
डॉ. के. के. श्रीवास्तव
प्राध्यापक,
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

विज्ञान
डॉ. शम्स परवेज
प्रोफेसर, रसायन अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

भाषाविज्ञान
डॉ. श्रीमती शैल शर्मा
प्रोफेसर,
साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

हिन्दी
डॉ. अरूण कुमार होता
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
पं. बंग विश्वविद्यालय,
कोलकाता (पं.बंगाल)

भूगोल
डॉ. श्रीमती जेड. टी. खान
पूर्व, प्रोफेसर
भूगोल अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

पुरातत्व एवं इतिहास
डॉ. आभा पाल
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
इतिहास अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

अँग्रेज़ी
डॉ. एम. एस. मिश्रा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
अंग्रेजी विभाग,
कलिंगा विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

डॉ. कविता वर्मा
सहायक प्राध्यापक
कल्याण स्नातकोत्तर महा.
भिलाई नगर, दुर्ग (छ.ग.)

दर्शनशास्त्र
डॉ. भगवंत सिंह,
पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

अर्थशास्त्र
डॉ. ए.के. पांडे,
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

वाणिज्य एवं प्रबंधन
डॉ. सतीश मोदी
एसोसिएट प्रोफेसर
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय
वि.वि. अमरकंटक (म.प्र.)

राजनीति विज्ञान
डॉ. सुभाष चंद्राकर
वरिष्ठ प्राध्यापक
दुर्गा महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)

शिक्षा संकाय
डॉ. चन्द्रशेखर वझलवार
अध्यक्ष, शिक्षाविज्ञान
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

आयुर्वेद संकाय
डॉ. रूपेन्द्र चंद्राकर
रीडर आयुर्वेद सहिता
एवं सिद्धांत विभाग
शास. आयुर्वेद महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

डॉ. ओ. पी. द्विवेदी
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शरीर रचना विभाग
शास. आयुर्वेद महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

ISSN 2278-3911 SHODH-PRAKALP 4 Volume CII ■ Number : 1 ■ Jan-March 2023

IIFS IMPACT FACTOR

CERTIFICATE OF ACKNOWLEDGEMENT

This is certified that our evaluator evaluated the Journal **"Shodh Prakalp"** E/P- ISSN "**2278-3911**" and the journal got the Impact Factor "**6.875**" and the process adopted for the evaluation of the journal is blind.

This Impact Factor/Evaluation is Valid up to **6/8/2023** .

Visit Us:

Team IIFS
INDIA

IMPACT FACTOR IIFS-6.875 U.G.C. NO. 63535(OLD LIST)

SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal ISSN 2278-3911

अंक : 102 वर्ष : 30 संख्या :1 जनवरी-मार्च,2023

INDEX

1.	ध्यानयोग : भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में	डॉ किरण गुप्ता, सर्वदमन	7
2.	Biafran Conflict in the Flora Nwapa's Novel Never Again	Gajanand Nayaka Dr. Protibha Mukherjee Sahukar	11
3.	Indian-English Novella: The Expanse of Eternal Values	Kamleshwar Prasad Nishada Dr. Madhu Kamrab	16
4.	Existential Vision in William Golding's "Darkness Visible"	Prof. Bhupendra Kumar Patel	19
5.	पढना शाब्दिक के साथ मानसिक एवं अर्थग्रहण क्षमता के विकास का साधन	डॉ. तृप्ता कश्यप	29
6.	पर्यावरण संरक्षण मे शिक्षा की भूमिका	डॉ. दीपिका चटर्जी	31
7.	लोकगीतों में आधुनिकता का प्रभाव	डॉ बिहारी लाल तारम	34
8.	जिओ दूरसंचार द्वारा प्रदत सेवाओं की गुणवत्ता का विश्लेषणात्मक अध्ययन (बिलासपुर शहर के विशेष संदर्भ में)	डॉ. अनामिका तिवारी अंकिता पांडेय	37
9.	तुलसी की नारी भावना	अनीता	41
10.	Role of Information and Communication Technology in Rural Development (A Study with Special Reference to Kathadih Village, Raipur District)	Dr. Narendra Tripathi Preeti Upadhyay	45
11.	कृषि पर लघु सिंचाई साधनों के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. दीपक कुमार चन्द्राकर	48
12.	War, Identity & Women: A Study Of 'A Golden Age ' And ' The Bones Of Grace'	Dr. Priyanka Yadav	50
13.	जनजातीय संग्रहालय भोपाल	डॉ. कविता परस्ते	55
14.	महेन्द्र के हिंदी कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ और उपलब्धियाँ	डॉ मृणाल एम. मैंद	59
15.	हिन्दी भाषा एवं साहित्य सृजन	दुर्गेश कुमार शर्मा, डॉ. शोभा रतूडी	61
16.	यज्ञ एवं पर्यावरण–एक समीक्षात्मक अनुशीलन	पूजा शर्मा, डॉ. ऋतु भारद्वाज	64
17.	Text Mining Approach For Business Intelligence	Mr. Dhirendra Negi	68
18.	A Brief Study On Finite Difference Methods	Kulveer Singh	76
19.	Importance And Benefits of Women Self Help Groups	Shailendra Singh Kushwah	82

www.shodhprakalp.com

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक /संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं। शोधपत्रों में पुनरावृत्ति अथवा मौलिकता के संबंध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

IMPACT FACTOR IIFS-6.875 U.G.C. NO. 63535(OLD LIST)

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Peer Reviewed
Refereed Research Journal

ISSN 2278-3911

तुलसी की नारी भावना

अनीता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

ज्ञात हो कि तुलसीदास ने अनेक पुराण, निगम, आगम तथा अध्यात्म रामायण के अतिरिक्त अन्य विभिन्न ग्रंथों के साथ अपने विचारों व अनुभवों को संचित कर उस 'मानस' का प्रणयन किया है जो लोकमानस के अंतःकरण के साथ एकाकार हो सके। साहित्य समाज का प्रतिबिंब है तो कवि समाज का प्रतिनिधि व पथ प्रदर्शक है। तुलसीदास का संपूर्ण व्यक्तित्व सामान्य है इसमें किंचित भी संदेह नहीं है।

रामोपासक संतशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ऐसे युगद्रष्टा व युगप्रवर्तक महाकवि हैं जिनका काव्य सार्वभौम है। किसी भी कवि की रचना को उसके विचारों, तत्कालीन परिस्थितियों व सिद्धांतों के आलोक मे समझना श्रेयस्कर है। रामचरितमानस के प्रारंभ में ही तुलसीदास ने कहा है–

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा–
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति।।[1]

ज्ञात हो कि तुलसीदास ने अनेक पुराण, निगम, आगम तथा अध्यात्म रामायण के अतिरिक्त अन्य विभिन्न ग्रंथों के साथ अपने विचारों व अनुभवों को संचित कर उस 'मानस' का प्रणयन किया है जो लोकमानस के अंतःकरण के साथ एकाकार हो सके। साहित्य समाज का प्रतिबिंब है तो कवि समाज का प्रतिनिधि व पथ प्रदर्शक है। तुलसीदास का संपूर्ण व्यक्तित्व सामान्य है इसमें किंचित भी संदेह नहीं है।

नारी तत्व सृष्टि का मूल है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में आदिशक्ति को मातृशक्ति के रूप में अभिव्यक्त कर उसके लौकिक व आध्यात्मिक रूप के दर्शन कराए हैं। इस 'रामचरितमानस' में जिन पावन नारियों का चित्रण है उसमें– कौशल्या, कैकेई, सुमित्रा, सुनयना, सीता, तारा तथा मंदोदरी हैं। इन नारियों के चरित्र द्वारा तुलसीदास ने लोककल्याणार्थ ऐसा सर्वोत्तम आदर्श रूप स्थापित किया, जो पददलित हिंदू जाति के उत्थान के लिए अत्यावश्यक था तथा त्याग की ऐसी निर्मल प्रतिमा भी स्थापित की जो अनेक युगों तक प्रत्येक घरों के लिए गर्व व गौरव का प्रेरणा स्रोत बन गया। रामचरितमानस के प्रेरणादायी पात्रो के लिए यह कहना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है कि किसने अधिक त्याग किया? माता कौशल्या ने यदि पुत्र का त्याग किया तो माता कैकई ने पुत्र वियोग के साथ–साथ कीर्ति का लोभ भी त्याग दिया और महाकलक का टीका माथे पर लगाकर 'मानस' रूपी पीयूष रस का पान तीनों लोकों को करने का सौभाग्य प्रदान किया।

कैकई–मंथरा–संवाद तथा दशरथ–कैकई–संवाद में तुलसीदास ने अपना सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की दक्षता का परिचय दिया है। 'रामचरितमानस' में जहाँ अमृत–तुल्य मनोभावों को प्रकट किया गया है वहीं विष–तुल्य मनोभावों को भी स्थान दिया गया है। लोककल्याण हेतु इन गुण–दोषों का प्रकटीकरण करके अमृत और विष को अलग करने का कार्य संत–हंस तुलसीदास द्वारा ही संभव है। तुलसीदास ने स्पष्ट किया है कि माता व विमाता के रूप में कौशल्या और कैकेई का चरित्र लौकिक .ष्टि से भिन्न तथा अलौकिक .ष्टि से अभिन्न है।

वीर प्रसविनी माता सुमित्रा ने भी पुत्र लक्ष्मण की इच्छा का सम्मान करते हुए असीम त्याग का परिचय दिया। माता कैकई ने पुत्र को वनवास की आज्ञा दी तो माता सुमित्रा ने कर्तव्य–पालन की आज्ञा दी और माता कौशल्या ने परिस्थितियों को भापते हुए धैर्य धारण कर स्वयं से ही सहर्ष तीनों को वन जाने की आज्ञा दी। माता सुमित्रा लक्ष्मण को आदेश देते हुए कहतीं हैं–

गुर पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइअहिं सकल प्रान की नाईं।।
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही के।।
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिअहिं राम के नातें।।
अस जियँ जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू।।[2]

चौदह वर्ष के वनवास हेतु जब राम माता कौशल्या से आज्ञा मांगने आते हैं–

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड काजू।।
आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता।।[3]

यह सुनकर माता अत्यंत विचलित हुई किंतु वस्तुस्थिति को समझकर उन्होंने शीघ्र ही धैर्य धारण कर अपना कर्तव्य सुनिश्चित किया और पुत्र से कहा–

तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका।
पितु आयसु सब धरमक टीका।।
दोहा–राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु।।
जौं केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बडि माता।।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौं कानन सत अवध समाना।।[4]

तुलसीदास ने मातृपद को पितृपद से श्रेष्ठ माना है। इस कारण पिता के आदेश के साथ–साथ माता की आज्ञा भी सर्वोपरि माना है। वन–गमन की आज्ञा देकर माता कौशल्या ने अपने अलौकिक विवेक को सिद्ध किया है और साथ ही माता कैकेई के अधिकारों की भी रक्षा की है जो श्रीराम के वन–गमन का कारण बनी थीं। पुत्र को परखने में कैकई ने धोखा खाया जबकि भरत के भातृ–प्रेम को कौशल्या ने पहचाना। कौशल्या को राम, लक्ष्मण व सीता के वन–गमन की उतनी चिंता नहीं थी जितनी उन्हें अहर्निश प्राणाधिक प्रिय भरत की थी। वे सुनयना से कहती हैं–

लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु।।[5]

'रामचरितमानस' के अनेक प्रसंगों में माता कौशल्या ने अपने माता और पत्नी दोनों कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाह किया है और अपने अलौकिक विवेक से लोक–जीवन में ऐसा परमोज्ज्वल आदर्श प्रस्तुत किया है जो उन्हें परम पूजनीय सिद्ध करता है।

मंदोदरी का चरित्र थोड़ा भिन्न है। वह पतिव्रता स्त्री है। रावण द्वारा सीताहरण से अनिष्ट की आशंका को जानते हुए भी वह पति का परित्याग नहीं करती अपितु अपने उचित उपदेश द्वारा रावण को सन्मार्ग पर लाने का निरंतर प्रयत्न करती रहती हैं। राम की शक्ति व उनके परम स्वरूप का स्मरण कराती हुई वह रावण से राम के शरण में जाने का अनुरोध करती रहती है किंतु कभी अपने पुत्र मेघनाद को सदोपदेश देने का कार्य नहीं करती। मेघनाद के प्रति मंदोदरी की उदासीनता और मेघनाद द्वारा मंदोदरी के आदेश की अवहेलना करना राक्षस समाज में स्वाभाविक है।

नारीत्व के उच्चतम आदर्श की प्रतिमूर्ति सीता के चरित्र द्वारा तुलसी ने वैश्विक धरातल को जो उज्ज्वलता प्रदान की है वह अद्वितीय है। लोक कल्याण हेतु सीता द्वारा त्याग व तपस्या का प्रस्तुत उदाहरण गौरवपूर्ण व अनुकरणीय है है। सेविका के रूप में वह गुरुजनों व सभी सासों की सेवा कर उन्हें प्रसन्न करती हैं और पति के सम्मुख विनम्र दासी के रूप में अपने सुघड़ गृहलक्ष्मी होने का प्रमाण भी प्रस्तुत करती हैं–

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी। बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी।।
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरइ।।
जेहि बिधि पासिंधु सुख मानइ। सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ।।
कौसल्यादि सासु गृह माहीं। सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं।।[6]

अशोक वाटिका में बंदिनी सीता जब अपने सतीत्व के बल पर रावण को धिक्कारती है तो त्रैलोक्य विजयी रावण का अभिमान आहत हो उठता है। सीता जी कहती हैं–

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा।।
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बान की।।
सठ सुनें हरि आनेहि मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ।।[7]

सीता के सतीत्व में वह ओज व शक्ति है जो भारतीय नारी के गौरव का प्रतीक है, अपने इसी सतीत्व के बल पर वह अत्यंत कठोर वेदना को भी सह गई किंतु प्राणप्रिय स्वामी के संयोग समय में राम ने उनका परित्याग कर दिया। लोकद्रष्टा संत शिरोमणि तुलसीदास का हृदय नारी के इस दयनीय दशा को सहन न कर सका और उनकी वज्रलेखनी भी सीता निर्वासन प्रसंग को स्थान देने में असमर्थ सिद्ध हो गई। ''रामचरितमानस की कथा में सीता निर्वासन के प्रसंग का समावेश नहीं हुआ और सीता की अग्निपरीक्षा को भी इस रूप में प्रस्तुत किया गया कि उसके अनंतर लोकोपवाद के लिए कोई अवकाश न रह जाए।''[8]

नारी निंदा–

रामोपासक तुलसीदास की नारी भावना निरंतर विवाद व मतभेद का विषय रही है। कतिपय विद्वानों ने तुलसीदास की नारी भावना को आदर्श व श्रद्धा का पात्र माना तथा कुछ आलोचकों का कथन है कि तुलसीदास नारी–जाति की निंदा करते हुए उन्हें 'ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी' की कोटि में रखते हैं। 'मिश्रबंधुओं ने तुलसीदास को नारी निंदक कहा'।[9]

डॉ. उषा पांडेय के अनुसार, ''तुलसीदास में विरागी साधक, संस्कारकर्ता, नीतिकार और कवि इन चारों का योग है। उन्होंने नारी का वर्णन इसी मिश्रित .ष्टि–बिन्दु से किया है। नारी से उनका तात्पर्य उस युग के विलास–रत, कर्तव्य–हीन, कुमार्ग–गामिनी नारी से है। अतः नारी और प्रमदा को एक ही

समझ कर लोक और समाज के बाधक उस रूप को उन्होंने गर्हित एव त्याज्य बताया है। पुरुष वर्ग के होने के कारण स्वजातिगत पक्षपात की किंचित छाया आ जाना अस्वाभाविक नहीं है, यद्यपि उन्होने नारी को कुदृष्टि से देखने वाले के वध को भी पातकहीन बताया है। अतः तत्कालीन समाज की प्रवृत्ति के प्रभाव से उन्होंने नारी को विलास की सामग्री में गिना है, परंतु अंतर के किसी कोण में नारी मर्यादा, उसकी पवित्रता के प्रति श्रद्धा एवं आदर का भाव सतत बना ही रहा।''[10]

तुलसीदास ने परंपरा से चली आ रही नारी के चरित्र को और अधिक उन्नत व उदात्त रूप में प्रस्तुत किया है। 'रामचरितमानस' के अनेक स्थलों पर प्रसंगवश कतिपय ऐसी उक्तियाँ हैं जिसके आधार पर कुछ आलोचकों नें उन्हें नारी–निंदक के रूप में लक्षित किया है। जबकि ऐसे प्रसंगों पर विवेकपूर्ण व निष्पक्ष.ष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। राम के वन–गमन समाचार पर जब अयोध्यावासी अत्यंत दुखित हो जाते हैं तव ऐसे समय में अर्धविक्षिप्त समाज वर्ग के द्वारा कैकेई के लिए कही गई उक्तियों को नारी निंदा के रूप में समझा जाता है–

सदा रामु एहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनु ठाना।।
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ। सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ।।
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई।।
दोहा–काह न पावक जारि सक का न समुद्र समाइ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ।।[11]

दुखित प्रजाजनों द्वारा कही गई यह उक्तियाँ अवसरानुकूल नितात स्वाभाविक है। यहाँ प्रसगवश परिस्थितियो का मेल न खाने से यह धारणा बना लेना कतई उचित नहीं है कि तुलसीदास ने नारी के प्रति अपनी विरक्ति को अवसरानुकूल पाकर नारी निंदा के रूप में व्यक्त किया है। किष्किंधा में सुग्रीव से राम कहते हैं–

सेवक सठ नृपपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी।।[12]

यहाँ श्रीराम सुग्रीव को मित्र के गुण–दोषों को समझाते हुए उन्हें नीति की बातें बताते हैं न कि नारी निंदा करते हैं। 'मानस' में कुनारी व सुनारी दोनों ही स्त्री चरित्रों में भेद स्पष्ट किया गया है। ताड़का और सुपर्णखा ऐसी कुनारियाँ हैं जिनके दोष दूर कर तुलसीदास ने नारी के दोनों रूपों में मातृशक्ति रूप के दर्शन कराएँ हैं।

सुंदरकांड का वह प्रसंग जो लोकमानस में सर्वाधिक प्रचलित है–

ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।13

अधिकांश आलोचक इस उक्ति के मर्म को समझे बिना ही यह मानते हैं कि ढोल, गंवार, शुद्र व पशु की भांति नारी भी ताडना की अधिकारी है। यहाँ नारी को ताड़ने से तात्पर्य नारी द्वारा मर्यादा–विरोधी कार्य करने से हैं। तुलसीदास ने ऐसी नारियों के लिए यहाँ पर दंड–नीति का विधान किया है। सृष्टि संचालन हेतु जिस प्रकार जड–चेतन का मर्यादित होना अनिवार्य है, उसी प्रकार लोक–कल्याण हेतु नारी का भी मर्यादित होना अनिवार्य है। ताडना शब्द तभी सार्थक है जब मर्यादा का अतिक्रमण हो रहा हो। 'सकल ताडना के अधिकारी'– यहाँ 'सकल' से तात्पर्य सृष्टि के सभी जड व चेतन तत्व से है। इस उक्ति को और अधिक स्पष्ट करने के लिए समुद्र उस निवेदन को समझना आवश्यक है जब श्रीराम द्वारा समुद्र को सुखाने हेतु बाणसंधान किया जाता है। समुद्र याचना करते हुए कहते हैं– ''हे प्रभु! मेरे अवगुण क्षमा करो। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनकी करनी सहज जड है अर्थात यह जड तत्व है और आपकी माया द्वारा निर्मित प्र.ति के मूल में यह पंचमहाभूत समस्त सृष्टि के कारण हैं। संकेत यह है कि मर्यादा–उल्लंघन से सारी सृष्टि में व्यतिक्रम निश्चित है। आप द्वारा निर्धारित मर्यादा में स्थित आपकी आज्ञा का पालन करते हुए यह पंचमहाभूत अपना–अपना कार्य करते हुए सुखी रहते हैं। आप ताड़ना द्वारा शिक्षा देने प्रस्तुत हुए, यह भला किया क्योंकि जब केवल ढोल, गंवार, शुद्र, पशु और नारी ही नहीं सृष्टि के सकल पदार्थ ही ताड़ना के अधिकारी हैं और मैं सृष्टि का ही एक अंग हूँ तब यह कैसे कहूँ कि मैं ताड़ना का अधिकारी नहीं।''[14]

महाकवि तुलसीदास ने परंपरा से चली आ रही नारी–निंदा संबंधी उक्तियों का परिष्कार कर उनको इस ढंग से वर्णित किया है जिससे समाज में उनका महत्व स्पष्ट हो सके, न कि उनकी बुराइयों का विश्लेषण किया जाए। उन्होंने 'रामचरितमानस' द्वारा नारी के जीवन के सभी विशेष पक्षों पर प्रकाश डाला है जो संपूर्ण नारी जाति को ऊंचे आदर्श पद पर प्रतिष्ठित करता है साथ ही जीवन के नैतिक आदर्शों व आध्यात्मिक पक्षों का समावेश कर भारतीय संस्.ति सुंदर चित्रण किया है। अतः तुलसीदास द्वारा 'रामचरितमानस' में वर्णित नारी जीवन की दिव्यता, गरिमा, शालीनता व अन्य भव्य गुण विश्व पटल पर अंकित हो लोकजीवन में स्थाई प्रेरणा स्रोत बन गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. गुप्त, माताप्रसाद (संपादक), श्रीरामचरितमानस, बाल काण्ड, साहित्य कुटीर, प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1949, पृष्ठ –01.
2. वही, अयोध्या काण्ड, पृष्ठ – 210.
3. वही, पृष्ठ–202.

4. वही, पृष्ठ–202–203.
5. वही, पृष्ठ–300.
6. वही, उत्तरकाण्ड, पृष्ठ–503
7. शुक्ल, पंडित रामकृष्ण (सम्पादक), रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, 1932, पृष्ठ–21
8. त्रिवेदी, डॉ0 ज्ञानवती, गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और मानव जीवन में उसका महत्व, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1967, पृष्ठ–178.
9. पाण्डेय, डॉ0 उषा, मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी भावना, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1959, पृष्ठ –121.
10. वही, पृष्ठ–135.
11. गुप्त, माताप्रसाद (संपादक), श्रीरामचरितमानस, बाल काण्ड, साहित्य कुटीर, प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1949, पृष्ठ –199.
12. वही, पृष्ठ–357.
13. वही, सुंदर काण्ड, पृष्ठ–401.
14. त्रिवेदी, डॉ0 ज्ञानवती, गोस्वामी तुलसीदास की .ष्टि में नारी और मानव जीवन में उसका महत्व, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1967, पृष्ठ–253.

■■

Dr. Priyanka Verma

www.TLHjournal.com Literary Herald ISSN: 2454-3365
An International Refereed/Peer-reviewed English e-Journal
Impact Factor: 6.292 (SJIF)

Politics of Space and Identity: A Reading of Tony Kushner's *Homebody/ Kabul*

Priyanka Verma
Assistant Professor
Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya
Bareilly.

Abstract:

This paper looks at the relationship between space and identity. The title of the play- *Homebody/Kabul* is seminal in highlighting the semantics of this relationship. Identity is constituted by the space within which it is located. Unequivocally this has a bearing on its making or umaking. It is also worth noting that the politics of cartography also plays an important role in according value to life and pronouncing it as livable or grievable (in

The Criterion: An International Journal in English Vol. 13, Issue-III, June 2022 ISSN: 0976-8165

The Politics of Drag: Belize and Prior in *Angels in America*

Priyanka Verma
Assistant Professor,
Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly.

Article History: Submitted-31/05/2022, Revised-29/06/2022, Accepted-30/06/2022, Published-10/07/2022.

Abstract:

In the paper, I seek to discuss Drag and its implications in our socio-cultural matrix. The paper is broadly divided into two sections. In the first section, I supply a sweeping account of the narrative of the play to supplement a better understanding of the core idea indicated in the title. In the second part, I discuss Drag and its meaning and look at its application in the

Click to view Profile
Priyanka Verma

Issue 103 (May-Jun 2022)

Feature Ethics & Politics of Cultural Memory

EDITORIAL
Sunaina Jain: Editorial Reflections

RESEARCH PAPERS and ARTICLES
Aalisha Chauhan: Postmemorial Writing of Trauma: A Therapeutic Healing through Selected Poetry of Rupi Kaur

Manjinder Kaur Wratch: "The Wound is the Place where the Light Enters": Reading the Legacy of Prejudice and the Memories of Human Bonding in Githa *Hariharan's Fugitive Histories*

Noduli Pulu: The Dissonance between Veracity and Memory in Michael Ondaatje's *Anil's Ghost*

Parminder Singh : Digitization and Exhibition of the Cultural Treasures of Punjab: A Case Study of Panjab Digital Library

Priyanka Verma: Food as Cultural Memory: A Reading of *Tomatoes for Neela*

Saeed Ibrahim: MEMORY AND MEMORABILIA - The Inspiration Behind My Book "*Twin Tales from Kutcch*"

Vidit Jain: Restoration versus Destruction: Libraries as Cultural memory Markers

SHORT STORY
Harpreet Kaur Vohra: Warm Socks

POETRY
Mohd Sajid Ansari

Nidhi Rana

Parminder Singh

Praveen Kumar

Sunaina Jain

BOOK EXCERPT WITH an INTRODUCTION
Saeed Ibrahim: Extract from the Book *Twin Tales from Kutcch*

Food as Cultural Memory

Priyanka Verma

Image credit – pixnio.com

Abstract

Culinary cultures sit at the intersection of memory and identity. Theorising food through the aforementioned lens is a valuable way of building a critical repository that advances human understanding about culture. Written by Padma Lakshmi, *Tomatoes for Neela* dwells on food as an integral memory of childhood that negotiates with issues of identity at personal and cultural levels. By exploring questions concerning politics of representation and its implications for personal and cultural memory, the paper seeks to read the book as an ethical act of preservation. Culinary heritage is pivoted on memory, thus, forging a bond between the past and present and bridging the spatio-temporal barriers in the process. In choosing children as her immediate target readers, Lakshmi's motto seems to be to "catch them young". Thus, writing and cooking are undoubtedly the allied instruments in the story that seek to document and save the memory of culture for posterity.

Keywords: Memory, representation, identity, technology.

This paper attempts to theorise food within the tripartite structure of "identity, memory and its reproduction and continuity" (Assmann 2). It mines the intersections of these three vectors that are mutually enmeshed. Through an analysis of Padma Lakshmi's well- acclaimed children's book *Tomatoes for Neela*, published in 2021 and illustrated by Caldecott Honor-winning illustrator Juana Martinez-Neal, this paper theorises the story on the scaffolding of cultural memory and its impact on creating subversive narratives of identity. In the Dedication written for the book, Lakshmi recalls, "Some of my fondest memories from childhood are of cooking with the women in my family. It is the foundation for all I have spent my life working on." Food extends beyond needs guided by biological impulses into the realm of aesthetico-political. Our desire to employ specific practices while cooking and replicate them in new environments emanates not only from a desire to preserve the aesthetic component of cooking but also to assert one's original identity associated with it. The globalising impulse underlying

Dr. Pratibha Pandey

नयी कहानियों में मानवीय मूल्य

डॉ. प्रतिभा पाण्डेय *

नयी कहानी आज के जीवन जीने ,उसे विभिन्न रतरों पर समझने, उसके अर्थ तलाश करने की सार्थकता निरर्थकता खोजने की कहानी है।एक समय वह था, जब कहानी केवल लिखने पढ़ने की चीज थी। लेकिन आज वह समझने समझाने की स्थिति से गुजर रही है।नयी कहानी का प्रारम्भ 1956 से माना जाता है।—'1956 में प्रकाशित अपने एक लेख में नामवर सिंह ने नयी कविता के विजन पर नई कहानी कहने का संकेत दिया । विषयवस्तु ,रुप बंध ,भाषा और दृष्टिकोण में यह कहानियां पूर्ववर्ती कहानियों से भिन्न हैं। ये प्रयोगधर्मी हैं ,इनमें प्रमाणिक अनुभूति ,इनका विन्यास अपने — आप से नियन्त्रित है .'[1] ।डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार —' नयी कविता के वजन पर इसका नाम भी नयी कहानी रख दिया गया ।[2]नयी कहानी के प्रर्वतक में राजेन्द्र यादव ,मोहन राकेश ,कमलेश्वर का नाम आता है ।

मानवीयमूल्यों की चर्चा करने से पूर्व मूल्य शब्द को जान लेना आवश्यक है।मूल्य शब्द संसकृत की मूल धातु में यत् प्रत्तय लगने से बना है ।जिसका अर्थ कीमत, मजदूरी आदि होता है।वस्तुतः हमारा अभिप्रेत मूल्यसे है ,जो अंग्रेजी के वैल्यू शब्द लैटिन भाषा से बना है। जिसकी सामान्य परिभाषा यह बनती है ;कि जो भी इच्छित है ,वही मूल्य है ।प्रत्येक साहित्यकार का एक जीवन दर्शन होता है और इसीलिए वह अपने दर्शन के अनुकूल ही अपने साहित्य में जीवन मूल्यों का चित्रण करता है।मूल्यों के विभाजन के अनेक आधार रहे हैं।सुविधा की दृष्टि से हम मूल्यों को छः भागों में बांट सकते हैं।1—वैयक्तिक2—समष्टिगत 3—आध्यात्मिक 4—भौतिक 5—नैतिक 6—सौन्दर्यमूलक

यह सत्य है कि तत्कालीन युग और समाज के मूल्यों को साहित्य अपनाता है;किन्तु वह नवीन मूल्यों की सृष्टि के माध्यम से समाज को गति भी प्रदान करता है ।समाज का इष्ट मूल्यों की स्थापना करना है।साहित्य का जीवन दर्शन पूर्णतःमूल्यों पर आधारित रहता है।प्रत्येक युग में समाज का इष्ट भिन्न हो जाता है ,जिसके परिणामस्वरुप मनोवृत्ति भी भिन्न हो जाती है।इस भिन्न मनोवृत्ति से उदभूत मूल्यों के अनुरुप ही जीवन दर्शन का निर्माण होता है। इसीलिए साहित्यकार युग दृष्टा एवं युग सृष्टा कहा जाता है।

नयी कहानी आधुनिकता की बोधक है।आधुनिकता एक मूल्य है ;जिसमें ऐंतिहासिक संदर्भ तो है ही ,साथ ही इसके अर्न्तगत परम्परा अवहेलना,प्रयोगधर्मिता वैज्ञानिक दृष्टि,यान्त्रिक सभ्यता,बौद्धिक जटिलता धर्मनिरपेक्षता, अन्तर्राष्ट व्यक्तिवादी जीवन पद्धति मनोविश्लेषणवाद,पृकृतिवाद युग संत्रास ,अस्तित्ववादी विचारणा,नये नैतिकमान ,निम्न मध्यमवर्गबोध और विभिन्न उहापोह भी समाहित है। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं मूल्यों के आधार पर नई कहानियों की समीक्षा प्रस्तुत की है ।

बदलती हुई परिस्थितियों और नये परिप्रेक्ष्य में सम्बन्धों में दरार पड़ गया है परिवारों का इकाइयों में टूटकर बटना ,पारस्परिक सम्बन्धों का समापन ,नैतिक मापदंडों का यथार्थ अंकन नयी कहानी में विशेष रुप से उपलब्ध है।समकालीन विघटित जीवन के यथार्थ चित्रण में राजेन्द्र यादव की 'टूटना' कहानी मन्नू भण्डारी की 'तीसरा आदमी' ,सुरेश सिन्हा की 'टकराता हुआ आकाश' पठनीय है।राजेन्द्र यादव की 'टूटना' कहानी में आभिजात्य वर्ग की नायिका लीना अपने साथ में पढ़ने वाले एक मध्यवर्गीय, आर्थिक रुप से असम्पन्न, मेहनती और कुशाग्रबुद्धि किशोर से कोर्ट मैरिज कर लेती है। विवाह के दो दिन बाद लीना के पिता मि0 दीक्षित द्वारा नव दम्पत्ति के सम्मान में दिये गये प्रीतिभोज में दिए गए आभिजात्य वर्ग की उपस्थिति में किशोर स्वयं को अकेला और सबसे बिल्कुल अलग —सा महसूस करता है।इस तरह की छोटी —छोटी बातें किशोर में हीन ग्रंथि को पैदा करती हैं। लीना के शब्दों में —देखो किशोर ,आज से —बल्कि इसी क्षण से हम लोग साथ नहीं रहेगें । मैं भी सोच रही थी कि अब तुमसे बात कर ही ली जाए । 'न तुम अंधें हो न बहरे ।तुम सिर्फ इन्फीरियोरिटी काम्पलेक्स के

---

* सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

मारे हुए हो। इसीलिए तुम्हे मेरी हर बात वह नहीं लगती ,जो होती है उसके पीछे और बात दीखती है।[3]

मन्नू भण्डारी की कहानी 'तीसरा आदमी' में यह दरार यथार्थ रुप में उभरकर सामने आई है।इस कहानी में शकुन और आलोक के बीच की वार्ता से सतीश में काम्पलेक्स की स्थिति उत्पन्न होती है।—'सचमुच यह उसका काम्पलेक्स है ,जिसे उसने शंकालु ओछा और कुछ हद तक कमीना बना दिया ।अपनी ऐसी हरकतों से तो कभी —कभी उसे स्वयं भी विश्वास होने लगता है कि उसका भय कहीं सच ही है,वरना यह सब क्यों हो?'[4]

नयी कहानियों में संबंधों में अजनबीपन दिखायी देता है।मां पुत्री का अजनबीपन ,पिता पुत्र का अजनबीपन बहिन —बहिन का अजनबीपन आदि बनेक रुपों में दिखयी देता है।पिता पुत्र. का अजनबीपन निर्मल वर्मा की कहानी 'दहलीज' में दिखयी देता है।इस कहानी में दो नो सगी बहिने एक ही युवक से प्यार करती है।जब छोटी बहिन रुनी को पता लगता है ;कि उसकी बड़ी बहिन लेनी भी उस युवक से प्यार करती है तो वह अपने को मरा हुआ समझती है—रुनी चुपचाप आंखें मूंद लेती है।मेहरु और पास खिसक गयी है धीरे से उसके माथे को सहलाया —छोटी बीबी क्या बात है और तब रुनी ने अपनी पलके उठा ली छत की ओर एक लम्बे क्षण तक देखती रही ,उसके पीले चेहरे पर एक रेखा खिंच गयी .....मानो वह दहलीज हो,जिसके पीछे बचपन सदा के लिए छूट गया हो ....

मेहरु,बत्ती बुझा दे—उसने संयत निर्विकार स्वर में कहा —देखती नहीं मैं मर गयी हूं।'[5]

दाम्पत्य जीवन पारिवारिक जीवन का मूलाघार है और भारतीय समाज का बहुत ही पवित्र जन्म जन्मान्तर का बन्धन है।स्त्री पुरुष का परिणय सूत्र में बंधना ही दाम्पत्य जीवन है और यही प्रकिया परिवार की नींव है।दाम्पत्य जीवन तभी सुखमय एवं सन्तोषमय बन सकता है ;जब पति पत्नी दोनो में ही परस्पर सहयोग,सहानूभूति ,एकनिष्ठ प्रेम भावना ,स्नेह ममता मधुरिता विश्वास और त्याग की भावना हो ।दाम्पत्य जीवन की समरसता से सम्बन्धित महाकवि जयशंकर प्रसाद की कामायनी की पंक्तियां उल्लेखनीय है—

समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था
चेतनता एक बिलसती
आनंद अखंड घना था।6

आधुनिक काल में अनेक परिवर्तनों के कारण दाम्पत्य संबन्धों में भी परिवर्तन आये है।आज पति पत्नी का आदर्शवादी संबन्ध लुप्त होता जा रहा है । आज के युग में विवाह ,धर्म समाज और लोकहित की भावना से नहीं किया जाता है।पति पत्नी अपनें —अपने स्वार्थ में खोकर अपनी व्यक्तिगत खुशियों को पूरा करने के लिए एक दूसरे को कुण्ठत करते हैं ।परिणामतःदपम्पत्य जीवन में तनाव उत्पन्न होता है ।नयी कहानियों में दाम्पत्य जीवन का यह तनाव मोहन राकेश की कहानी 'एक और जिंदगी' 'सुहागिने' धर्मवीर भारती की कहानी 'सावित्री न0 2',उषा प्रयिंवदा की कहानी 'कोई नहीं' मन्नू भण्डारी की कहानी 'आकाश आइने में' ममता कालिया की कहानी 'उनका जाना' आदि कहानियों में विवेच्य है।मोहन राकेश की 'एक और जिन्दगी' कहानी में दाम्पत्य जीवन के तनाव की स्थिति का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है।—'तो क्या तुम यही चाहोगी कि इसका फैसला करने के लिए अदालत में जाया जाए । ?

आप अदालत में जाना चाहे ,तो मुझे कोइ ऐतराज नहीं है।जरुरत पड़ने पर मैं सुप्रीम कोर्ट तक आपसे लड़ूंगीं ।आपका बच्चे पर कोई हक नहीं ।'

बच्चे को पिता से ज्यादा मां की जरुरत होती है।कई दिन कई सप्ताह वह मन ही मन संर्घष करता रहा ,'जहां उसे दोनो न मिल सके वहां मां तो उसे मिलनी ही चाहिए ।अच्छा है मैं बच्चे की बात भूल जाउं और नये सिरे से अपनी जिन्दगी शुरु करने की कोशिष करु।'.....

तब तक पति पत्नी दोनो ने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए थे । बच्चा उस समय कोर्ट के अहाते में कौओं के पीछे भागता हुआ किलकारियां भर रहा था वहां आसपास धूल उड़ रही थी और चारो तरफ मटियाली सी घूप फैली थी ।'[7]

प्रेम एक पवित्र भावनाहै ,जीवन का आधार है ,एक व्यापक पहलू है। प्रेम का अर्थ है प्यार ।ईश्वर के प्रति किया गया प्रेम श्रद्धा और भक्ति से सम्पृक्त होता है ।मानव –मानव के बीच का प्रेम त्याग और समर्पण से युक्त हौता है ।स्त्री और पुरुष के बीच का प्रेम शारीरिक और मानसिक लगाव से युक्त होता है।नया कहानी में प्रेम भाव को लेकर उठने वाले द्वन्द और अर्न्तद्वन्द का यथार्थ चित्रण हुआ है । मन्नू भण्डारी की कहानी 'क्षय' में नायिका कुन्ती के हदय में उत्पन्न प्रेम में यह अर्न्तद्वन्द उल्लेखनीय है–'सामने वायलिन पड़ा था ।वह उठी और वायलिन लेकर छत पर चली गयी ।जब उसका मन बहुत खिन्न होता है ,तो उसे वायलिन बजाना बहुत अच्छा लगता है ।रात के सन्नाटे में मन का अवसाद संगीत की स्वर लहरियों पर उतर – उतर कर चारो ओर बिखरने लगता है ।वह आंखें मूंदकर बेसुध सी वायलिन बजाने लगी और उसकी त्रस्त आत्मा खिन्न मन और शिथिल शरीर धीरे–धीरे सब थिरकने लगे।वह किसी और ही लोक में पहुंच गयी । [8]

मन्नू भण्डारी की कहानी 'यही सच है' में शारीरिक एवं मानसिक दोनो प्रकार के प्रेम का विवेचन है ।शारीरिक प्रेम से संबन्धित कहानी की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है –पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता ।बस ,मेरी बाहों की जकड़ कसती जाती है।रजनीगंधा की महक धीरे धीरे तन मन पर छा जाती है।तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरो का स्पर्श महसूस करती हूं ,और मुझे लगता है यह स्पर्श ,यह सुख ,यह क्षण ही सत्य है वह सब झूट था ,मिथ्या था ,भ्रम था ... ।और हम दोनो एक दूसरे के आलिंगन में बंधे रहते हैं ।–चुंबित ,प्रति चुंबित ।'[9]

नयी कहानी में वैयक्तिक मूल्यों की प्रधानता है ;क्योंकि अनेक प्रकार के संघर्षो में रत मानव के व्यक्तित्व पर समाज द्वारा अनेक प्रशनचिन्ह लगाये जाते हैं। प्रश्नचिन्हों से मानव में शक्तिशाली आस्था के भाव उत्पन्न हो जाते हैं ।यह आस्था प्राचीन आध्यात्मिक आस्था नहीं है अपितु भयंकर परिस्थितियों में भी जीवित रहने की आस्था है,जिजीविषा है । जिजीपवषा समझौता लहीं करती उसका यदि कोई समझौता है तो खुद अपने से । क्योंकि वह किसी लौकिक अलौकिक शक्ति से प्राप्त नहीं होती ,वह सिर्फ स्वमन्त्र व्यक्तित्व से प्राप्त होती है।वह जिजीविषा ही निर्णय की शक्ति देती है।जिजीविषा के सन्दर्भ में अमरकान्त की 'जिन्दगी और जोंक' निर्मल वर्मा की 'लवर्स' राजेन्द्र यादव की 'जहां लक्ष्मी कैद है' विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं।अमरकान्त की 'जिन्दगी और जोंक'कहानी में समाज द्वारा नायक रजुआ पर अनेक प्रश्न चिन्ह लग जाते हैं।इसमें नायक रजुआ जिजीविषा का साक्षात रुप है।कहानीकार के शब्दों में –'सच कहता हूं .....इस व्यक्ति ने सदा ऐसे प्रयास किए ,जिससे उसको भीख न मांगने पड़े ।.....मैंनें उसके बारे में कई बार सोचा है कि यह कमबख्त एक ही मुहल्ले से क्यों चिपका हुआ है?घूम –घूम कर शहर में भीख क्यों नहीं मांगता ?मूझे कभी –कभी लगता है कि वह किसी का मुहताज न होना चाहता था और इसके लिए उसने कोशिश भी की ,जिसमें वह असफल रहा । चूंकि वह मरना नहीं चाहता था ,इसीलिए जोंक की तरह वह जिन्दगी से चिपका रहा । लेकिन लगता है जिन्दगी ,स्वयं जोंक सरीखी उससे चिपकी थी और धीरे –धीरे उसके रक्त की अन्तिम बूंद तक पी गयी ।'[10]

इस प्रकार नयी कहानी बदलते मानव मूल्यों के संन्दर्भ में युग सत्य को व्यक्त करने वाली सशक्त विधा रही है ।यद्यपि नयी कहानी विचार ,शिल्प और वस्तु आदि कई स्तरों से बहुत ही मूल्यवान है फिर भी नयी कहानी नये जीवन मूल्यों के अन्वेंषण की स्थिति है ।वस्तुतः विभिन्न अभिवृत्तियां हैं ;जो सामाजिक विषमताओं के परिणामस्वरुप मूल्यों का रुप धारण करने में असमर्थ हैं ।

समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए मानवीय भावना का संचार आवश्यक है ।लोगों में मानव सेवा के प्रति जागृति पैदा करनी होगी तभी चारित्रिक संकट से गुजर रहा समाज इससे बच सकेगा । तभी मूल्यों की सही पहचान हो सकेगी राज्य और देश से परे रखकर मानवता का प्रचार

प्रसार करना चाहिए ।जिससे विश्व में शांति ,सद्भावना एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम'[6] की भावना का विस्तार हो सके।

संन्दर्भ :

1. डॉ. बच्चन सिंह ,हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास पृ: 491,राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली संसकरण 2000
2. डॉ0 नगेन्द्र ,डॉ. हरदयाल ,हिन्दी साहित्य का इत्हिास पृ0 728, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2009
3. एक दुनिया समानांतर पृ.301राजेन्द्र यादव ,राधाकृष्ण प्रकाशन जगतपुरी दिल्ली 2022
4. भण्डारी मन्नू,यही सच है ,पृ. 46,अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली 1984
5. www.femina.in.kahani.April 2021
6. प्रसाद जयशंकर ,कामायनी ,पृ0156 लोकभारती प्रकाशन15–ए,महात्मा गांधी मार्ग इलाहबाद
7. एक दुनिया समानांतर पृ. 246–247 राजेन्द्र यादव ,राधाकृष्ण प्रकाशन जगतपुरी दिल्ली 2022
8. भण्डारी मन्नू, यही सच है ,पृ. 10,अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली 1984
9. भण्डारी मन्नू,यही सच है ,पृ. 154,अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली 1984
10. एक दुनिया समानांतर पृ. 87 राजेन्द्र यादव ,राधाकृष्ण प्रकाशन जगतपुरी दिल्ली 2022
11. महोपनिषद ,अध्याय. मंत्र 71,hi.m.wikipedia.org.wiki

मोहन राकेश ,एक और जिन्दगी ,एक दुनिया समानांतर पृ0–246–247,राधाकृष्ण प्रकाशन जगतपुरी दिल्ली, अक्टूबर 2022न व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है समाज कग बिना उसका ककोई अस्तित्व नहीं है। नयी कहानी में जहां व्यकितगत कुंठा निराशा, संत्रास, का चित्रण है। वहीं सामाजिक संघर्ष,सामाजिक यथार्थ सामाजिक परिस्थिति का चित्रण है। इस सन्दर्भ में फणीश्वरनाथ रेणु की ठुमरी, शिवप्रसाद सिंह की कर्मनाशा की हार मारकण्डेय की महुए का पेड़, कमलेश्वर की राजा निरबंसिया आदि कहानियां समीक्ष्य हैं राजा निरबंसिया कहानी में नर्तमान अर्थ प्रणाली में व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, विवशताओं और परिणामों का चित्रण हुआ है। जहां धन के सामने जीवन के श्रेष्ठ मूल्य समाप्त हो जाते हैं। आधुनिक युग के टूटते जीवन मूल्यों, आस्थाओं तथा विवशताओं को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने दो भिन्न युगों की कहानियों को समानांतर रुप में चित्रित किया है । इस कहानी में जो नैतिक मूल्य उभरकर सामने आते हैं, उनमें पति पत्नी के निश्वार्थ प्रेम के मूल्य को सर्वो परि महत्व दिया गया है। राजा रानी और जगतपति की दोने समानांतर चलने वाली कहानियों से भिन्न जीवन मूल्य चित्रित किये हैं। एक रेश्ठ मूल्य पति के जीवन की रक्ष के लिए दूसरे महत्वपूर्ण मूल्य शारीरिक की चन्दा हत्या कर देती है। रानी वेश बदजकर राजा को मिलती है तो चन्दा चति को बचानननननननने के लिए और बाद में पति की बेकारी हटाने के लिए अपना शरीर बेचती है।यहां नैतिक मूल्यों का ह्रास है । इस नैतिक मूल्य के ह्रास का परिस्थितिवश बना हुआ कारण स्वयं चन्दा का पति जगतपति है। जीवन के अन्त में जगतपति द्वारा कथनीय कथन मानवीय और सामाजिक मूल्यों के संन्दर्भ में अनुशील्य है। पन्दा को उसने लिखा था –'चन्दा मेरी अन्तिम चाह यही है कि तुम बच्चे को लेकर चली आना। अभी एक दो दिन मेरी लाश की दुर्गति होगी ,तब तक तुम आ सकोगी ।वन्दा आदमी को पाप नहीं पश्चाताप मारता है मैं बहुत पहले मर चुका था ।बच्चे को लेकर जयर चली आना। .....किसी ने उसे मारा नहीं है,किसी आदमी ने नहीं । मैं जानता हूं कि मेरे जहर की पहचान करने के लिए सीना चीरा जाएगा। उसमें जहर है। मैनं अफीम नही। रूप्ए खाए हैं। उन रूपयों में कर्ज करा जहर था ,उसी ने मुझे मारा है।मेरी जाश तब तक न जलायी जाए जब तक पन्दा बच्चे को लेकर न आ जाए। आग बच्चे से दिलवाई जाए। बस ....
कहानी सप्तक, सम्पादक : डॉ रमेश चन्द्र शर्मा पृ0 106
नयी कहानियों में वर्ग वैषम्य के साथ साथआकि विपन्नता और इससे डत्पन्न चारित्रिक अर्न्तविरेध और कटुता का स्वर मुखरित हुआ है । वस्तुतः उसमें एक नवीन यथार्थ उभरकर सामने आया है ।नगरो

महानगरें में प्राचीन मान्यताओं को झुठलाया जा रहा है। सम्बन्धों के क्षेत्र में भी परिवर्तन हो रहे हैं ।—राजेन्द्र यादव की मान्यता है कि आज की पीढ़ी का दृश्टिकोण अपनी बुजुर्ग पीढऋी के प्रति बदलता जा रहा है ।श्रद्धा आदर की भावना धीरे धीरे दया में परिवर्तित होती दिखायी देती है और दया कमशःउपेक्षा और उदासीनता में बदलती जाती है ।'5 साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य पृ0—138 इस सन्दर्भ में भीष्म साहनी की कहानी चीफ की दावत, खून का रिश्ता समीक्ष्य है । चीफ की दावत कहानी में शामनाथ अपने वॉस के आने की सूचना से अपनी मां को पुराने सामान की तरह छुपाना चाहता है —

मं आज तुम खना जल्दी खा लेना । मेहमान लोग साढ़ सात बजे आ जायेगें ।

मं ने धीरे से मुहं सें दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा —आज मुझे खना नहीं खना है बेटा ,तुम तो जानते हो ,मांस मछली बने तो मैं कुछनहीं खती ।

—जैसे भी हो अपने काम से जल्दी निपट लेना ।

— अच्छा बेटा ।

और हम लोग पहले बैठक में बैठेंगें ।उतनी देर तुम यहां बरामदे मेंबैठना ।फिर जब हम यहां आ जाएं ,तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।

मां अवाक्बेटे का चेहरा देखने लगी ।फिर धीरे से बोली अच्दा बेटा ।

और मां आज जल्दी सो जाना ।तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है ।

कहानी सप्तक ,सम्पादक :डॉ0 रमेश चन्द्र शर्मा पृ0 56

नयी कहानियों में व्यक्ति स्वातन्त्र्य मूल्य भी देखने को मिलता है ।

नगरीकरण से व्यक्ति कम जीवन में अकेलापन आया है ।कमलेश्वर की खोयी हुई दिशाएं कहानी नगरीकरण की यातना को मुखर करती हुई एक सशक्त कहानी है।एक छोटे नगर इलाहबाद से दिल्ली जैसी महानगरी में आया हुआ एएक युवक किस तरह वहां अपने आपको अकेला अनुभव करता है।प्रेम और सारे भावात्मक सम्बन्ध किस तरह कमशः बिखरने लगे हैं ।अपने आपको भी अपरचित —सा महसुस करता है।—'और फिर बहुत देर बाद थाने का घड़ियाल दो के घंटे बजाता है और उसकी नींद उचट जाती है । नींद के खुमार में ह ीवह चौंक सा पड़ता है।कमरे की खमोशी और सूनेपन से उसे डर जगता है। अंधेरे में ह ीवह निर्मला को टटोलता है .....और बिजली जलाकर वह निर्मला को दोनो कन्णों से पकड़कर अपना मुंह उसके सामने करके डरी हुई आवाज में चूछ्ता है —'मुझे पहचानती हो ? मुझे पहचानती हो ,निर्मला ?'

एक दुनिया ससमानांतर पृ0145

इस प्रकार नयी कहानी।

***

हिन्दी साहित्य

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; Jun 2022; Vol. 02; P. 9-14

प्रेमचंद की कहानियों में स्वतन्त्रता आंदोलन

डॉ० प्रतिभा पाण्डेय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, **बरेली**, उ०प्र०

(प्राप्त : १२ मार्च २०२२)

Abstract

प्रेमचंद सच्चे देशभक्त साहित्यकार के दायित्व का निर्वहन करने वाले मानवतावादी साहित्यकार थे। पराधीनता की श्रृंखलाओं से निबद्ध भारत को स्वतंत्र कराने की उनके जीवन की प्रबल इच्छा थी। स्वतन्त्रता के प्रश्न को उठाने वाले गांधी जी के प्रति उन्हें स्वतन्त्रता प्रेमियों के समान ही बड़ी आस्था थी। बहुत दिनों तक वह गांधी को स्वाधीनता संग्राम के पुरोधा के रूप में देखते रहे। राष्ट्रवादी प्रेमचंद की दृष्टि में राष्ट्रीय मुक्ति का महत्त्व व्यापक अर्थों में है। उनका सम्पूर्ण कहानी साहित्य परतंत्रता की श्रंखलाओ से जकड़े हुए भारत देश की स्वतन्त्रता की प्रेरक हैं। वह स्वतन्त्रता मात्र राजनीतिक ही नहीं अपितु सामाजिक धार्मिक आर्थिक सांस्कृतिक शैक्षिक आदि सभी की थी।

Figure : 00 **References : 12** **Table : 00**

Key Words : प्रेमचंद की कथा–दृष्टि, प्रेमचंद की कहानियों और स्वाधीनता आंदोलन

भारत की स्वाधीनता के लिए लड़ा जा रहा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन राष्ट्र और राष्ट्रीयता के लिए अपने में एक अभूतपूर्व इतिहास था, क्योंकि सदियों से पराधीनता की बेड़ियों से निबद्ध भारतवासियों में स्वतन्त्रता समर में आत्माहूति की प्रबल भावना जाग्रत हो गयी थी। इस राष्ट्रीय भावना का प्रथम उदाहरण सन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता–संग्राम में मिलता है। इस संग्राम के बाद यह भावना दृढ़ होती गयी और इस भावना की ढ़ता ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए समूहिक प्रयत्न आरंभ किए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए समूहिक प्रयत्न को ही राष्ट्रीय आंदोलन, स्वतन्त्रता आंदोलन आदि विविध नामों से जाना जाता है।

प्रेमचंद और उनका साहित्य राष्ट्रवादी साहित्य है। उनकी दृष्टि में राष्ट्र है तो सब कुछ है, राष्ट्र नहीं तो व्यक्ति और समाज का अस्तित्व कुछ भी नहीं। उनका सम्पूर्ण कथा एवं उपन्यास साहित्य राष्ट्रीय भावना एवं चेतना से अनुप्राणित है। राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में साहित्य सृजन में स्वतन्त्रता पूर्व के साहित्यकारों में भारतेन्दु के पश्चात साहित्य एवं युगधर्मी प्रेमचंद ही हिन्दी साहित्य के ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने मानवतावादी पृष्ठभूमि पर प्रजातांत्रिक मूल्यों की व्याख्या करने वाले कथा एवं उपन्यास साहित्य का सृजन किया है। स्वराज्य के फायदे शीर्षक में प्रेमचंद ने स्वराज्य की परिभाषा देते हुए जनता को स्वराज्य प्राप्ति हेतु जागरूक किया है स्वराज्य क्या है।[१]

अपने देश का पूरा–पूरा इंतजाम जब प्रजा के हाथो में हो तो उसे स्वराज्य कहते हैं। जिन देशो में स्वराज्य है वहाँ की प्रजा अपने ही पंचो द्वारा अपने ऊपर राज्य करती है। वहाँ यह नहीं हो सकता की प्रजा लगान और करों के बीच दबी रहे।....जिन देशों में यह दशा होती है और प्रजा के हाथों में उसके सुधारने का कोई साधन नहीं होता। वही देश पराधीन कहलाता है और हमारा भारत देश इसी प्रकार के देशो में है .....क्या हम लोगों में बल–बुद्धि एवं विद्या सर्वथा लोप हो गयी है नहीं यह बात नहीं है भीष्म

और अर्जुन के नाम पर जान देने वाले कभी इतने बलहीन इतने कर्महीन नहीं हो सकते...लेकिन अब हम सचेत हो रहे हैं हमारी निद्रा टूट रही है और हमे पूर्ण विश्वास है कि हम अपने सदुपयोग और पूर्वजों के आशीर्वाद से फिर भारत को उसी उन्नत दिशा में पहुंचा देंगे जहाँ वह था ...इसका एकमात्र साधन स्वराज्य है और भारत में प्रत्येक प्राणी का धर्म है कि वह यथायोग्य इस सद्कार्य में अपने नेताओं की मदद करे।

प्रेमचंद सच्चे देशभक्त साहित्यकार के दायित्व का निर्वहन करने वाले मानवतावादी साहित्यकार थे। पराधीनता की श्रृंखलाओं से निबद्ध भारत को स्वतंत्र कराने की उनके जीवन की प्रबल इच्छा थी। स्वतन्त्रता के प्रश्न को उठाने वाले गांधी जी के प्रति उन्हें स्वतन्त्रता प्रेमियों के समान ही बड़ी आस्था थी। बहुत दिनों तक वह गांधी को स्वाधीनता संग्राम के पुरोधा के रूप में देखते रहे।

राष्ट्रवादी प्रेमचंद की दृष्टि में राष्ट्रीय मुक्ति का महत्त्व व्यापक अर्थो में है। उनका सम्पूर्ण कहानी साहित्य परतंत्रता की श्रंखलाओ से जकड़े हुए भारत देश की स्वतन्त्रता की प्रेरक हैं। वह स्वतन्त्रता मात्र राजनीतिक ही नहीं अपितु सामाजिक धार्मिक आर्थिक सांस्कृतिक शैक्षिक आदि सभी की थी।

राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत प्रेमचंद का प्रथम कहानी संग्रह सन १६०६ में 'सोजेवतन' नाम से प्रकाशित हुआ। इस ऐतिहासिक कहानी संग्रह में राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कहानियाँ संग्रहीत थी। सोजेवतन कहानी संग्रह के शीर्षक का अर्थ है देश का दर्द। परतंत्रता की बेड़ियों में निबद्ध दुखी पीड़ित देश के दर्द का अनुभव करके लेखनी चलाने वाले प्रेमचंद इस संग्रह की एक कहानी में राजपूतों को देश की स्वतन्त्रता के लिए रक्तपात करते हुए चित्रित करते हैं तो दूसरी तरफ शेख मखमूर में देश के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना से तड़पते शौर्यता के दर्शन कराते हैं।इस संग्रह की पाँचों कहानियां देश–प्रेम की भावना से ओतप्रोत हैं। ब्रिटिश सरकार को देश प्रेम की इतनी गहन अनुभूति कराने वाली प्रेमचंद की कहानियां सह्य नहीं हो सकी। फलस्वरूप इस संग्रह को ब्रिटिश सरकार ने नष्ट कर दिया किन्तु यथार्थ जीवन जीने वाली तथा भुक्त भोगी जनपीड़ा एवं देश.पीड़ा से पीड़ित देशप्रेमी प्रेमचंद ने हार नहीं मानी। वह निरंतर देशप्रेम की कहानियाँ लिखते रहे।

जेल, जुलूस, पत्नी से पति, शराब की दुकान, मैकू, समरयात्रा, सुहाग की साड़ी, आहूति, होली का उपहार, चकमा, तावान, कानूनी कुमार आदि अनेक कहानियाँ प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय चेतना की प्रस्तुतीकरण हैं। उनकी यह राष्ट्रीय चेतना कृषक मजदूर के संघर्ष से जन्म लेती है और राष्ट्रीय चेतना जनवादी पक्ष को उभारती हुई जनभावनात्मक चेतना से संपृक्त है।

सन १८५७ से प्रारम्भ राष्ट्रीय आंदोलन का व्यापक रूप सन १६१६ से गति पकड़ता है। १३ अप्रैल १६१६ को मानव मन को हिला देने वाली अत्यंत ही हृदय विदारक घटना घटी। इस दिन असंख्य भारतीय अमृतसर के जलिया वाले बाग में भारत को ब्रिटिश सरकार से मुक्त करने के लिए शांतिपूर्ण विचार कर रहे थे। भारत को पराधीन बनाए रखने की इच्छा रखने वाले ब्रिटिश शासकों ने अचानक आकर निहत्थी और शांतिपूर्ण जनता के खून से होली खेली जो अत्यंत ही दानवी और घोर हिंसा थी।इस दानवी घटना को इतिहास में जालियाबाग हत्याकांड के नाम से जाना जाता है। प्रेमचंद ने अपनी कहानी जेल कहानी की नायिका के चरित्र परिचय में इस हत्याकांड की यथार्थ अभिव्यक्ति की है इस संदर्भ में कहानी की कुछ पंक्तियाँ ध्यातव्य है ...छमा आनंद के इन प्रसंगों से वंचित है वह विधवा है अकेली है। जलिया वाले बाग में उसका सर्वस्व लुट चुका है। पति और पुत्र दोनों ही की आहूति दी जा चुकी है।

अब कोई ऐसा नहीं है जिसे वह अपना कह सके।[२]

सन १६२० में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने असहयोग नामक राष्ट्रीय आंदोलन चलाया। इस आंदोलन में सरकारी नौकरियों, स्कूल कालेजों तथा अदालतों का बहिष्कार किया गया था। विदेशी वस्त्र बहिष्कार इसका मुख्य अंग था। प्रेमचंद ने इस आंदोलन से प्रभावित होकर २० साल की सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और साहित्य के माध्यम से आंदोलन को गति देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसीलिए उन्होंने अपने कहानी साहित्य में जहाँ गुलामी का प्रश्न आता है। वहाँ शिक्षा छुड़वा दी है। आहूति कहानी का विश्वंभर यूनीवर्सिटी की पढ़ाई छोड़कर स्वयंसेवकों में नाम लिखवा लेता हैं। श्विश्वंभर–"मेरे प्राणों का क्या मूल्य है एजरा यह सोचो। एम.ए. होकर भी सौ रूपये की नौकरी। बहुत बढ़ा तीन चार सौ तक जाऊँगा। इसके बदले यहाँ क्या मिलेगा एजानती हो सम्पूर्ण देश का स्वराज्य इतने महान हेतु के लिए मर जाना भी उस जिंदगी से कहीं बढ़कर है"।[३]

'लाल फीता' कहानी में असहयोग आंदोलन के सभी पक्षों का समर्थन है। असहयोग के रूप में छात्र छात्राओं द्वारा स्कूल कालेजों का बहिष्कार सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र वकीलों द्वारा न्यायालयों से बहिष्कार किया गया। इस कहानी का नायक हरिविलास अपने अथक एवं अनवरत परिश्रम से मजिस्ट्रेट के पद पर आसीन होता है। उसकी अवधारणा है कि सरकार जब तक धर्म और आत्मा के विरुद्ध आचरण करने को विवश न कर दे तब तक सरकारी सेवा गुलामी नहीं होती है। उसकी यह अवधारणा लाल फीते से बंधे हुए गुप्त निर्देश–पत्र को पढ़कर शीघ्र परवर्तित हो जाती है, क्योंकि उस गुप्त निर्देश पत्र में अप्रत्यक्ष रूप से असहयोगियों को दमन करने की आज्ञा दी गयी है। इसीलिए वह २० वर्ष की सरकारी नौकरी सेवा को देश–प्रेम, राष्ट्र–प्रेम ए और राष्ट्रीयता के भाव से अभिप्रेत होकर त्यागपत्र दे देता है।

असहयोग आंदोलन के स्कूल कालेजों के त्याग संबंधी विचारधारा से प्रभावित होकर कहानी के नायक हरिविलास का पुत्र शिवविलास भी कालेज से अपना नाम कटवा लेता है। स्वदेशीयता के अंतर्गत विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए स्वदेशी वस्त्र अवलंबन पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में नायक के पुत्र शिवविलास का विचार ध्यातव्य है– "इस चर्खे पर तो सब कुछ निर्भर है। हमारे देश में ७० करोण का कपड़ा हर साल विलायत से आता है। शायद १० करोण का कपड़ा इटली, जापान, फ्रांस आदि देशों से आता होगा। हम तुम और भाग्यवती आध पाव सूत रोज कातें और साल में ३०० दिन काम करें तो तीन मन सूत कात लेंगें। तीन मन सूत में कम–से–कम १०० जोड़ें धोतियाँ तैयार होंगी। ...यदि ३० करोड़ की आबादी में ५० लाख मनुष्य यह काम करने लगे तो हमारे हमारे देश को ८० करोड़ वार्षिक बचत हो जाएगी। अगर एक करोण मनुष्य इस धंधे में लग जाए तो हमें कपड़े के लिए अन्य देशों को एक पैसा भी न देना पड़े।"[४]

सन १६३० में गांधी जी ने नमक सत्याग्रह आंदोलन चलाया। यह आंदोलन ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नमक कर को समाप्त करने के उद्देश्य से चलाया गया। इस आंदोलन के समय प्रेमचंद लखनऊ में रहते थे। उनके घर के सामने अमीनुद्दौला पार्क था। नगर के सारे जुलूस यहाँ से आरंभ होते थे और यहीं आकर उनका अंत होता था। यही कारण था कि इस राजनीतिक घटनाक्रम के प्रत्यक्षदर्शी एवं भुक्तभोगी प्रेमचंद ने असहयोग एवं नमक सत्याग्रह आंदोलन से प्रभावित कई कहानियाँ लिखी जिनमें

चकमा, जेल, शराब की दुकान, जुलूस, समरयात्रा, दुस्साहस कानूनी कुमार, तावान, नमक का दारोगा आदि कहानियाँ समीक्ष्य है। 'चकमा' कहानी में जनता में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्वदेशी वस्त्रों के स्वीकारने की राजनीतिक जागृति का चित्रण है। 'जेल' कहानी में कहानीकार ने राजनीतिक जागृति के अंतर्गत जेल के महत्व को प्रतिपादित किया है। इस संदर्भ में कहानी की पंक्तियाँ दृष्टव्य है –"इसीलिए कि जनता मेरे वलिदानों का आदर करती थी, इसीलिए कि उनके दिलों में स्वाधीनता की जो तड़प थी, गुलामी की जंजीरों को तोड़ देने की जो बेचौनी थी मै उस तड़प और बेचौनी की सजीव मूर्ति समझी जा रही थी।....अब मैं पुलिस के किसी आक्षेप या आरोपण का प्रतिवाद न करूँगी, क्योंकि मैं जानती हूँ कि जेल के बाहर रहकर जो कुछ कर सकती हूँ, जेल के अंदर रहकर उससे कहीं ज्यादा कर सकती हूँ। जेलों के बाहर भूलों की संभावना है, बहकने की संभावना है, समझौते का प्रलोभन हैं, एस्पर्धा की चिंता है, जेल सम्मान और भक्ति की रेखा है, जिसके भीतर शैतान कदम नहीं रख सकता है। मैदान में जलता हुआ अलाव वायु में अपनी उष्णता को खो देता है, लेकिन इंजन में बंद होकर वही आग संचालन का अखंड भंडार बन जाता है।

अन्य देवियाँ भी आ पहुँची और और मृदुला सबके गले गले मिलने लगी फिर भारतमाता की ध्वनि जेल की दीवारों चीरती हुई आकाश में जा पहुँची"।[५]

'शराब की दुकान' कहानी में स्वतन्त्रता आंदोलन के अंतर्गत विदेशी वस्तुओं विदेशी शराब के परित्याग का चित्रण है। इसमें कांग्रेस के स्वयंसेवकों द्वारा शराब की दुकान पर धरना देने से दुकानदार शराब की दुकान छोड़कर स्वदेशी वस्त्रों के रोजगार की बात करता है। इस संदर्भ में कहानी की पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं –"लैसंसदर ने कहा कल से मेरा इस्तीफा है। अब स्वदेशी कपड़े का रोजगार करूँगी, जिसमे जस भी है और उपकार भी।

शराबी ने कहा–घाटा तो बहुत रहेगा।

दुकानदार ने किस्मत ठोककर कहा–घाटा नफा तो जिंदगी के साथ है।"

'पत्नी से पति' कहानी स्वतन्त्रता आंदोलन के मुख्य तत्व विदेशी नौकरियों के परित्याग का उल्लेख है। इसमे मिस्टर सेठ पाश्चात्य सभ्यता सभ्यता संस्कृति से प्रेम करने वाले सरकारी नौकर हैं। पत्नी का भारतीयता से प्रेम, कांग्रेसी जलसों में सहयोग आदि स्वदेशप्रियता देखकर मिस्टर सेठ सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे देते हैं और भारतीय बन जाते हैं। इस संदर्भ में कहानी की पंक्तियाँ समीक्ष्य हैं। मिस्टर सेठ–उन्होंने तुरंत इस्तीफा लिखा और साहब के पास दिया। साहब ने उस पर लिख दिया बर्खास्त।...

गोदावरी–खैर जो हुआ अच्छा ही हुआ। आज से तुम भी कांग्रेस में शरीक हो जाओ।[६]

सेठ ने ओठ दबाकर कहा–लजओगी तो नहीं, ऊपर से घाव पर नमक छिड़कती हो। लजाऊँ क्यों? मै तो खुश हूँ कि तुहारी बेड़ियाँ कट गयी।[७]

'समरयात्रा' कहानी में कांग्रेस के वालंटियरों

..... द्वारा जनमानस में नमक बनाने की जागृति का यथार्थ चित्रण है–"पहले लाखों आदमी नमक बनाते थे। अब नमक बाहर से आता है। यहाँ नमक बनाना जुर्म है आपके देश में इतना नमक है कि सारे संसार का दो साल तक उससे काम चल सकता है। पर आप सात करोड़ रुपए सिर्फ नमक के लिए

देते हैं। आपके ऊसरों में, झीलों में नमक भरा पड़ा है, आप उसे छू नहीं सकते। शायद कुछ दिन में कुओं पर भी महसूल लग जाए। क्या आप अब भी अन्याय सहते रहेंगे।[८]

'नमक का दारोगा' कहानी में नमक कर का चित्रण देखने को मिलता है। इसमें दिखाया गया है कि स्वतन्त्रता से पूर्व नमक आदि जैसी वस्तुओं पर भी कर लगा हुआ हुआ था लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल–प्रपंचों का सूत्रपात हुआ। कोई घूस से काम निकालता था कोई चालाकी से।

'सुहाग की साड़ी' कहानी में विदेशी वस्त्रों के परित्याग एवं स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार का चित्रण है। इस संदर्भ में कहानी की पंक्तियाँ समीक्ष्य है–"शाम हो गयी थी। द्वार पर स्वयंसेवक शोर मचा रहे थे, कुंअर साहब जल्दी आइए ...उधर रत्नसिंह असमंजस में पड़े हुए थे कि प्रतिज्ञा–पत्र पर कैसे हस्ताक्षर करूँ। विदेशी वस्त्र घर में रखकर स्वदेशी व्रत का पालन क्यों कर होगा.....गौरा भी चिंता में डूबी हुई थी। सुहाग की साड़ी सुहाग का चिन्ह है, उसे आग ...कितने अपशकुन की बात है .....।
गौरा–मेरी भूल थी, क्षमा कर दो और इसे लेते जाओ।...
गौरा–नहीं लेते जाओ अमंगल के भाय से तुम्हारी आत्मा का हनन नहीं करना चाहती !यह कहकर उसने अपनी सुहाग की साड़ी उठाकर पति के हाथों में रख दी।...[९]

तत्पश्चात गौरा की सुहाग साड़ी विदेशी वस्त्रों की होली के साथ जल गयी। तत्पश्चात स्वदेशी वस्त्रों की दुकानें तेजी से चलने लगी।

'कानूनी कुमार' कहानी की पात्रा मिसेज कानून की स्वाधीनता प्राप्ति के संदर्भ में चिंतापूर्ण मनाभिव्यक्ति ध्यातव्य है –"मै भी शिक्षा का प्रचार चाहती हूँ, मै भी वाल विवाह बंद करना चाहती हूँ। मै भी चाहती हूँ कि बीमारियाँ न फैलें, लेकिन कानून बनाकर जबर्दस्ती यह सुधार नहीं करना चाहती। लोगों में शिक्षा और जागृति फैलाओं जिससे कानूनी भय के बगैर सुधार हो जाए। आपसे कुर्सी तो तोड़ी जाती नहीं, घर से निकला जाता नहीं, शहरों की विलासिता को एक दिन के लिए नहीं त्याग सकते और सुधार करने चले हैं, आप देश का। इस तरह सुधार न होगा। हाँ पराधीनता की बेड़ी और भी कठोर हो जाएगी।"[१०]

'तावान' कहानी स्वतन्त्रता आंदोलन के मुख्य अंग विदेशी वस्त्र बहिष्कार के संदर्भ में लिखी गयी राष्ट्रीय कहानी है। इसमें दिखाया गया है कि देश–हित के लिए स्वार्थ का वलिदान आवश्यक है। आलोच्य प्रसंग पात्र छकौड़ीमल की पत्नी अम्बा के कथन में दृष्टव्य है–"और कुछ नहीं है घर तो है। इसे रेहन रख दो और अब विलायती कपड़े भूलकर भी न बेचना। सड़ जाए कोई परवाह नहीं। तुमने शील तोड़कर यह आफत सिर ली। मेरी दावा दारू की चिंता न करो। ईश्वर की जो इच्छा होगी वह होगा, बाल बच्चे भूखों मरते हैं, मरने दो। देश में करोड़ें आदमी एसे हैं जिनकी दशा हमारी दशा से भी खराब है। हम न रहेंगे, देश तो सुखी होगा।[११]

इस प्रकार मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में राष्ट्र प्रेम की अभूतपूर्व भावना जनता में जाग्रत कर स्वतन्त्रता–आंदोलन में महती भूमिका निभाई। उनकी कहानियों के वृद्ध, युवा, बच्चे आदि सभी राष्ट्र–प्रेम के भावों से भरकर स्वतन्त्रता आंदोलन को गति देते है। "आज सबेरे ही से गाँव में हलचल मची हुई थी। कच्ची झोपड़ियाँ हँसती हुई जान पड़ती थी। आज सत्याग्रहियों का जत्था गाँव में आएगा कोदई

चौधरी के द्वार पर चंदोवा ताना हुआ है। आटा, घी, तरकारी, दूध और दही जमा किया जा रहा है। सबके चेहरों पर उमंग है, हौसला है, आनंद है।[१२] प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना व्यक्ति, समाज से जुड़ी अंतर्राष्ट्रीय भावना को अपने में हुए है। वे शोषण उत्पीड़न से रहित समरस एवं समतवादी स्वाधीन राष्ट्र के पोषक एवं प्रेरक थे। वे देश की ऐसी स्थिति देखना चाहते थे जिसमें सांप्रदायिक विद्वेष न हो सभी में परस्परिक सहानुभूति, सहिष्णुता सौहार्द, मधुरमा और भ्रातृत्व हो।। सारत उनकी कहानियाँ स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली मणि हैं, जिनका जब–जब अध्ययन किया जाएगा तब–तब राष्ट्र–प्रेम जीवंत रूप में उभरकर सामने आएगा।

संदर्भ

१. विविध प्रसंग भाग २ अमृतराय हंस प्रकाशन पृ० २७०–२७१
२. प्रेमचंद, मुंशी; मानसरोवर भाग–७ www.hindikosh.in page 7
३. वही, www.hindisamay.com
४. वही, प्रेमचतुर्थी www.hindikosh.in.page 62-63
५. प्रेमचंद, मुंशी; मानसरोवर भाग-7 www.hindikosh.in.page15
६. वही, www.hindikosh.in page 52
७. वही, www.hindikosh.in page 30
८. वही, www.hindikosh.in page78
९. वही, www.hindikosh.in page 286-287
१०. वही, भाग–२ www.hindikosh.in page-344
११. वही, भाग–१ www.hindikosh.in page.278
१२. वही, भाग–७ www.hindikosh.in page 72

36

प्रेमचन्द की कहानियों में आदर्श, यथार्थ, तथा आदर्शोन्मुख यर्थाथवाद

डॉ० प्रतिभा पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर हिन्दी,
साहू रामस्वरुप महिला महाविद्यालय, बरेली
एम०जे०पी०रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

****

आर्दशवाद हिन्दी साहित्य लेखन की अति प्राचीन वैचारिक शैली है। हिन्दी साहित्यकारों ने आर्दशवादी पृवृति का हिन्दी व साहित्य की विविध विधाओं में बहुलता से प्रयोग किया है। यह पृवृति संयम, त्याग, दया सहानुभूति, आत्मपीडन आदि शाश्वत सत्यों को कल्याणप्रद रुप में प्रस्तुत करती है । साहित्यकार इस वाद से उन्हीं मानव मूल्यो को महत्व देता है जो शिव के सन्देशवाहक होते हैं । जिनमें लोकमंगलपरक सृजनात्मक शक्ति होती है। यह पृवृति समाज में व्याप्त बुराइयों,कुरीतियों,समस्याओं से मुक्ति दिलाकर मानव मंगल की भवनाओं को प्रस्तुत करने पर बल देती है। यह पृवृति मानव समाज की नैतिक धार्मिक,आध्यात्मिक प्रतिमानो को स्वीकार करके उन्हीं के अनुरुप जीवन ओर समाज को नये रुप में अनुकृत करने उनका रुप बिधान करने की प्रेरणा देता है। साहित्य ओर जीवन दोनो क्षेत्रों में इसका मूल भाव नैतिकतावादी होता है। आर्दशवाद के सन्दर्भ में प्रेमचन्द का अभिमत अनुशील्य है —'साहित्य और कला में केवल मानव —जीवन की नकल को बहुत ऊंचा स्थान नहीं दिया जाता। उसमें आदर्शो की रचना करनी पड़ती है। आदर्शवाद का ध्येय यही है कि वह सुन्दर और पवित्र की रचना करके मनुष्य में जो कोमल और ऊंची भावनाएं है उन्हें पुष्ट करे और जीवन के संस्कारों से मन और हृदय में जो गर्द ओर मैल जम रहा हो उसे साफ कर दे। किसी साहित्य की महत्ता की जांच यही है कि उसमें आदर्श चरित्रों की सृष्टि हो । हम सब निर्बल जीव है,छोटे—छोटे प्रलोभनों में पड़कर हम विचलित हो जाते हैं,छोटे—छोटे संकटों के सामने सिर झुका देते हैं और जब हमें अपने साहित्य में ऐसे चरित्र मिल जाते हैं, जो प्रलोभनो को पैरो तले रौंदते और कठिनाइयों को धकियाते हुए निकल जाते हैं तो हमें उनसे प्रेम हो जाता है,हममें साहस का जागरए होता है ओर हमें अपना जीवन — मार्ग मिल मिल जाता है।[1]

यथार्थवाद हिन्दी साहित्य में पाश्चात्य प्रभाव के कारण प्रचलित हुआ। किसी भी घटना का यथातथ्य चित्रण करना ही यर्थाथवाद है । सिन्द्धान्त: मानव की सहज ज्ञान की शक्तियों के वातावरण को समझने तथा अध्ययन करने की क्रिया को ही यथार्थवाद का मूल तत्व स्वीकार किया जाता है।यह विचारधारा आर्दशवाद की विरोधी होती है । यर्थाथवाद के सम्बन्ध में प्रेमचन्द का अभिमत अनुशील्य है —यथार्थवाद चरित्र को पाठक के सामने यथार्थ नग्न रुप में रख देता है । उसे इससे कुछ मतलब नहीं कि सच्चरित्रता का परिणाम बुरा होता है या कुचरित्रता का परिणाम अच्छा होता है—उसके चरित्र अपनी कमजोरियां या खूबियां दिखाते हुए अपनी जीवन —लीला समाप्त करते हैं कृकृ इसलिए यथार्थवाद हमारी दुर्बलताओं,हमारी विशमताओं और हमारी क्रूरताओं का नग्न चित्र होता है ।[2]

आर्दश या यथार्थ में से किसी एक की प्रधानता से साहित्य की जीवन्तता और सजीवता दोनो नष्ट हो जाती है । एक प्रवृति प्रधान कृति उच्चकृति नहीं होती है । प्रेमचन्द मानवतावादी साहित्यकार है । उन्होंने परवर्तित साहित्यक परिवेश में समन्वयवादी प्रवृति अपनायी उन्होंने न तो कोरा आदर्श अपनाया न कोरा यथार्थ । आदर्श और यथार्थ का सम्मिलन आदर्शेन्मुख यथार्थ को आवश्यक तत्व के रुप में विवेचित किया है । उनके साहित्य में यथार्थ की नींव पर ही आर्दश का महल खड़ा है। उनकी दृष्टि में —भारत का प्राचीन साहित्य आदर्शववाद का ही समर्थक है । हमें भी आदर्श ही की मर्यादा का पालन करना चाहिए। हां यथार्थ का उसमें ऐसा सम्मिश्रण होना चाहिए कि वह सत्य से दूर न जान पड़े ।[3]

इस प्रकार प्रेमचन्द आदर्शेन्मुख यथार्थवादी

साहित्यकार हैं,किन्तु उनकी कहानियों में आदर्श यथार्थ तथा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का क्रमिक विकास पाया जाता है। प्रेमचन्द अपनी प्रारम्भिक काल की कहानियों में आदर्शवादी रहे। विकासकालीन कहानियों में पूर्णतया यथार्थवादी हो गये तो अन्तिम काल की कहानियों के लेखन में आदर्शोन्मुख यथार्थवादी बन गये ।

उनकी प्रारम्भिक काल की मन्त्र,कामना तरु, सती, हिंसा परमो धर्मोः, सुजानभगत, ईदगाह, सुभागी, आधार, राजा हरदौल, त्यागी का प्रेम, रानी सारन्धा आदि एकाधिक कहानियां आदर्शवादी धरातल पर सृजित है।

विवेच्य मन्त्र[४] कहानी में कहानी के पात्र प० लीलाधर का दूसरो की सेवा करना, छूत अछूत का भेद न मानना आदि सभी कुछ कहानी में आदर्शवादी पृष्ठभूमि से सम्पृक्त है। कामना तरु[५] में कहानी के पात्रा चन्दा के पवित्र प्रेम आदर्शवादी पृष्ठभूमि पर विवेचित किया है। हिंसा परमो धर्मः[६] कहानी में कहानी कें पात्र जामिद का प्रतिशोध की भावना से रहित, समन्वयवादी प्रवृति से मुल्ला मौलवी द्वारा आहूत हिन्दू स्त्री को अपने पति के पास पहुंचा आना,आदि आदर्शवाद है। सुजानभगत[७] कहानी में कहानी के पात्र सुजान भगत के हाथों से भिखारी को दी जाने वाली भिक्षा, लड़कों द्वारा छीनी जाने पर भी सुजान भगत द्वारा प्रतिक्रिया न व्यक्त करना और पुनः अपने पौरुश से कर्म करके समर्थ बनना आदर्शवाद है।

बाल मनोविज्ञान पर लिखी गयी ईदगाह[८] कहानी में मेंले में खर्च के लिए दादी अमीना द्वारा दिए गए तीन पैसे भी हामिद द्वारा खर्च न करना, अन्य बच्चों को मिठाइयां, खिलौने आदि लेते हुए देखकर भी अपनी मनोच्छाओं को दबा लेना उन्हीं तीन पैसों में दादी अमीना के लिए रोटी सेकने के लिए चिमटा खरीदकर लाना आदर्शवाद है।

नारी के वैधव्य जीवन पर आधारित सुभागी[९] कहानी में विधवा नारी के आदर्श चरित्र पर प्रकाश डाला गाया है। इसमें कहानी की पात्रा सुभागी बाल विधवा है जो दिन—रात जी—तोड़ मेहनत कर अपने मां बाप को सब सुख देती है ।

आधार[१०] कहानी भी नारी के वैधव्य जीवन पर लिखी गयी आदर्शवादी कहानी है। इसमें कहानी की पात्रा अनूपा दूसरी शादी नहीं करती है और पांच वर्ष के देवर को अपना आधार मानकर जीवन —यापन करती हुई नारी जीवन की आदर्शवादिता को प्रतिष्ठित करती है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी राजा हरदौल[११] कहानी में राजा हरदौल की आदर्शवीरता पर प्रकाश डाला गया है। रानी सारंधा[१२] भी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी कहानी है, जिसमें महान नारी सारंधा की आदर्शवीरता पर प्रकाश डाला गया है। रानी सारंधा देश की रक्षा के लिए घुटने नहीं टेकती। पूरे जीवन भर शत्रुओं का सामना करती हैं। अन्त में अपने को अकेला समझकर पहले अपने प्राणनाथ चम्पतराय के सीने में स्वतः तलवार चुभा देती है और अपने भी;जिससे शत्रुओं के हाथों न मरे। आलोच्य प्रसंग दृष्टव्य है— कैसा हृदय है। वह स्त्री जो अपने पति पर प्राण देती थी आज उसकी प्राणधातिका है। जिस हृदय से आलिंगित होकर ———सारंधा ने कहा—अगर हमारे पुत्रों में से कोई जीवित हो,तो यहां से दोनो लाशें उसे सौंप देना। यह कहकर उसने वही तलवार अपने हृदय में चुभा ली, जब वह अचेत होकर जमीन पर गिरी, तो उसका सिर राजा चम्पतराय की छाती पर था१३

इस प्रकार प्रेमचनद की प्रारम्भिक काल की कहानियां आदर्शवादी पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है।

मध्यकालीन मन्दिर पिसनहारी का कुआं, दूध का दाम, डामुल का कैदी, बेटो वाली विधवा, पूस की रात, ठाकुर का कुआं, धिक्कार, सद्गति, सवा सेर गेहूं, सभ्यता का रहस्य,नरक का मार्ग,नेउर,भाड़े का टट्टू, अमावस्या की रात,दो भाई,खून सफेद, विषम समस्या, दफ्तरी,कफन, आदि अनेकानेक कहानियां,यथार्थवादी पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है। आर्थिक जीवन परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी कहानी डामुल का कैदी[१४] कहानी में मिल में लाभ होने पर भी मिल मालिक सेठ खूबचन्द द्वारा मजदूरो का वेतन काटना, मजदूरो का अपपे पूर्ण वेतन की मांग लेकर हड़ताल करना, हड़ताल में एक मजदूर युवक गोपी की मृत्यु हो जाना, मिल मालिक सेठ खूबचन्द को चौदह साल का काला पानी हो जाना आदि सभी प्रसंग कहानी में यथार्थवादी धरातल पर

सृजित हैं।

समीक्ष्य वैधव्य जीवन पर आधोरित कहानी बेटो बाली विधवा[१५] बेटो द्वारा बाप के मर जाने के बाद जायदाद बेटों की हो जाती है। मां का हक केवल रोटी कपड़े का है यह कहकर विधवा मां फूलमती को समस्त सम्पत्ति से अनधिकृत करना, बेटी कुमुद का अच्छा विवाह करने की फूलमती की इच्छा पर बेटो की सम्पति लोभ से पानी फिरना, स्वामिनी बनकर रहने वाली, मां का बेटो के दुर्व्यवहार से घर में दासी की तरह रहना आदि सामयिक परिवेश का कहानी में यथार्थवादी शैली से चित्रण हुआ है।

आर्थिक जीवन परिवेश में लिखी गयी खेतिहर मजदूर की दीनहीन जीवन स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने वाली कहानी पूस की रात[१६] कहानी में पात्र हल्कू की लगान देने की समस्या, अर्थाभाव के कारण पूस की ठठुरती रात्रि से बचने के लिए कम्बल खरीदने की समस्या, जमींदार के कारिन्दें की गालियों के डर से संचित राशि ३रुपए जो कि कम्बल खरीदने हेतु रखे है,कारिन्दे को दे देना और सवयं पूस की ठिठुरती रात्रि ऐसे ही हार में काटना,ठंड के कारण लीलगाहों के खेती चरते देखकर भी अनदेखा बन जाना आदि यथार्थवादी है। विवेच्य यथार्थवादी प्रसंग दृष्टव्य है—दोनो फिर खेत की डॉड पर आयें देखा, सारा खेत खाली पड़ा हुआ है,और जबरा मड़ैया के नीचे चित लेटा है मानो प्राण ही न हो ।

दोनो खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छायी हुयी थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिन्तित होकर कहा —रात की ठंड में यहां सोना तो न पड़ेगा।[१७]

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी ठाकुर का कुआँ[१८] कहानी में पात्रा गंगी द्वारा अपने बीमार पति जोखू को स्वच्छ पानी पिलाने की अभिलाशा,स्वच्छ कुआं ठाकुर का कुएं से गंगी का पानी भरने का प्रयत्न, ठाकुर के जाग जाने की आहट से गंगी का बाल्टी रस्सी कुएं में छोड़कर भागना,लौटते हुए आकर जोखू को वही मैला गन्दा पानी पीते देखना आदि सब कुछ यथार्थवादी ढंग से लिखा गया है।

समीक्ष्य कफन[१९] कहानी में तो प्रेमचन्द के यथार्थवाद का चरमोत्कर्ष रुप देखने को मिलता है। इसमें बाप बेटा घीसू माधव प्रसव वेदना से कराहती हुई बहू को इसलिए देखने नहीं जाते क्योंकि बेटे को डर है कि यदि वह अपनी पत्नी को देखने जाता है; तो बाप अलाव में भून रहे दोनो आलू खा लेंगें । बाप को डर है कि यदि वह अपनी पुत्रवधू को देखने जाता है; तो बेटा अलाव में भुन रहे दोनो आलू खा लेगा। वहू मर जाती हैं गावं वाले चंदा करके वहू के कफन के लिए पैसै एकत्र. करके देते हैं। भूख अभाव और अतृप्ति से दुखी दोनो बाप बेटा उन पैसों से भी पूड़ी खा लेते हैं, और शराब पी लेते हैं। इस प्रकार इस कहानी में प्रेमचन्द का यथार्थवाद अपने चरमोत्कर्ष रुप में देखने को मिलता है।

कहानी साहित्य सृजन की अन्तिम काल की कहानियों में ईश्वरीय न्याय, मन्त्र, प्रायश्चित, अलग्योझा, घसवाली, आगा पीछा, स्त्री पुरुष, लाग डाट, बड़े घर की बेटी, बैर का अन्त, पशु से मनुष्य, बूढ़ी काकी, आदि एकाधिक कहानियां आदर्शोन्मुख यथार्थवादी शैली में लिखी गयी है।

समीक्ष्य ईश्वरीय न्याय[२०] कहानी में कहानी के पात्र मुंशी सत्यनारायण का जमींदार भृगुदत्त के यहां सत्यवादिता, न्यायप्रियता से मुनीमी करना आदर्शवाद है। जमींदार भृगुदत्त के बाद मुंशी सत्यनारायण द्वारा उनका गावं बेईमानी से अपने नाम कर लेना आदर्शवाद है तथा अदालत से जीतकर निकले हुए मुंशी सत्यनारायण भानुकुंवर द्वारा गावं की सत्यता के बारे में जानना, और मुंशी सत्यनारायण का गावं की सच्चाई स्वीकार कर लेना आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। इस सन्दर्भ में मुंशी सत्यनारायण की अर्न्तद्वन्दात्मक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी विचाराभिव्यक्ति अनुशील्य है — हजारो आदमी यह प्रश्न सुनकर कौतूहल में सत्यनारायण की तरफ देखनें लगे मुंशी जी विचार सागर में डूब गये । हवा में संकल्प और विकल्प में घोर संग्राम होने लगा। हजारो मनुष्यों की आंखें उनकी तरफ जमीं हुई थीं। यथार्थ बात अब किसी से छिपी न थी——— उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ईश्वर ने मुझे अपना मुख उज्जवल करने का यह अन्तिम अवसर दिया है। मैं अब भी मानव सम्मान का पात्र बन सकता

हूं। अब अपनी आत्मा की रक्षा कर सकता हूं । उन्होंने आगे बढ़कर भानुकुंवरि को प्रणाम किया और कांपते हुए स्वर में बोले —आपका।[२१]

सामाजिक जीवन सन्दर्भ में लिखी गयी मन्त्र[२२] कहानी में बूढ़े भगत के अनुनय विनय पर भी गोल्फ खेलने के लिए डॉ चडढा का उसके बेटे को न देखना, डॉ चड्ढा के पुत्र कैलाश की वर्षगांठ पर कैलाश को सर्प काट लेना यथार्थवाद है। बुढ़िया से छुपकर आये हुए बूढ़े भगत का मन्त्र पढ़ना और मन्त्र पढ़कर, कैलाश को होश में लाना आदर्शवाद है। बूढ़े भगत के सद्कृत्यों से प्रभावित डॉ चडढा को पश्चाताप कर सुधरने का प्रयास आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। आलोच्य प्रसंग में डॉ चड्ढा की पश्चाताप से युक्त विचाराभिव्यक्ति अनुशील्य है—एक बार वह एक मरीज को लेकर आया था और मरीज को देखने से इन्कार कर दिया था । ————मैं उसे अब खोज निकालूंगा और उसके पैरो पर गिरकर अपना अपराध क्षमा करा लूंगा । उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है,जो अब जीवन पर्यन्त मेरे सामने रहेगा ——।[२३]

समीक्ष्य प्रायश्चित[२४] कहानी में क्लर्क से आफीसर बने सुबोधचनद की दफ्तर की मेज से उनके सहपाठी क्लर्क मदारीलाल द्वारा २५००० रुपए की चोरी करना रुपयो के गम में सुबोधचन्द का आत्महत्या करना यथार्थवाद है।सुबोधचन्द की मश्त्यु पर उनके बच्चों, पत्नी को रोते बिलखते देखकर मदारीलाल सुबोधचन्द के बीबी बच्चों की देखभाल करने का विचार और उन्हें सदा —सदा के लिए अपने संरक्षण में रखने का संकल्प्र आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है।

पारिवारिक जीवन सन्दर्भ में लिखी गयी अलग्योझा[२५] कहानी में सौतेले पुत्र रग्घू का अपने पिता की मुत्यु के बाद पूरे घर की देखभाल करना, अपने छोटे—छोटे भाई बहनों की सुख —दुख का ध्यान रखना आदर्शवाद है। पत्नी मुलिया द्वारा बार —बार रुपयो पैसो के हिसाब को जानने का प्रयत्न, अन्ततः सास पन्ना द्वारा रग्घू की बिना इच्छा के जबरदस्ती रग्घू को अलग करना, परिवार के विघटन से दुखी होकर रग्घू का चिन्ताग्रस्त होना और असमय कालकवलित होना यथार्थवाद है। अन्ततः मुलिया द्वारा विघटन के कुपरिणामों पर दुख व्यक्त करना और पुनः सयुक्त परिवार में संगठित होना आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है । समीक्ष्य पारिवारिक परिवेश में लिखी गयी बड़े घर की बेटी[२६] कहानी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी शैली में लिखी गयी सफलतम कहानी है। कहानी की पात्रा आनन्दी को उसका देवर बात बात पर अपमानित करता है । अपने अपमान में दुखी आनन्दी पति से अपने अपमान की बात कहती है। उसके पति को यह बात असहय हो जाती है। उसका छोटा भाई मातृवत भाभी का अपमान करे । अतः वह घर से निकलने का प्रस्ताव रखता है। उसके घर से निकलने से पहले ही उसका भाई अपने दुखों से दुखी होता हुआ; जैसे ही घर से निकलना चाहता है कि उसकी बड़े घर की भाभी आनन्दी रोक लेती है। परिणामतः विघटित होता हुआ परिवार संघठित हो जाता है। इस सन्दर्भ में आनन्दी के श्वसुर और गावं वालो की विचाराभिव्यक्ति आनन्दी के आदर्शोन्मुख यथार्थवादी प्रवृति की प्रशंसा में अनुशील्य है — बेनी माधव सिंह बाहर से आ रहे थे। दोनो भाइयों को गले मिलते देख आनन्द से पुलकित हो गये। बोल उठे—बड़े घर की बेटियां ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता काम बना लेती हैं। गावं में जिसने यह वृतांत सुना,उसी ने इन शब्दों में आनन्दी की उदारता को सराहा —बड़े घर की बेटियां ऐसी ही होती हैं।[२७]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रेमचन्द ने अपने प्रारम्भिक काल की कहानियों की सर्जना आदर्शवादी पृष्ठभूमि पर, विकासकाल की कहानियों का सर्जना यथार्थवादी धरातल पर और आन्तिम काल की कहानियों की सर्जना आदर्शोन्मुख यथार्थवादी पृष्ठभूमि पर की हैं। इस सन्दर्भ में डॉ महेन्द्र नाथ भटनागर का अभिमत अनुशील्य है — प्रेमचन्द अपने लेखों और उपन्यासों के द्वारा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का समर्थन करते है। वे आदर्श और यथार्थ का समन्वय करते हैं उनका दृष्टिकोण उपयोगी यथार्थवाद और आदर्शवाद के समन्वय का है।[२८] समग्रतः प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में आदर्श, यथार्थ, आदर्शोन्मुख यथार्थ के उसी रुप का अनुगमन किया जिससे मानव —जीवन में उदात्त भावों सद्भावों की प्रतिष्ठा हो सके ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची —

१—हंस मार्च १९३५,समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द—भटनागर डॉ महेन्द्र www.rachanakar.orgs
२—प्रेमचन्द, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस बनारस archive.org पृ०४२—४३
३— प्रेमचन्द कुछ विचार सरस्वती प्रेस बनारस archive.org पृ०२६
४—मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
५— मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
६— मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
७— मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
८— मानसरोवर भाग १ hindisamay.com
९— मानसरोवर भाग १ hindisamay.com
१०— मानसरोवर भाग ३ hindisamay.com
११— मानसरोवर भाग ६ hindisamay.com
१२— मानसरोवर भाग ६ hindisamay.com
१३— मानसरोवर भाग ६ सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली पृ०६७—६८ www.hindikosh.in
१४—मानसरोवर भाग २ hindisamay.com
१५— मानसरोवर भाग १ hindisamay.com
१६— मानसरोवर भाग १ hindisamay.com
१७— मानसरोवर भाग १ सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली पृ०१०१
१८— मानसरोवर भाग १ hindisamay.com
१९— मुंशी प्रेमचन्द, कफन, archive.org
२०— मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
२१— मानसरोवर भाग ५ सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली पृ०—२७४—२७५ www.hindikosh.in
२२— मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
२३— मानसरोवर भाग ५ पृ०३०८ www.hindikosh.in
२४— मानसरोवर भाग ५ hindisamay.com
२५— मानसरोवर भाग १ hindisamay.com
२६—मानयरोवर भाग ७ hindisamay.com
२७—मानसरोवर भाग ७ सन्मार्ग प्रकाशन,जवाहर नगर दिल्ली पृ०९२
२८— समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द—भटनागर डॉ महेन्द्र www.rachanakar.orgs

ꕤꕤꕤ

Dr. Akanksha Rastogi

UGC Approved Journal No – 48728
(IIJIF) Impact Factor - 4.034

ISSN 2249 - 8893

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International **Peer Reviewed** Refereed Research Journal

P. PUBLICATION

Volume 12 **Issue IV** **December 2022**

Editor
Dr. Sarvesh Kumar
UPRTOU Allahabad

Chief Editor
Dr. R. P.S. Yadav
Incharge Director,
School of Humanities
UPRTOU Allahabad
www. annalsmdresearch.com

E-mail : annalsmdresearch@gmail.com www. annalsmdresearch.blogspot.com

- जनपद प्रयागराज (इलाहाबाद) में विकास खण्डवार जनसंख्या घनत्व : एक भौगोलिक विश्लेषण — 130-138
  डॉ. रमा शंकर, असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी, जौनपुर उ.प्र.।
  सुरेन्द्र कुमार, शोध छात्र, भूगोल विभाग, हण्डिया पी.जी. कालेज हण्डिया, प्रयागराज, उ.प्र.।
- स्वामी विवेकानंद का धार्मिक दृष्टिकोण — 139-143
  दीपक राजभर, शोध छात्र, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- संगीत में स्वर व ताल का लिपिबद्धीकरणः- 'एक अध्ययन' — 144-149
  उपासना श्रीवास्तव, कथक प्रशिक्षिका, (राष्ट्रीय कथक संस्थान केसरबाग लखनऊ), कथक शोधार्थी- भातखण्डे संस्कृति, विश्वविद्यालय लखनऊ
- योग द्वारा चेतना का स्तर निर्धारित करना — 150-155
  अनुराग शुक्ल, यू.जी.सी. नेट योग
- जनपद लखनऊ के बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की योग अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन — 156-161
  डॉ. शिवकान्त शर्मा, प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान
  ज्योत्सना पाण्डेय, शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान
- नाटकों एवं फिल्मों में संगीत एवं संवाद की भूमिका — 162-166
  डॉ. आकांक्षा रस्तोगी, असिस्टेंट प्रो., संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।
- जैन शिक्षा दर्शन में निहित मूल्यों की प्रासंगिकताः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 167-173
  संजीव कुमार पाण्डेय, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय (म.प्र.)
  डॉ. शालिनी सक्सेना, प्राचार्य, मदन महाराज महाविद्यालय, भोपाल
- सूफी साधना के सोपान — 174-177
  डॉ. नसीम फ़ातिमा, एम. ए., पी.एच. डी., दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया
- ब्रिटिशकाल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति — 178-180
  संगीता कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)
- आधुनिक जीवन की सच्चाईयों को अभिव्यक्त करता उपन्यास रेहन पर रग्घू — 181-184
  पूजा तिवारी, शोधार्थी, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा
- पर्यटन उद्योग की समस्याएँ एवं समाधान : जम्मू-कश्मीर (केन्द्रशासित प्रदेश) का एक भौगोलिक अध्ययन — 185-190
  डॉ. पुरंजय कुमार, सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, अल्लामा, इकबाल कॉलेज, बिहारशरीफ, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना
- औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के प्रभाव — 191-193
  अशोक कुमार, शोधार्थी, समाजशास्त्र, जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट

नाटकों एवं फिल्मों में संगीत एवं संवाद की भूमिका

डॉ. आकांक्षा रस्तोगी*

नाटकों एवं भारतीय फिल्मों में संगीत की अनिवार्यता को नकार पाना असम्भव है। यदि नाटकों की बात करें तो नाट्यकला अपने शैशवकाल में नृत्य एवं वाद्यों की छत्र–छाया में ही पोषित हुई, जिसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। इसके विपरीत फिल्मों का प्रारब्ध तो मूक फिल्मों से हुआ जिसका प्रमुख उपकरण संवाद रहित अभिनय था। परन्तु सवाक् फिल्मों के उदय के साथ अभिनय में संवाद एवं संगीत दोनों तत्व प्रमुख हो गए।

अभिनय एवं संवादो द्वारा भावाभिव्यक्ति संगीत के सम्मिश्रण से अत्याधिक प्रभावी एवं सशक्त हो जाती है। इस सत्य का अनुभव न केवल हमारे नाट्याचार्यों ने ही किया बल्कि फिल्मकारों ने भी किया है। यदि कहा जाए कि संगीत एवं संवाद के अभाव में मनोरंजन करने वाली नाट्यकला एवं फिल्मों का स्वरूप आत्मारहित शरीर सदृश होगा, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का एक–दूसरे से आदान–प्रदान करता है। यदि भाषा न होती तो हममें और जानवरों में कोई भेद नहीं रहता। यदि बुद्धि की बात करें तो ईश्वर ने प्रत्येक जीव को बुद्धि का वरदान दिया है चाहे नर हो या पशु। अंतर मात्र विवेक का है जो जानवरों में नगण्य है। यही कारण है मानव–योनि सर्वोच्च मानी गई है। विवेक के साथ मनुष्य को भाषा की सुविधा भी प्राप्त है। यह बात अलग है कि कोई व्यक्ति भाषा का उचित एवं आकर्षक प्रयोग करता है तो कोई अनुचित एवं साधारण। परन्तु एक वर्ग ऐसा भी है जो भाषा का बेहतरीन प्रयोग करता रहा है। ऐसे दिग्गजों को लेखक एवं कवि की उपाधि प्राप्त है। इनकी यह विशेषता होती है कि ये साधारण बात को भी अत्यंत सौंदर्य एवं प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर देते हैं। नाटकों में संवाद–लेखन 'नाट्यप्रणेता' ही करता है जबकि फिल्मों में संवाद–लेखन के लिए विशेष तौर पर संवाद–लेखक जिन्हे 'स्क्रिप्टराइटर' या 'स्क्रीनप्ले राइटर' या 'डायलॉग राइटर' कहते हैं, नियुक्त रहते हैं।

कथानक के चुनाव के बाद यह आवश्यक होता है कि नाटक अथवा फिल्म को मंच–प्रदर्शन के हिसाब से तैयार किया जाए। इसके लिए इनमें पात्रों के चरित्र के अनुरूप संवादों का लेखन कार्य प्रारम्भ हो जाता है। प्राचीनकाल में संस्कृत का चलन था परन्तु यदि अभिनय की बात करें तो वहाँ मुख्य रूप से संस्कृत के स्थान पर अन्य भाषा–प्रकारों यथा प्राकृत, पाली, शौर्यसेनी आदि को ही महत्व मिला। 'कामसूत्र' के रचयिता वात्स्यायन ने कहा है कि 'इस प्रकार के सामाजिकों (उत्सवों) के अवसर पर अभिनयकर्ताओं को संस्कृत भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिसे दर्शकों को समझने में कठिनाई हो, न ही उन्हें पूर्णतया प्रादेशिक स्तर की भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि वे केवल प्रादेशिक भाषा का ही प्रयोग करेंगे तो उनका बुद्धिस्तर या ज्ञान कम आँका जाएगा। (कामसूत्र : 1.4.37)

समय के साथ–साथ लोक–व्यवहार की भाषा में भी काफी बदलाव आए। नाटक चाहे संस्कृत में रचित होया अंग्रेज़ी में या फिर अन्य किसी भाषा में हो उसका मंचन जिस भी देश–प्रदेश के दर्शकों के मध्य होता है नाटक के संवादो को नाट्यप्रणेता उसी माहौल के अनुरूप लिखता है। उदाहरणार्थ–मुम्बई के किसी ऑडीटोरियम में (या शिक्षित वर्ग के बीच) रामायण का मंचन होना है, तो उसकी भाषा हिन्दी या मराठी में से होगी। इसके साथ नाट्यकलाकारों द्वारा प्रयोगार्थ संवादों की भाषा का स्तर भी उच्चकोटि का होगा। अब यदि इसी कथा का मंचन बिहार के किसी गांव–देहात में किया जाए तो उसके संवाद प्रादेशिक स्तर के होंगे। उसमें क्लिष्ट शब्दावली का प्रयोग कदापि नहीं होगा।

---

* असिस्टेंट प्रो., संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।

[illegible]टक तो देश–प्रदेश के लोगों एवं उनकी भाषा के अनुरूप ढल जाते हैं परन्तु एक बॉलीवुड [illegible] भारत में ही नहीं अपितु देश–विदेशों में रिलीज होनी होती है इसलिए फिल्म के संवादों में [illegible] की दृष्टि से बहुत सावधानी बरती जाती है। वैसे तो भारत में हिन्दी सिनेमा के अतिरिक्त अन्य [illegible] भी हैं यथा मराठी सिनेमा, कन्नड़ सिनेमा, मलयालम सिनेमा, तेलगू सिनेमा, बंगाली सिनेमा [illegible]। परन्तु जो स्थान हिन्दी फिल्मों का है वह किसी अन्य भाषा की फिल्मों का नहीं है। यदि [illegible] पर नज़र डालें तो हिंदी फिल्मों के निर्माण की संख्या 'रीजनल' फिल्मों से काफी अधिक है। [illegible] सिनेमा ही भारत की पहचान है। आजकल डबिंग तकनीक विकसित हो चुकी है जिसने भाषा [illegible] को ही समाप्त कर दिया है। इस तकनीक की सहायता से दक्षिण भारत में बनी फिल्म हम [illegible] पर हिन्दी में भी देख सकते हैं। यानी किसी भी भाषा की फिल्म को अन्य किसी भी भाषा में [illegible] सकते हैं।

फिल्म उद्योग वह स्थान है जहाँ अपनी–अपनी विधा के दिग्गज (Experts) एक ही स्थान पर [illegible] को मिल जाते हैं, चाहें वे लेखक हों, निर्देशक हों, संगीत–निर्देशक हों, गायक हों या कोई भी। [illegible] बात संवाद लेखक पर भी लागू होती है। बिग स्क्रीन के लिए फिल्म–निर्माण काफी चुनौतीपूर्ण [illegible] है। नाटकों और फिल्मों में आंतरिक संबंध अवश्य है परन्तु दोनों के 'प्रदर्शन' में बहुत अंतर है। [illegible] जस्टिस डा० राजमन्नर ने इस संदर्भ में कहा है :–

The basic difference between the methods and technique of the theatre and the film [illegible]vitably leads to vital differences between stage acting and film acting – Exaggeration of [illegible]stures, over-emphasis on bodily movement and declamation of speech, which are essential [illegible]alities of stage acting and which are summed up in the epithets 'stagy' and 'theatrical' are [illegible]t only not necessary in film acting, they should be avoided.

इससे स्पष्ट है कि नाटकों और फिल्मों में अभिनय करने में काफी अंतर है और इस तथ्य को [illegible]ट्यप्रणेता एवं संवाद–लेखक को अच्छे से समझना पड़ता है क्योंकि डायलॉग डिलीवरी ही फिल्मों [illegible] नाटकों को अलग–अलग करती है। फिल्मों में संवादो की भाषा उच्चस्तरीय होती है। अश्लील एवं

तो अब आम हो गया है जिसमें 'सिंथेसाइजर' एक ऐसा वाद्य है जिसे मैं अनेक प्रकार की संगीतोपयोगी ध्वनियों का 'सिंथैसिस' मिलता है, यानि एक वाद्य से अनेक प्रकार (या अनेक वाद्यों) की ध्वनियों के 'इफैक्ट' मिलतेहैं, जिससे अलग–अलग वाद्य के लिए अलग–अलग कलाकार की नियुक्ति की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। इस प्रकार बजट पर (चाहे नाटक हो अथवा फिल्म) सुप्रभाव पड़ता है।

नाटकों मे संगीतादि की समस्त व्यवस्थाएँ नाट्यप्रणेता ही देखता है, परन्तु फिल्मों में संगीत की सम्पूर्ण व्यवस्था संगीत–निर्देशक देखता है। संगीत निर्देशक वाद्यों और म्यूजिक–सैटिंग के पश्चात गायक–गायिका के साथ रिहर्सल करता है और फिर साउंड–रिकॉर्डिस्ट और संगीत निर्देशक मिलकर फिल्म के गीतो की सम्पूर्ण रिकॉर्डिंग करते हैं।

नाटकों और फिल्मों मे भावोद्दीपन के लिए पार्श्व–संगीत या बैकग्राउण्ड म्यूजिक का प्रयोग किया जाता है। यह वह संगीत है जो मुख्य गीतों के अतिरिक्त नाटकों एवं फिल्मों में परोक्ष रूप से बजता रहता है। पार्श्व–संगीत का दर्शकों पर इतना अधिक प्रभाव होता है कि वे कथावस्तु और उसके पात्रों मे इतना लीन हो जाते हैं कि इस संगीत को भूल जाते हैं जबकि उन्हें 'साधारणीकरण' की अवस्था तक पहुँचाने मे पार्श्व–संगीत की अहम भूमिका है। पार्श्व संगीत मुख्यतः वाद्यों की ध्वनि या फिर आलापो द्वारा तैयार किया जाता है। परन्तु नाटकों एवं फिल्मों, दोनों में ही बैकग्राउण्ड संगीत का अत्याधिक महत्व है।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि गीत, गीतकार, संगीत एवं बैकग्राउण्ड संगीत के अभाव में नाटक एव फिल्म दोनों ही प्रभावरहित है।

संदर्भ :

1. फिल्म संगीत इतिहास अंक – जनवरी–फरवरी–1998
2. भरतनाट्यशास्त्र – निर्णय सागर संस्करण
3. हिन्दी फिल्म गीत – 1991 – ए0 आरनॉल्ड
4. Indian Popular Cinema – 1998 – के0 मोती गोकुल सिंह एवं विमल दिसानायक
5. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग– अनीता गौतम
6. कामसूत्रम – 'वात्स्यायन'

***

ISSN 2277-8071

J-Gate INDEXED

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

DOI PREFIX10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN IMPACT FACTOR 7.399

NAVADASHPRABHA GAURAVANK

नवदशप्रभा गौरवांक

THE SPECIAL ISSUE ON THE WORK AND CONTRIBUTION OF

SWARAYOGINEE PADMAVIBHUSHAN DR. PRABHA ATRE

PUBLISHED ON OCCASION OF HER 90TH BIRTH YEAR.

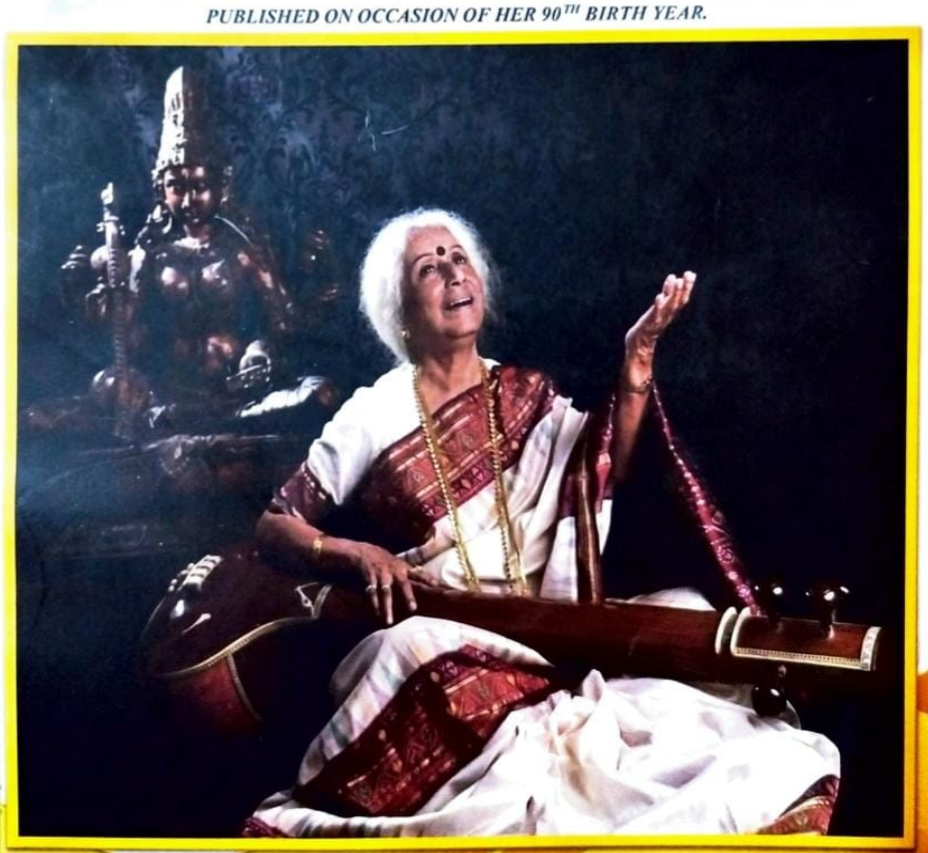

Special Issue September,2022

www.ycjournal.net

48.	डॉ. आकांक्षा रस्तोगी सहायक प्रो. संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।	'प्रभा अत्रे एवं उनका सांगीतिक दृष्टिकोण	115
49.	डॉ. सुनील कोल्हे सहयोगी प्राध्यापक (संगीत विभाग), गुलाम नबी आज़ाद महाविद्यालय, बार्सिटाकली, जिला- अकोला.	विदुषी डॉ. प्रभा अत्रेजी द्वारा राग मधुवंती की ताल एकताल में स्वरचित बंदिश का रसग्रहण एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन	119
50.	डॉ. मृणाल प्रभाकरराव कडू संगीत विभाग, जे.डी.पाटील सांगळूदकर महाविद्यालय दर्यापूर.	स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे : बहुआयामी व्यक्तिमत्व	
51.	डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके संगीत विभाग, कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला.	संगीतके वैश्विक प्रसार-प्रचार और नवनिर्मितिमे डॉ. प्रभा अत्रेजी का योगदान	128
52.	डॉ. वृषाली रमेशराव देशमुख, जे. डी.पाटील सांगळूदकर महाविद्यालय दर्यापूर जिल्हा अमरावती.	डॉ.प्रभा अत्रे के संगीत घाट (विधा) पर एक विचार	132
53.	प्रा.वंदना मधुकरराव देशमुख संगीत विभाग,कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला.	संगीत शिक्षण पद्धती एक विचार = डॉ. प्रभाजी अत्रे.	135
54.	डॉ. दीपाली प्र.गावंडे सा. प्राध्यापक, मराठी विभाग, कला महाविद्यालय मलकापूर ,अकोला.	'अंत: स्वर' एका कलावतीचा जीवनानुभव	138
55.	Vivek Santoshao Chapke Research scholar, Shri. JJT University Jhunjhunu, Rajasthan.	Dr. Prabha Atre (A Musical Social Reformer)	141
56.	प्रा. डॉ. विजय आळशी सहा. प्राध्यापक, संगीत विभाग श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला	गानयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे	144
57.	प्रा. जयश्री पुणतांबेकर - पांडे	माझ्या आदर्श आदरणीय प्रभाताई	147
58.	श्रीमती प्रभा शरद पांडे अकोला	स्वयंप्रभा	149
59.	डॉ. मोहिनी उदय रायबागकर बारवाले कॉलेज, जालना.	वाग्वदना...	150
60.	Pravin P. Ugale Head, Department of English, Kala Mahavidyalaya Malkapur Akola.	Music Is the Language of Dr. Prabha Atre's Poetry- Antaswar (Inner Voice)	154
61.	डॉ. योगिनी भास्करराव सोनटक्के संगीत विभाग, स्व.छगनलाल मूलजीभाई कढी कला महाविद्यालय, अचलपूर कॅम्प, जि. अमरावती.	एक सुरेल मैफिल: स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे	157
62.	डॉ.अतींद्र सरवडीकर संगीत विभाग, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.	अलख	161

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SJIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

'प्रभा अत्रे एवं उनका सांगीतिक दृष्टिकोण'

डॉ. आकांक्षा रस्तोगी
सहायक प्रो0 संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।
mail: aakanksha.deshwal10@gmail.com Mob : 9319629470

विदुषी प्रभा अत्रे वर्तमान में किराना घराने का प्रतिनिधित्व करने वाली देश के वरिष्ठ गायक-गायिकाओं में से एक हैं। भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मविभूषण से सम्मानित प्रभा जी एक कुशल रचनाकार, लेखिका, चिन्तक, समाज सेविका, अभिनेत्री, गुरु, कार्यक्रम आयोजिका आदि होने के साथ- साथ सिद्धहस्त एवं सदैव प्रयोगधर्मी गायिका रही हैं। एक व्यक्ति में इतने सारे गुणों का होना, वास्तव में प्रभा अत्रे को अद्वितीय बना देता है। मैंने प्रभा जी की गायनशैली को सुना जो वास्तव में इतनी अधिक प्रभावशाली है कि हम कहाँ बैठे हैं यह भी भूल जाते हैं। परन्तु जैसे-जैसे मुझे उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त होता गया मैं उनकी मुरीद हो गई हूँ। और यही कारण है जो असमंजस की स्थिति को उत्पन्न कर रहा है कि "कहाँ से शुरू करूँ?"

प्रभा जी की सांगीतिक जीवन यात्रा आठ वर्ष की आयु से प्रारंभ हुई, जिसमें उनके परम आदरणीय गुरू श्री सुरेश बाबू माने (उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब के पुत्र) एवं हीराबाई बड़ोडेकर का उल्लेखनीय योगदान है। साथ ही वह अपनी गायकी को अत्यधिक प्रभावोत्पादक बनाने का श्रेय उस्ताद आमिर खान और बड़े गुलाम अली खान को देती हैं। उन्होंने विज्ञान एवं एल0एल0बी0 (कानून) दोनों की डिग्री अर्जित की जो वास्तव में अनूठा संयोग है (संगीत$विज्ञान$कानून)। कुमार गंधर्व की बेटी और शिष्या तथा स्वयं में एक शास्त्रीय गायिका कलापिनी कोमाकली ने एक इंटरव्यू में बताया-

"एक कुशल कलाकार होने के अलावा, उन्होंने एक शानदार विचारक, शोधकर्ता, शिक्षाविद्, सुधारक, लेखक, संगीतकार और गुरु के रूप में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। एक विज्ञान और कानून स्नातक, संगीत में डॉक्टरेट, ऑल इंडिया रेडियो के ग्रेड सहायक निर्माता, प्रोफेसर और एस.एन.डी.टी. महिला महाविद्यालय, मुम्बई में संगीत में स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसंधान विभाग की प्रमुख, अत्रे कौशल और अंतर्दृष्टि का एक दुर्लभ मिश्रण है। अभिव्यंजक आवाज उनकी प्रोफाइल का वर्णन करती है।"

यदि किराना घराने की गायकी की ओर ध्यान दें तो उसमें स्वर-माधुर्य एवं भावनाओं का उद्दीपन जैसी विशेषताएँ अवश्य पाएँगे। इसमें गंभीरता के साथ धीरे- धीरे एक-एक स्वर की बढ़त करते हुए राग-विस्तार किया जाता है जो इस घराने की गायकी को अन्तर्मुखी बनाती है। प्रत्येक स्वर भावना से परिपूर्ण तथा स्वर विस्तार सहज व शांत गति के समान है। अत्रे जी के गायन में किराना घराने की उक्त सभी विशेषताओं के साथ- साथ गांभीर्य, शांति, आराधना जैसे समस्त भावों का सुन्दर समन्वय परिलक्षित होता है। इन सभी विशेषताओं के साथ जो एक अद्वितीय विशेषता अत्रे जी में रही, जो उन्हें शास्त्रीय संगीत के अमूल्य संगीतज्ञों में सर्वश्रेष्ठ बनाती है वह है उनका खुला नजरिया जिसके विषय में वह स्वयं उद्घाटित करती हैं- "मेरे गुरु बहुत खुले विचारों वाले थे और हमेशा कहते थे कि 'फोटोकॉपी मत बनो'। उन्होंने मुझे एक मजबूत नींव दी"। अत्रे जी ने किराना घराने द्वारा संस्कारित होने के साथ- साथ अन्य घरानों की विशेषताओं को बिना किसी संकोच के अपनाया और अपनी गायकी में अनूठापन पैदा कर श्रोताओं को वाह-वाह करने को मजबूर कर दिया। एक प्रसिद्ध अंग्रेजी न्यूजपेपर को दिए इंटरव्यू में प्रभा जी ने कहा-

"The tonal quality of my voice guided me to make changes in my music.Variety in music is important too-singing only "aaa" can get boring ,so I bring in other elements.Expression is very important in music. Whatever good I find , I take it and make it my music.This happens automatically, without my even being conscious of it .Listening to me,you willnot think that I am singing Agra or Jaipur gayaki ;

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences
ISSN 2277-8071

पद्म श्री, पद्म-भूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, टैगोर अकादमी रत्न पुरस्कार, कालिदास सम्मान, पद्म-विभूषण मल्लिकार्जुन मंसूर सम्मान, तनरिरी संगीत सम्मान से विभूषित प्रभा अत्रे जही ने विज्ञान और संगीत के गहरे और संबंध में विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं नितान्त सत्यपरक तथ्यों को प्रस्तुत किया। प्रभा जी कहती

"बीसवी सदी में भारतीय जीवन का विज्ञान से सम्पर्क हुआ तथा सारी जीवन पद्धति अंदर तथा बाहर से बदल गई। यह पहले तुलना में अत्यन्त तीव्र गति से हुआ, विविध ढंगों से हुआ। उसकी गूँज कलाओं में भी उभरी। संगीत क्षेत्र में रेडियो, टीवी, सिनेमा, टेप्स, रिकार्डस ऐसे जन-साधारण से नजदीकी स्थापित करने वाले अनेक माध्यम अस्तित्व में आए। उनके साथ श्रोताओं की संख्या भी बढ़ती गई। ये विविध स्तर के हैं, उनकी पसंद-नापसंद भी भिन्न है, उम्मीदें और आशाएँ भी अलग-अलग हैं।" वर्ष 1971 में प्रभा अत्रे जी की एक एल्बम, एच0एम0वी द्वारा रिलीज की गई जिसमें उन्होंने मारू बिहाग एवं कलावती का इस प्रकार गान प्रस्तुत किया जिसके विषय में विद्वान मिलिंद मालशे ने "आधुनिक क्लासिक" कहकर सम्बोधित किया और कहा - "..... कुछ ऐसा जो घराने, समय और दर्शकों को पार कर गया, जैसा कि किशोरी अमोनकर के भूप ने किया ..... श्रोताओं की एक पूरी पीढ़ी के लिए, मारू बिहाग और कलावती अत्रे के पर्याय बन गए।'

प्रभा अत्रे जी के इस दुर्लभ बखान को समाप्त करते हुए मैं अंत में उनके कहे हुए शब्दों को प्रस्तुत करना चाहूँगी -

"मैं अपने पूरे संगीत करियर का श्रेय अपने श्रोताओं को देती हूँ क्योंकि अगर उन्होंने मेरे संगीत कार्यक्रम सुनने के लिए प्रस्थान नहीं किया होता, मेरे रिकॉर्ड और कैसेट नहीं खरीदे होते, तो मैं पूर्णकालिक संगीतकार नहीं बन पाती।"

शत् नमन।

ग्रंथ सूची

1. स्वरयोगिनी -डा0 प्रभा अत्रे (एक बहुआयमी व्यक्तित्व) लेखिका -डा0 चेतना बनावत
   पब्लिशर्स- कनिष्का पब्लिशर्स Edition - 2013
2. Culture (a chat)-By Raja Pundalik
3. India Currents -The words music of Prabha Atre by Teed -Rockwell,Feb 13 2007
4. The Hindu (An Interview with Prabha Atre) - Classical Music has to change by Shailaja Khanna ,June 01,2017
5. The Indian Express - 'Art will change with time so the Shashtra can't stay behind";Prabha Atre. by Suanshu Khurana Feb 05 2022
6. किराना घराने की गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन प्रथम संस्करण - 2008-संपादक - धर्मपाल (New Delhi) ओमेगा पब्लिकेशन्स 110002

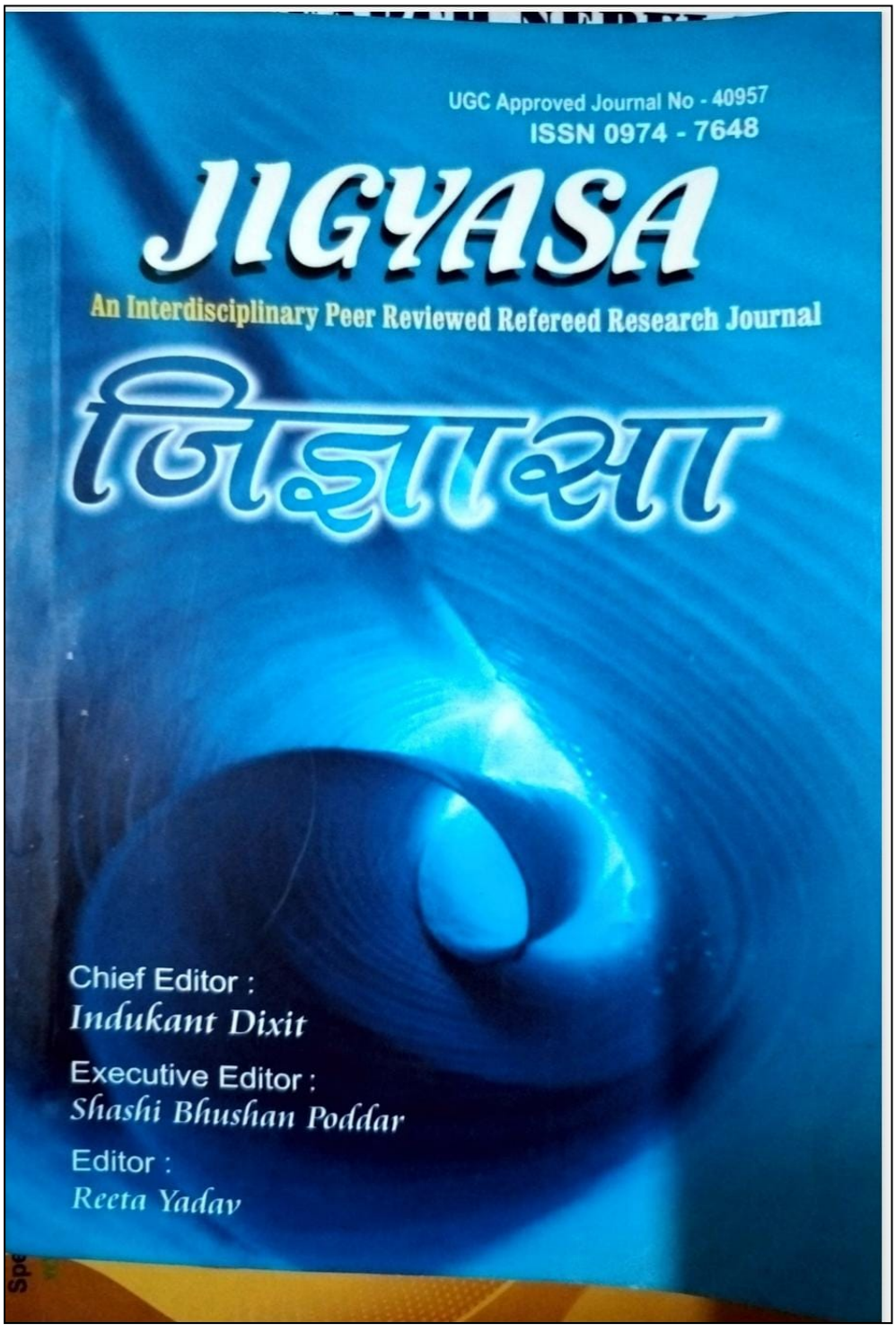
UGC Approved Journal No - 40957
ISSN 0974 - 7648
JIGYASA
An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal
जिज्ञासा
Chief Editor :
Indukant Dixit
Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar
Editor :
Reeta Yadav

Approved Journal No – 40957
) Impact Factor- 5.172
. No. : 1687-2006-2007
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

N INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : ***Indukant Dixit***

Executive Editor : ***Shashi Bhushan Poddar***

Editor
Reeta Yadav

ume 15 **December 2022** **No. IV**

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक प्रोत्साहन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन — 98-105
  हरनीत कौर, शोध छात्रा, बी.एड विभाग, एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)
  प्रो. चन्द्रावती जोशी, प्राध्यापिका, बी.एड विभाग, एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)
- मूल्य शिक्षा का महत्व — 106-115
  अभय प्रताप सिंह, शिक्षा संकाय, एल. बी. एस. गोंडा
- नागार्जुन के काव्य में सौन्दर्य का स्वरूप — 116-120
  रंजू यादव, शोधार्थी स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर
  डॉ. संजय कुमार सुमन, शोध निर्देशक व असिस्टेण्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत मूल्यों (धार्मिक एवं सामाजिक मूल्य) का प्रभाव — 121-128
  डॉ. अनिल कुमार यादव
- 'नाट्यशास्त्र' के आधार पर नाटकों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — 129-134
  डॉ. आकांक्षा रस्तोगी, असिस्टेंट प्रो., संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।
- कृषि निवेश : अर्थ, प्रकृति, समस्या एवं समाधान — 135-139
  डॉ. दीपिका
- साम्प्रदायिक राजनीति का कलात्मक/साहित्य जीवन पर प्रभाव — 140-143
  सोनिका देवी, शोधार्थी, मेरठ कॉलेज, मेरठ, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
- ऋग्वेद का स्त्री ज्ञान — 144-148
  डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, सहकारी पी.जी. कॉलेज, मिहरावां, जौनपुर।
- स्वामी विवेकानन्द जी के दर्शन में आत्म के चरमभाग्य का विवेचन — 149-151
  निशा, शोध छात्रा, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।
- लोक-संस्कृति के कुशल जानकार : डॉ. दिनेश्वर प्रसाद — 152-155
  ग्लोरिया एक्का, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

'नाट्यशास्त्र' के आधार पर नाटकों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

*डॉ. आकांक्षा रस्तोगी**

नाटक का स्वरूप 'नाट्यकला' के समस्त अवयवों पर अवलंबित होता है। नाट्यकला के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अध्ययन में आचार्य भरत कृत 'नाट्यशास्त्र' से अधिक उपयुक्त एवं सारगर्भित ग्रंथ अन्य कोई हो नहीं सकता। यह नाट्यकला का एकमात्र ऐसा आधार–ग्रंथ है, जिसमें नाट्यविषयक सम्पूर्ण सामग्री का विशद् विवरण प्राप्त होता है। नाट्यकला से संबंधित ऐसा कोई विषय नहीं है जो इस विशाल ग्रंथ में न मिलता हो। काल गवाह है कि अब तक न तो ऐसा ग्रंथ कभी लिखा गया और न ही कभी लिखा जाएगा।

'नाट्यशास्त्र' का गहन अध्ययन करने के उपरांत मस्तिष्क यह सोचने पर बाध्य हो ही जाता है कि इतना स्पष्ट, इतना विस्तृत, इतना सिद्ध, इतना सटीक एवं इतना दक्ष कार्य किसी एक व्यक्ति {भरत} द्वारा क्रियान्वित है अथवा नहीं। इस विषय को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान मानते हैं कि जिस प्रकार समस्त पुराणों के रचयिता ''व्यास'' कोई एक व्यक्ति न होकर पूरी एक वंश परम्परा {कुल या गुरू के नाम पर} का नाम हो सकता है, उसी प्रकार से 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता ''भरत'' को भी माना जा सकता है। अमरकोष' के रचयिता अमरसिंह मानते हैं कि आचार्य भरत ही नाट्यशास्त्र के मूल रचयिता हैं। बाद में उनके शास्त्र के आधार पर अभिनय करने वालों को 'भरत' की संज्ञा से अभिहीत किया गया होगा।

जहाँ एक ओर इसके रचयिता को लेकर मतभेद रहा है, वहीं इस ग्रंथ के रचनाकार को लेकर भी मतभेद है। अधिकतर लोगों का कहना है कि इस ग्रंथ की रचना चौथी शताब्दी में हुई। दूसरे पक्ष के विद्वानों का मत है कि इस ग्रंथ की रचना तो त्रेतायुग में ही हुई परन्तु इसकी पाण्डुलिपि चौथी शताब्दी के आस–पास प्राप्त हुई। रचयिता एवं रचनाकाल को लेकर भले ही मतभेद हो पर यह हमारा सौभाग्य है कि 'नाट्यशास्त्र' जैसा अनुपम ग्रंथ हमारे बीच है।

'नाट्यशास्त्र' को पंचम वेद माना गया है अतः इसे 'नाट्यवेद' भी कहा जाता है। इस ग्रंथ के अनेक संस्करणों में अध्यायों की संख्या को लेकर भी मतभेद है। किसी में 36 अध्याय तो किसी में 37 दिखाए गए हैं। नाट्यकला में प्रयुक्त समस्त उपादानों को भरत मुनि ने अत्यन्त दक्षता से लिपिबद्ध किया जिनका संक्षिप्त विवरण अध्याय–क्रम से इस प्रकार है–

* असिस्टेंट प्रो., संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।

निष्कर्षता यह कहा जा सकता है कि आचार्य भरत ने समाज व्याप्त नाट्य के लक्षणों को एकसूत्र में पिरोया और 'नाट्यशास्त्र' रच डाल नाटकों का प्रचलन तो अति प्राचीनकाल से {या यूँ कहे मानव सभ्यता प्रारब्ध काल से) रहा {न केवल भारतवर्ष में अपितु सम्पूर्ण विश्व की सभ्यताओं में} परन्तु इसके समस्त उपादानों तथा इसमें प्रयुक्त होने वाले संपूर्ण सामग्री का लक्षणबद्ध, विधिवत, विस्तारपूर्वक वर्णन आचार्य भरत द्वा 'नाट्यशास्त्र' (चौथी शताब्दी) के रूप में किया गया है। यह ग्रंथ उस युग पोषित एवं संवर्धित नाट्यकला का प्रमाणसूचक ग्रंथ है। अतः सत्य यह कि युग बीत गए, सभ्यताएँ बदल गईं — कभी हिन्दु, कभी जैन, कभी बुद्ध कभी मुगल तो कभी अंग्रेज, परन्तु प्राचीन संस्कारों से युक्त नाटकों स्वरूप आज भी विद्यमान है। आज भले ही इसका स्वरूप अपने प्राचीन रू से थोड़ा भिन्न है, जिसके उदाहरण दूरदर्शन, सिनेमा आदि हैं परन्तु गहराई से यदि चिंतन करें तो पाएँगे कि ये फिल्में, सिनेमा, दूरदर्शन आदि सब नाट्यरूपी माता के शिशु समान हैं।

संदर्भ :

1. History of Indian Theatre by M.L. Varadpande.
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास — श्री बलदेव उपाध्याय
3. रामायण (बाल्मीकि रामायण) —
4. महाभारत
5. पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी'
6. वात्स्यायन कृत कामसूत्र
7. जैन धर्म का प्राचीन इतिहास — (भाग—1) द्वारा बलभद्र जैन
8. भरत नाट्यशास्त्र — श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
9. भारतीय संगीत का इतिहास — (डा0 परांजये) चौखम्भा संस्कृत सीरीज, ऑफिस वाराणसी—1979.

***

Dr. Geeta Agarwal

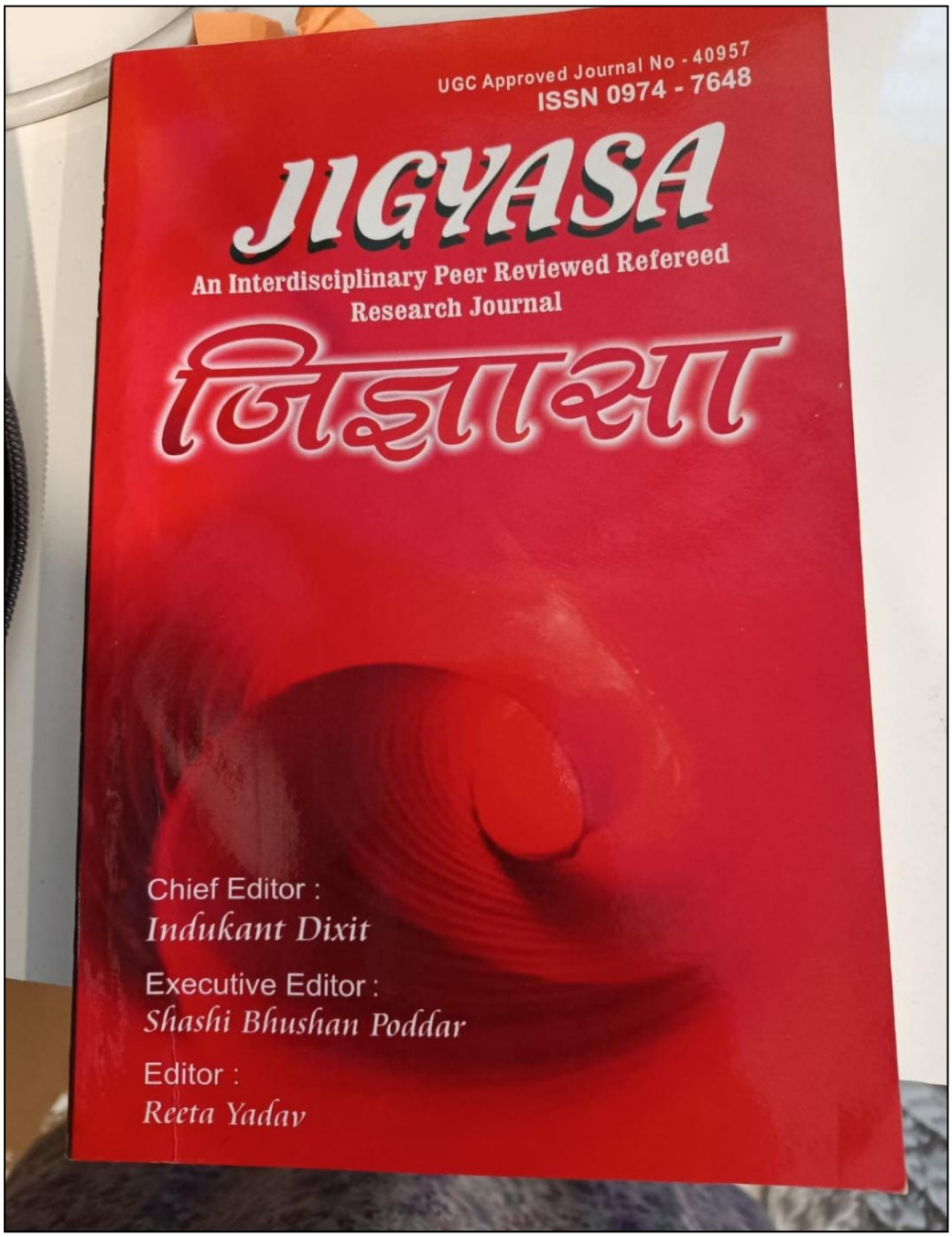

- **जैन दर्शन के शैक्षिक उपादेयता का अध्ययन** 156-168
  संजीव कुमार पाण्डेय, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय (म.प्र.)
  डॉ. शालिनी सक्सेना, प्राचार्य, मदन महाराज महाविद्यालय, भोपाल
- **क्षेत्रीय इतिहास लेखन की आवश्यकता एवं उसकी चुनौतियाँ - एक विशेष अध्ययन** 169-173
  डॉ. शालिनी मिश्रा, सहायक आचार्य (इतिहास), हलीम मुस्लिम पी. जी. कॉलेज, कानपुर
- **राजनीतिक और सामाजिक आदर्श की प्राप्ति में नीति और न्याय की भूमिका : एक विश्लेषण** 174-193
  उमेश चंद्र दीक्षित, अनुप्रयुक्त दर्शनशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय परिसर, बरेली (उत्तर प्रदेश)
- **राष्ट्रीय एकता और भारतीय कला - बिम्ब** 194-197
  डॉ. गीता अग्रवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रभारी चित्रकला विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
- **अवतारवाद का अध्ययन** 198-202
  डॉ. अनामिका कुमारी, पूर्व शोधार्थी, प्राचीन भारतीय एवं एशियाई अध्ययन विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध-गया
- **भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में डॉ भीमराव अंबेडकर की भूमिका: एक मूल्यांकन** 203-213
  उपेन्द्र सिंह, सह. आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, चिखली (डूंगरपुर)
  डॉ. पुरुषोत्तम पाण्डेय, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, देवेंद्र पी. जी कॉलेज, बिल्थरा रोड (बलिया)
- **मानव जीवन में योग का महत्व** 214-217
  डॉ. समरेन्द्र नारायण मिश्र, वरिष्ठ सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर, उ.प्र.

राष्ट्रीय एकता और भारतीय कला - बिम्ब

*डॉ. गीता अग्रवाल**

सारांश :–

कला, धर्म, साहित्य तथा संस्कृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव हैं। भारतवर्ष में सामाजिक और क्षेत्रीय दृष्टिकोण से ऊपर उठकर चित्रकला धर्म के साथ मिलकर संस्कृति के उन्नयन में सहायक रही है। संस्कृति की यह अपार सम्पदा जो विरासत में मिली, उस पर सभी का समान अधिकार रहा और यही आकार देश की एकता का सूत्र है, राष्ट्रीय एकता की शक्ति है। कला में एक संपूर्ण जीवन के राग–विराग होते हैं। एक अमूर्त रूपाकार अगर, गहरे कला अनुभव की उपज है, तकनीक और कल्पना शक्ति दोनों ही स्तरों पर, तो एक समतावादी समाज के निर्माण और विघटनकारी शक्तियों के विरूद्ध वह एक अच्छी आकृतिमूलक कला की ही तरह एक सार्थक कार्यवाही है।

बौद्ध जातक कथाओं से चित्रित अजन्ता की गुफाऐं, जैन धर्म के चित्रित कल्पसूत्र, कोणार्क का सूर्य मंदिर, भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, पुरी का लिंगराज मंदिर, कुतुबमीनार, फतहपुर सीकरी का स्थापत्य, ताजमहल किसी एक जाति, वर्ग अथवा धर्म के ही कला तीर्थ बने नहीं रह सके। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ एक विशेष सम्प्रदाय के मंदिर में पूजा अर्जना के अतिरिक्त उनकी कलात्मकता से ही आकर्षित होकर अनेक सम्प्रदायों तथा विभिन्न क्षेत्रों से जनसमूह आता है। राजपूत मुगल तथा पहाड़ी चित्र शैलियों के प्रारम्भ के साथ ही धर्मेत्तर विषयों के चित्रण का बाहुल्य दिखाई देता है। कला में विषय–वस्तु के विस्तार के साथ ही इसमें और अधिक व्यवपकता दिखाई देती है। बंगाल स्कूल ने पुर्नजागरण का जो शंख नाद किया, वह सारे भारत वर्ष में गूंजा और वह देश भर में पुर्नजागरण का काल माना गया। असम में जन्में भावेश सन्याल ने, लाहौर में अपनी कला साधना प्रारंभ की और दिल्ली में स्थाई हो कर बस गऐ। बंगाल के चित्रकार सारे देश में कला चेतना के अग्रदूत बनकर पूरे देश में फैले। सार रूप में कहा जा सकता है कि मानवीय संवेदना कला का मूल उत्स है और संवेदना जाति, धर्म, प्रदेश की सीमा से परे होती है। अतः कला जहाँ दो हृदयों के बीच एक गूंज पैदा करती है, दो दृष्टियों में एक रंग की अनुभूति छोड़ती है वहीं से राष्ट्रीय एकता का बीज अंकुरित होता है।

शब्द संकेत – आकृति मूलक, पुनर्जागरण, अभिव्यंजना, शौर्यमयी, अमूर्त, बिम्ब।

---

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रभारी चित्रकला विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

सम्प्रति अधुनातन कला के राष्ट्रीय हस्ताक्षरों में अन्तर्राष्ट्रीय मंच की एकता के स्वर हैं। साधनहीन, अनगढ़ लोक जीवन की सरलता, अनूठे आकार बिम्बों में विदेशों तक पहुँच गई हैं। प्राचीन दर्शन और तन्त्रशास्त्र, कला साधना का आधार है, वहीं भारतीय कलाकार राष्ट्रीय स्वरूप के अनदेखे पक्ष को भी अनावरित कर रहा है, जिसका सटीक उदाहरण समीक्षावाद है। विसंगति और अन्तःसंघर्ष के इस युग में भी हुसैन की 'मदर टेरेसा' और 'इंदिरा गांधी की चिरनिद्रा' राष्ट्रीय एकता के शाश्वत बिम्ब हैं। अमूर्त आकारों की ध्वन्यात्मकता, समस्त विश्वकला की मूल उद्भावना है।

आज की भारतीय कला में, युगानुरूप वातावरणीय अनुभवों और समकालीन विसंगतियों के साथ भी, राष्ट्रीय एकता का निदर्शन है। कोई भी कलाकार अपनी कलाकृतियों के माध्यम से यदि मानवता की स्थापना करता है तो वह कलाकार महामानव बन जाता है। आज जरूरत इस बात की है कि किस प्रकार हम मानव बन सकते हैं। भारत की राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है कि मानवता की स्थापना यदि कवि अपनी कविता के माध्यम से, संगीतकार धुनों के द्वारा, चित्रकार चित्रों को बनाकर, नृत्यकार ताल लय के माध्यम से और मूर्तिकार पत्थरों में जान फूँककर भारत की महान पहचान कायम करने में सफल होता है तो यह बात पूरी तरह खरी उतरती है कि कला ने भारत की राष्ट्रीय एकता को मजबूती दी। यहाँ के लोगों में ईमान व मुहब्बत के सम्बन्ध कायम किये। वस्तुतः कला मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है, तोड़ती नहीं। अतः कला राष्ट्रीय एकता को अवश्य कायम कर सकती है।

सन्दर्भ :

1. भारतीय चित्रकला का इतिहास, डॉ० आर०ए० अग्रवाल
2. कला और कलाकार, प्रो० रणवीर सक्सेना
3. भारतीय चित्रकला के पदचिन्ह, डॉ० जगदीश गुप्त
4. भारतीय कला का इतिहास, डॉ० नीलिया गुप्ता
5. कला त्रैमासिक, राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश (अप्रैल 2000)

***

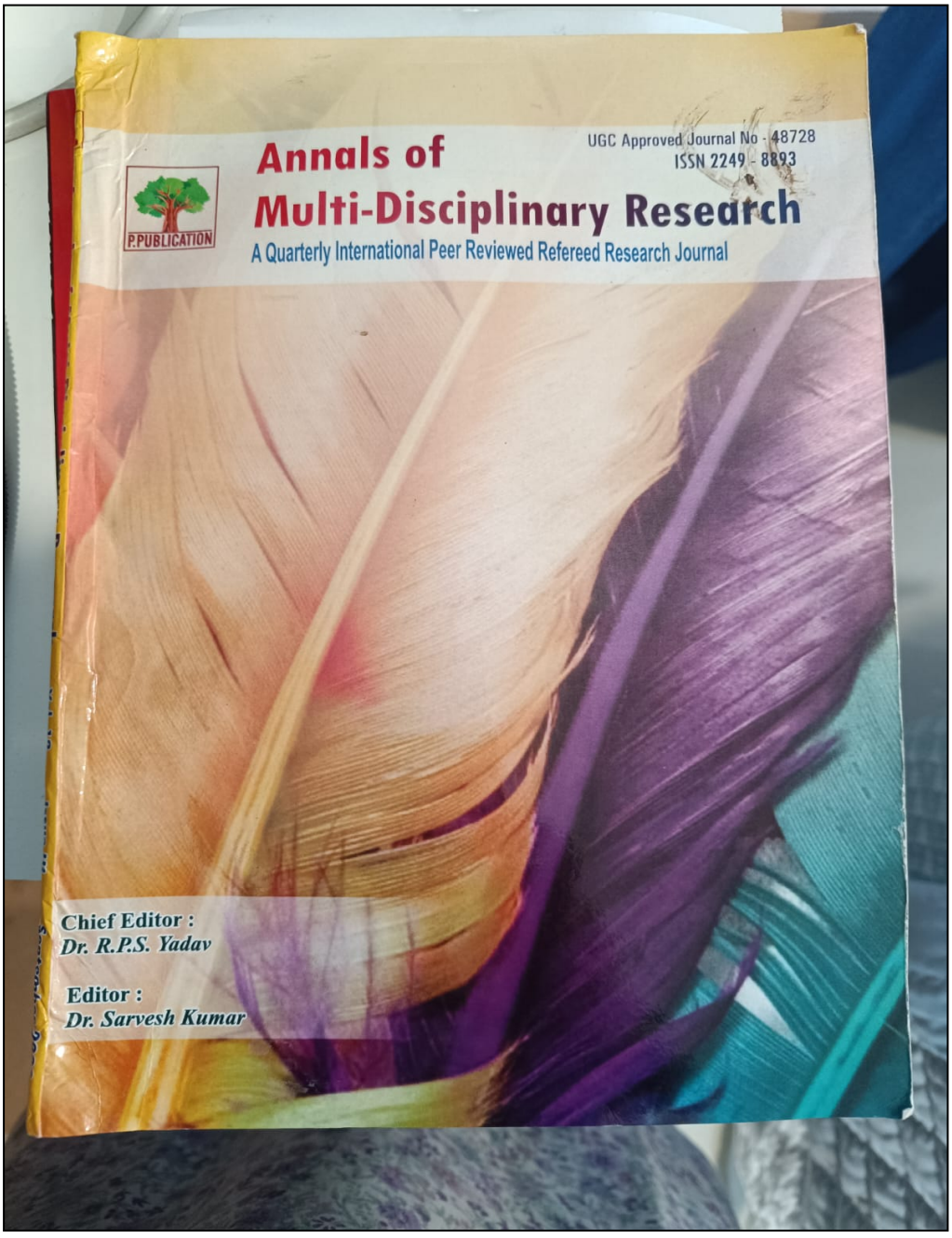
P.PUBLICATION
Annals of
Multi-Disciplinary Research
UGC Approved Journal No - 48728
ISSN 2249 - 8893
A Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal
Chief Editor :
Dr. R.P.S. Yadav
Editor :
Dr. Sarvesh Kumar

- महादेवी वर्मा के काव्य में संकलित गीति तत्व 45-48
  डॉ. नीलिशा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), राजकली, रमाशंकर शुक्ल महाविद्यालय, मोठिन, जलेशरगंज, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

- वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन 49-52
  जिनेन्द्र कुमार सिंह, शोधार्थी, शिक्षक-शिक्षा विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)
  प्रो. रीता सिंह, प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

- संगीत के परिप्रेक्ष्य में रस 53-54
  डॉ. नमिता मेहरोत्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (संगीत-गायन), ज्वाला देवी विद्यामन्दिर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, (छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय) कानपुर

- वैश्वीकरण एवं वर्तमान आर्थिक संरचना : एक विमर्श 55-57
  नौशीन बानो, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, हण्डिया पी.जी. कॉलेज, हण्डिया, प्रयागराज
  डॉ. सुरेन्द्र सिंह, शोध निर्देशका, समाजशास्त्र विभाग, हण्डिया पी.जी. कॉलेज, हण्डिया, प्रयागराज

- भारतीय कला में प्रतीक अंकन 58-62
  डॉ. गीता अग्रवाल, प्रभारी चित्रकला विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

- ब्रिटिशकाल में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति 63-65
  संगीता कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

- गाँधी दर्शन का पोषक 'श्रीरामचरितमानस' 66-69
  डॉ. रेखा चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), ए.के.पी. (पी.जी.) कॉलिज, खुर्जा।

भारतीय कला में प्रतीक अंकन

डॉ. गीता अग्रवाल*

सारांश :

किसी भी जड़ अथवा चेतन पदार्थ को देखकर हमारे मन में उत्पन्न भावना उसकी समता किसी अन्य पदार्थ से करती है – जैसे, आकाश को देखकर उसकी विशालता, का हिमालय से उसकी अचलता का, सिंधु से गंभीरता का और पृथ्वी से सहनशीलता का आभास होता है और वह इस भाव का प्रतीक बन जाता है। भारतीय कला प्रतीकों में अन्तर्निहित अभिप्रयों को समझे बिना भारतीय कला को सही–सही रूप में समझ पाना सम्भव नहीं है। इसीलिए इन प्रतीकों को भारतीय कला की वर्णमाला कहा जाता है। भारतीय कला भारतीय जीवन का प्रतिविम्ब है। यहाँ के धर्म, दर्शन और संस्कृति कला में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हुऐ है। इस गुरुतर कार्य के लिए भारतीय कलाकारों ने कतिपय प्रतीकों का सहारा लिया है। विभिन्न विचारों, परम्पराओं, मान्यताओं एवं विश्वासों को इन प्रतीकों ने साकार कर दिया है। ये कला प्रतीक नकेवल विचारों को अभियव्यक्त करते हैं वरन् शोभा, आरक्षा एवं मांगलिक भावनाओं की संवृद्धि भी करते हैं। जहाँ ये कला–प्रतीक किसी विशिष्ट विचार या भाव की सृष्टि के निमित्त नहीं भी होते है वहाँ भी ये अपने स्वरूप का मांगलिक प्रभाव डालते हैं और दर्शक के शारीरिक एवं मानसिक सौन्दर्य बोध का परिष्कार करते हैं। साधारणतया भारतीय कला–प्रतीकों को कई कोटियों में गिनाया जा सकता है। जैसे मांगलिक प्रतीक, धार्मिक प्रतीक, दैवत्व एवं राजत्व के प्रतीक आदि। ये प्रतीक पुष्प–लता–वृक्ष, पशु–पक्षी, उपकरण, पात्र, शस्त्र अथवा डिजाइन के माध्यम से रूपायित किऐ गऐ हैं। वस्तुतः मानव स्वभाव के साथ जुड़े हुऐ हैं।

शब्द संकेत–प्रतीक, चक्र, स्वास्तिक, मृदभांड, पदमगुच्छ, ज्योतिर्गमय

उद्देश्य :–

विचारों का आदान प्रदान मनुष्य कीआदिम प्रवृति रही है। इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप मनुष्य की भाषा का जन्म हुआ। परस्पर बोलकर या बातचीत करके विचारों का आदान प्रदान किया जा सकता है। परन्तु जो व्यक्ति उस भाषा को नहीं जानता है वो उसके विचारों से परिचित नहीं हो सकते। भाषा के परिज्ञान के बावजूद मनुष्य के विचारों का सार्वभौमिक आदान प्रदान सम्भव नहीं है। भाषा की इस कमी को पूरा किया कला ने। मनुष्य ने अपने मन में उठने वाले विचारों को कला के माध्यम से साकार या मूर्तरूप प्रदान किया। दैवी एवं मानवेत्तर शक्तियों के लिए भी कतिपय प्रतीकों की अवधारणा की गई थी। अस्तु, यह स्पष्ट है कि कला का उद्देश्य मात्र नेत्रों को प्रमुदित करना नहीं,अपितु आत्मा को संस्कार, परिष्कार अथवा संतुष्टि प्रदान करना भी है। भारतीय कला प्रतीकों के अध्ययन से न केवल, भारतीय कला की अनेक धार्मिक वैचारिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का उद्घाटन संभव हो सकेगा, अपितु पाठक के ह्रदय में भारतीय कला के सौन्दर्य एवं वैशिष्ट्य के प्रति एक स्वाभाविक आकर्षण भी जाग्रत हो सकेगा।

विषय वस्तु :–

प्रतीकीकरण मनुष्य का सहज स्वभाव है। जब हम विचार करते–करते ऐसे स्तर पर पहुँच जाते हैं जहाँ सामान्य भाषा पद्धति हमारी अनुभूतियों को व्यक्त करने में असमर्थ रहती है तो हम प्रतीक विधि का आश्रय लेते है। अत्यन्त उलझे हुऐ तथा विस्तृत टिप्पणी के द्वारा समझ में आने वाले विषयों को भी प्रतीक विधि में बड़ी सरलता से प्रस्तुत किया जा सकता है। वास्तव में प्रतीक जिस आकृति को प्रस्तुत करता है उससे बहुत अधिक अर्थ प्रच्छन्न रूप से उसमें निहित रहता है। प्रतीकों का निर्माण केवल संसार में देखे गऐ रूपों के आधार पर ही नहीं होता। कलाकार अनेक लौकिक वस्तुओं के संयोग से भी प्रतीक–सृष्टि करते हैं और ऐसी सूक्ष्म आकृतियाँ भी प्रस्तुत करते है, जिनका सादृश्य

* प्रभारी चित्रकला विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

सन्दर्भ :

1.	भारतीय कला प्रतीक	डॉ0 ए0 एल0 श्रीवास्तव
2.	हिन्दुइज्म एण्ड बुद्धिज्म	आनन्द कुमार स्वामी
3.	प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला	जगदीश गुप्त
4.	प्रतीक शास्त्र	परिपूर्णानन्द वर्मा
5.	गुप्तकाल का संक्षिपत इतिहास	भागवत शरण उपाध्याय
6.	स्वास्तिक और ओंकार	रामबहादुर लाला सीताराम
7.	प्राचीन माध्यमिका की नारायण वाटिका	वासदुवे शरण अग्रवाल

***

Mrs. Pratima Singh

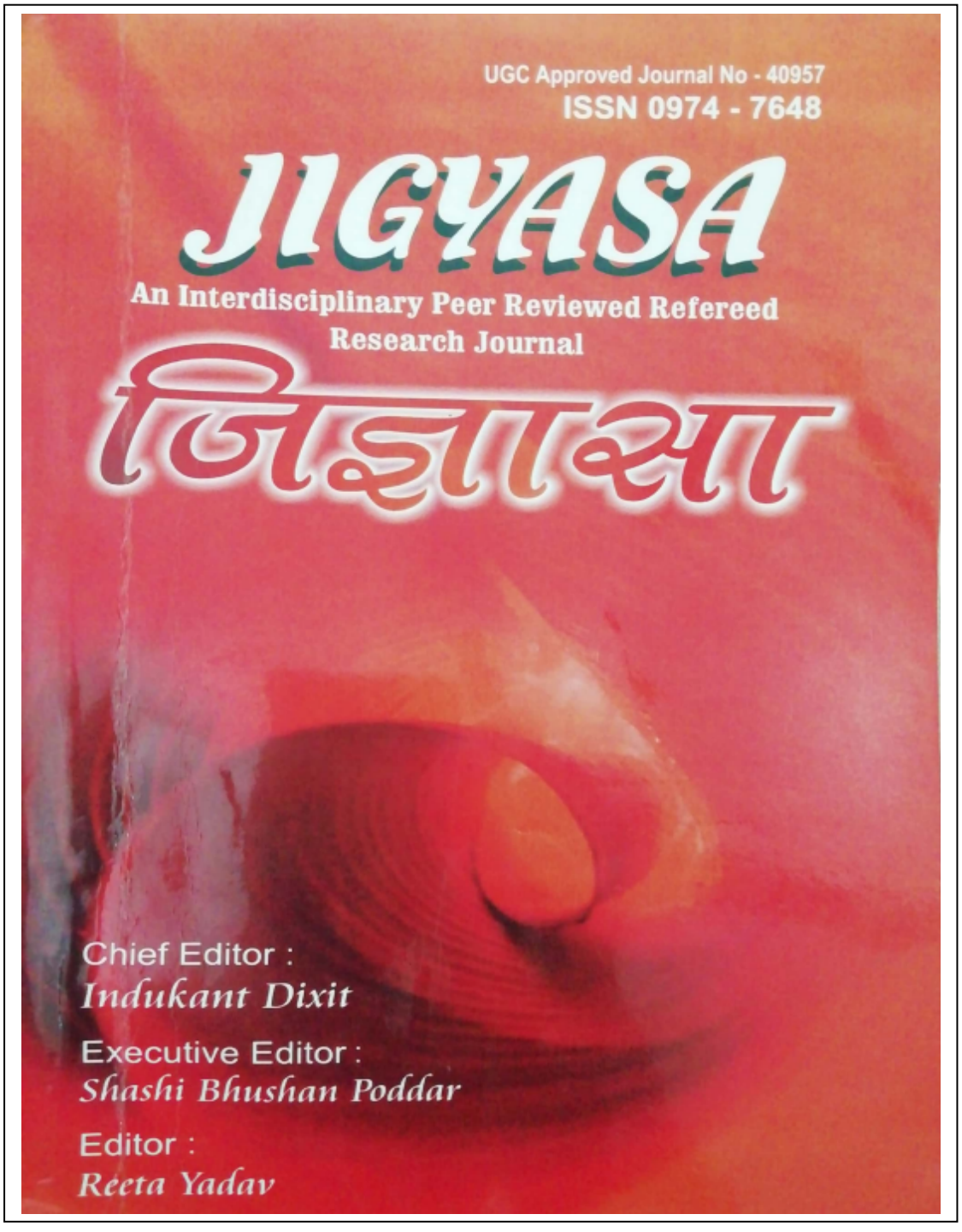

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 5.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 15 June 2022 No. II

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

Editorial Advisory Board

Prof. Rajani Ranjan Jha
Ex. Head, Department of Political Science
Banaras Hindu University, Varanasi

Prof. AK Mukhopadhyay
Ex. Head, Department of Political Science
Kolkata University, Kolkata

Prof. S.N. Upadhyay
Ex. Director, I.T., BHU & Academic Staff College, BHU, Varanasi

Prof. Chandrakala Padia
Ex. Head, Department of Political Science
Banaras Hindu University, Varanasi

Prof. S. C. Dubey
Department of Philosophy and Religion
Banaras Hindu University, Varanasi

Prof. Koushal Kishor Mishra
Ex. Head, Department of Political Science
Banaras Hindu University, Varanasi

Prof. M. Shyam Chaturvedi
Department of Political Science
University of Rajasthan, Jaipur

Prof. Sri Prakash Mani Tripathi
Head, Department of Political Science
DDU Gorakhpur University, Gorakhpur

Editorial Board (Review Board)

Prof. Archana Singh
Physical Education
Mahila Maha Vidyalaya
Banaras Hindu University, Varanasi

Prof. Rashmi Chaudhari
Faculty of Education, Kamachha, B.H.U., Varanasi

Dr. Jayant Upadhyay
Head, Department of Philosophy and Culture
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindu Vishwavidyalaya, Wardha

Dr. Pramod Kumar Singh
Head, Department of Philosophy
J. N. College, Ranchi

- अशोक के धर्म-लेख : एक ऐतिहासिक अध्ययन — 244-248
  विवेक कुमार, शोध छात्र, बौद्ध अध्ययन विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
- उत्तर प्रदेश लघु उद्योग निगम लिमिटेड : एक परिचय — 249-250
  निलेश चन्द्र उपाध्याय, शोध छात्र, वाणिज्य संकाय, मड़ियाहूँ पी. जी. कालेज, मड़ियाहूँ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश
  डॉ. आशीष कुमार, शोध निर्देशक, शोध छात्र, वाणिज्य संकाय, मड़ियाहूँ पी. जी. कालेज, मड़ियाहूँ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश
- महिलाओं की राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन — 251-258
  (अध्ययनरत आजमगढ़ जनपद के विशेष संदर्भ में)
  डॉ. श्रीमती कृष्णा सिंह, शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर, गांधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बरदह, आजमगढ़
  प्रतिमा सिंह, लेखिका, सहायक प्राध्यापिका, समाजशास्त्र विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली एवं शोध छात्रा गांधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बरदह, आजमगढ़
- "केन्द्रीय सरकार के बजटीय व्ययों में वृद्धि के कारण का अध्ययन" — 259-263
  पंकज कुमार सिन्हा, प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, श्री कृष्णा विश्वविद्यलय, छतरपुर म.प्र.
  विशाल कुमार अरोरा, शोध छात्र, प्रोफेसर, श्री कृष्णा विश्वविद्यलय, छतरपुर म.प्र.
- बिहार में क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रभाव : प्रतिबंधित दस्तावेजों के अध्ययन के संदर्भ में (1930–1934) — 264-272
  राहुल कुमार शाही, शोध छात्र, इतिहास विभाग, (समाज विज्ञान संकाय) जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

महिलाओं की राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन (अध्ययनरत आजमगढ़ जनपद के विशेष संदर्भ में)

*डॉ. श्रीमती कृष्णा सिंह**
*प्रतिमा सिंह***

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय समाज के ग्रामीणाचलों में महिला सशक्तिकरण के द्वारा होने वाले परिवर्तन की आंकलन हेतु निर्मित किया गया है । अध्ययन की सुगमता हेतु जनपद आजमगढ़ के (दैवनिदर्शानीकरण के चयनित प्रक्रिया द्वारा) ग्रामीणाचलों को पृष्ठभूमि के रूप में लिया गया है । व्यक्ति राजनीतिक जीवन में विभिन्न स्तर की सांवेगिक मनोवृति और राजनीतिक स्तर पर भाग लेता है, परंपरागत जनतंत्रात्मक सिद्धांत के अनुसार राजनीतिक क्रियाकलापों में व्यक्ति की भूमिका (सहभागिता) एक स्वतंत्र मूल्य है । महिलाओं से संबंधित तथा सामाजिक कानूनों के चार मामले हैं– विवाह, गोद लेना, संरक्षकता एवं गर्भपात । विवाह से संबंधित प्रमुख समस्याएं हैं– जीवनसाथी का चुनाव, विवाह की आयु, बहुपत्नी विवाह, निर्योग्य विवाह, निष्प्रभावी विवाह, विवाह विच्छेद, दांपत्य अधिकारों का प्रत्यस्थापन, गुजारा भत्ता, बच्चों का संरक्षण, दहेज तथा पुनर्विवाह । इनके विधान इस प्रकार हैं– 1955 का हिंदू विवाह अधिनियम, 1954 का विशेष विवाह अधिनियम, तथा 1856 का पुनर्विवाह अधिनियम । बच्चों को गोद लेने से संबंधित अधिनियम 1956 में पास किया गया जिसे हिंदू दत्तक ग्रहण एवं भरण पोषण का नाम दिया गया । इस अधिनियम में न केवल विवाहित स्त्रियों को बल्कि अविवाहित स्त्री तथा तलाकशुदा स्त्री को भी बच्चों को अधिग्रहण का अधिकार दिया गया ।

संपत्ति का अधिकार, समान पारिश्रमिक, कार्य करने की दशाएं, प्रसूति लाभ, कार्य सुरक्षा एवं महिलाओं को संपत्ति का अधिकार आदि महिला सशक्तिकरण हेतु अत्यंत आवश्यक सुधार हैं । एक महिला की संपत्ति के अधिकार का अर्थ उसका पत्नी,पुत्री, विधवा तथा मां के रूप में संपत्ति का अधिकार है । हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के अनुसार न केवल पुत्री को ही उसके भाई के बराबर का भाग पिता की संपत्ति में मिलता है, बल्कि एक विधवा को भी अपने मृत पति की संपत्ति में से पुत्रों और पुत्रियों के

---

* शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर, गांधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बरदह, आजमगढ़

** लेखिका, सहायक प्राध्यापिका, समाजशास्त्र विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली एवं शोध छात्रा गांधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बरदह, आजमगढ़

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित महिलाओं की संख्या शहरी क्षेत्रों की तुलना में बहुत कम है । 1981 में ग्रामीण क्षेत्रों में 17.9 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं की तुलना में शहरी क्षेत्रों में यह संख्या 47.65 प्रतिशत थी । 1979 में प्राइमरी स्तर पर (पहली से पांचवी कक्षा) पढ़ने वाले 789 लाख छात्रों में 38. 95 प्रतिशत लड़कियां थी, मिडिल स्तर (छठवीं से आठवीं तक) के 187 लाख छात्रों में से 32.9 प्रतिशत लड़कियां थी, हाई स्कूल (नौवीं और दसवीं कक्षा) में पढ़ने वाले 751 लाख छात्रों में से 29.42 प्रतिशत लड़कियां थी, तथा कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं में अध्ययनरत 1 लाख दस हजार छात्र छात्राओं में से 32.25 प्रतिशत लड़कियां थी । उच्च शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालों में लड़कियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है । हालाँकि 1941 के बाद लड़कियों की संख्या में प्रत्येक स्तर पर उल्लेखनीय वृद्धि हुई है ।

किसी भी समाज में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता एवं राजनीतिक व्यवहार उस समाज विशेष के सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं पर आधारित होता है । विकासशील समाजों में महिलाओं की स्थिति में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं या किए जाने का प्रयास चल रहा है । सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में उनको सक्रिय सहभागिता के अवसर प्रदान करने के लिए उनके अंदर राजनीतिक जागरूकता एवं चेतना पैदा करने के प्रयास संवैधानिक दृष्टि से भी किए जा रहे हैं । किसी भी समाज में व्यक्ति की परिस्थिति के कुछ प्रासंगिक सूचक होते हैं जैसे कार्य तथा राजनीतिक सहभागिता का हद तथा सीमा, शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य की स्थिति, नीति निर्माण करने वाले निकायों में प्रतिनिधित्व, संपत्ति ग्रहण करने का अधिकार आदि । इन सूचकों में समाज के हर एक सदस्य का एक समान अधिकार नहीं होता, और इस असमानता के पीछे लिंग एक महत्वपूर्ण कारण है । इसलिए कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक कारकों की वजह से महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक भूमिका अधिकांशत अनदेखी ही रह जाती है । समाज में उनका महत्व कम कर दिया जाता है और आर्थिक तथा सामाजिक रूप से उनके विरुद्ध भेदभाव किया जाता है ।

समकालीन भारत में व्यापक रूप से सामाजिक परिवर्तन हुए, कृषि का आधुनिकीकरण, आर्थिक विकास, नगरीकरण तथा तेज औद्योगिकीकरण की प्रक्रियाएं प्रारंभ हुई तथा तथापि इन प्रक्रियाओं ने क्षेत्रीय असंतुलन को जन्म दिया है । वर्ग असमानताओं में वृद्धि की है तथा लिंग पर आधारित विषमताओं को भी बढ़ा दिया है । इसीलिए नारी वर्ग में इन बढ़ती असमानताओं के प्रति आक्रोश भी है । इन सभी कारकों ने समकालीन भारतीय समाज में महिलाओं की परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है । किसी भी समाज में महिला एवं पुरुष समूह दोनों परस्पर क्रिया के माध्यम से एक दूसरे से विभिन्न भूमिकाओं और प्रत्याशाओं के क्षेत्र में अपेक्षाएं रखते हैं । यह भूमि, कार्य तथा अपेक्षाएं प्रत्येक व्यक्ति के लिए

Ms. Priyanka Singh

ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed Peer Reviewed

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

वर्ष-9, अंक-17, 2023
(जनवरी - जून)
(अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

सम्पादक
डॉ० मधु रानी शुक्ला

सम्पादक मण्डल
डॉ० राजश्री रामकृष्ण, डॉ० मनीष कुमार मिश्रा,
डॉ० धनंजय चोपड़ा, डॉ० ज्योति सिन्हा

सह सम्पादक
सुश्री शाम्भवी शुक्ला

व्यंजना
आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर, सुलेम सरांय
प्रयागराज - 211011

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

सम्पादक : डॉ॰ मधु रानी शुक्ला
सम्पादक मण्डल : डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा, डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा
सहायक सम्पादक : सुश्री शाम्भवी शुक्ला
मल्टीमीडिया सम्पादक : श्रेयस शुक्ला

प्रकाशक एवं वितरक :
व्यंजना (आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी)
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर
सुलेम सरांय, प्रयागराज - 211 001
मो॰ : 9838963188, 8419085095
ई-मेल : anhadlok.vyanjana@gmail.com
वेबसाइट : vyanjanasociety.com/anhad_lok

मूल्य : 300/- प्रति अंक, पोस्टल चार्जेज अलग से
सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 700/-
तीन वर्ष : 2,100/-
आजीवन : 15,000/-

संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
- रचनाकारों के विचार मौलिक हैं
- समस्त न्यायिक विवाद क्षेत्र इलाहाबाद न्यायालय होगा।

मुद्रक :
गोयल प्रिन्टर्स
73 A, गाड़ीवान टोला, प्रयागराज
फोन - 0532-2655513

26. साहित्य और नृत्य — *प्रेरणा अग्रवाल* 145

27. कथक नृत्य के साथ विभिन्न गायन शैलियों का प्रयोग — *डॉ॰ ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय, स्नेहा सिंह* 151

थाती

28. Culture of Punjab : Music, Dance, Fairs and Festivals — *Dr. Harjinder Kaur Sandhu* 159

29. राजस्थानी कालबेलिया और लोकनृत्य परंपरा — *डॉ॰ हर्षा त्रिवेदी* 166

30. उत्तर बंगाल के लोकनाट्यों में संगीत पूंज — *डॉ॰ जयंत कुमार बर्मन* 172

31. अवध की सोज़ख़्वानी परम्परा और संगीत — *डॉ॰ निष्ठा शर्मा* 178

32. छत्तीसगढ़ी का समृद्ध लोकसाहित्य — *डॉ॰ सरोज चक्रधर* 182

33. इक्कीसवीं सदी में भोजपुरी की गीत परंपरा : अश्लील और श्लील का परिदृश्य — *डॉ॰ धीरेंद्र प्रताप सिंह* 188

34. उत्तराखण्ड के लोकगीतों में देवलोक व जनलोक सम्बन्ध : एक अवलोकन — *डॉ॰ अर्चना डिमरी* 193

35. पूर्वांचल क्षेत्र में पत्यायुष्य अभिवर्धन निमित व्रत एवं कथाएं:एक परिचय — *विदुषी जायसवाल, डॉ॰ रंजना उपाध्याय* 198

अंकन

36. चित्रकार ए रामचंद्रन की कृतियों में महाकवि कालिदास के प्रकृति प्रेम का प्रभाव — *मिठाई लाल, राज कुमार सिंह* 205

37. उत्तर प्रदेश की समसामयिक चित्रकला एक अध्ययन — *प्रियंका सिंह, डॉ॰ रवीश कुमार* 211

38. Mahavidyas : The Changing Mood in Visual Presentation — *Kartik Tripathi* 216

39. झांसी और दतिया के गोसाई सन्यासियों के मंदिरों की भित्ति चित्रकला एवं मूर्तिकला का अध्ययन — *माधवी निराला, डॉ॰ श्वेता पाण्डे* 222

40. मध्यकालीन साहित्य में चित्रात्मक रामकथा के दर्शन — *क्षमा द्विवेदी* 228

उत्तर प्रदेश की समसामयिक चित्रकला एक अध्ययन

प्रियंका सिहं
(शोधार्थी) असिस्टेंट प्रोफेसर
एम॰ जे॰ पी॰ रूहे॰ वि॰ वि॰, बरेली

डॉ॰ रवीश कुमार
शोध निर्देशक
एम॰ जे॰ पी॰ रूहे॰ वि॰ वि॰, बरेली

सारांश

उत्तर प्रदेश की चित्रकला का विकास प्रागैतिहासिक काल से लेकर समसामयिक काल की चित्रकला में दिखायी देता है। चित्रकला के विकास के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश में अनेंको कला विधिकाओं, ललित कला अकादमी, कला संस्थायें एवं कला संग्रहालयों आदि के महत्वपूर्ण योगदान से आज हम समसामयिक चित्रकला के विकसित रूप को देखते हैं। जिससे विद्यार्थी, कलाकारों/चित्रकारों को कला के साथ ही इससे सम्बन्धित होने वाली कला की क्रियाएँ जैसे-चित्रों की प्रदर्शनियों, उनके संग्रहों, कला शिविर की क्रियाएँ जैसे- चित्रों को पुरस्कृत, सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित करने के विभिन्न माध्यमों से चित्रकला का विकास उत्तर प्रदेश में हो रहा है।

मुख्य शब्द

उत्तर प्रदेश की चित्रकला, चित्रकार, समसामयिक चित्रकला, कला, विषय एंव तकनीक।

कला कल्याण की जननी है। इस धरती पर मनुष्य की उत्पति का इतिहास कला के द्वारा ही रूपायित हुआ है। कला इस विराट विश्व की सृजनशक्ति होने के कारण सृष्टि के समस्त पदार्थों में व्याप्त है यह अनन्त रूप है और इसके इन अनन्त रूपों की अभिव्यक्ति एवं निष्पत्ति का आधार कलाकार है।

कला किसी भी युग की हो, कला ही होती है। कला चाहे प्रागैतिहासिक काल की हो, चाहे प्राचीन अथवा मध्यकालीन आज भी देखी जाती है, समझी जाती है और सराही जाती है। प्राचीन काल की होने से कला का महत्व कम नहीं हो जाता, बल्कि उसका अक्सर महत्व बड़ जाता है। कला के द्धारा हमें अपना प्राचीन इतिहास, संस्कृति, गौरव और समाज की प्रगति का पता लगता है। कला समय के साथ हमें अपनी ओर और भी अधिक आकृष्ट करती है। लेकिन, यह भी सच है, कि कला हमेशा नया रुप ग्रहण करती रहती है। जैसे-जैसे समाज, हमारे जीवन, क्रिया-कलापों, विचार व दृष्टिकोण एवं रुचि में परिवर्तन होता है, उसी तरह कला में भी परिवर्तन होता है, क्योंकि कला हमेशा अपने समसामयिक समाज, जीवन व सभ्यता तथा संस्कृति का दर्पण होती है। जैसे-जैसे उनका स्वरुप बदलता है कला का भी रुप बदलता जाता है। कला कभी एक सी नहीं रहती।

किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता का मूल्यांकन वहाँ की कला परम्परा के माध्यम से किया जाता है। कला मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। अतः दार्शनिकों ने कहा है कि- ''कला ही जीवन है'' वास्तव में कला जीवन जीने की पद्धति, जीने का एक ढंग है। कला के द्वारा ही जीवन को पूर्णता व दक्षता के साथ बिताया जा सकता है। कला वह

मानवीय क्रिया है, जिसमें उसकी प्रकृति, रूप और भाव सम्मिलित रहते हैं। सर्वश्रेष्ठ कला सदैव चेतना को स्पर्श करती है। भारतीय समसामयिक कला की पृष्ठभूमि को समझना ठीक उसी प्रकार है जैसे- किसी उलझे हुये धागे को सुलझाना, जिसकी प्रत्येक गांठ प्राचीन अखण्डित उपमहाद्धीप के काल समान है तथा जिनमें धर्म, इतिहास एवं दर्शन गुँथा हुआ है। यह एक अत्यधिक उत्तेजक व जटिल अभ्यास है। उत्तेजक इसलिए क्योंकि यह विस्तृत कार्य क्षेत्र है जिसमे अभी तक कई अनछु, पहलू हैं वहीं जटिल इसलिए क्योंकि आज भी हमारे समक्ष चित्रित, मौखिक तथा लिखित साक्ष्य सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं। भारतीय कला को कालक्रम, भूगोल तथा संस्कृति की दृष्टि से समझा जा सकता है साथ ही ऐतिहासिक प्रकिया निर्धारण करने में समय व अतंराल भी महत्वपूर्ण कारक है। प्रकृति के सौन्दर्य से अभिभूत होकर मानव ने अपने इस अहलाद को कला के विविध रूपों को अनेकों प्रयोगों द्धारा विभिन्न कालों में प्रकट किया है। यह कला प्रयोग उस समय से चले आ रहे हैं जब वह स्वयं आदिम अवस्था में था तथा गोंडवाना के अनेक भू-भागों में सभ्यता की कहानी रच रहा था।

समसामयिक कला का तात्पर्य उस कला से है जो वर्तमान में एक विशेष आन्दोलन से जुड़ी हुई है और प्राचीन परम्पराओं एवं रुचि निरन्तर नये-नये प्रयोगों से उत्पन्न हुई है। कला अभिव्यक्ति, मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक तथा जटिल होती जा रही है। भारत में समकालीन कला को बढ़ावा देने का काम भारत सरकार द्वारा गठित 'राष्ट्रीय ललित कला अकादमी' का है। इस अकादमी की स्थापना स्वतंत्र भारत में 5 अगस्त, 1954 को भारत सरकार द्वारा की गयी। समसामयिक कलाकारों के लिये कोई भी विषय भारतीय समाज की जटिलतायें, कुण्ठायें आदि अछुती नहीं है। अगर संघर्षरत नये कलाकार की कृतियों पर नजर डालें तो ये विंसगतियाँ पूरी जटिलता के साथ उनके चित्रों में दिखलाई पड़ती है। समसामयिक कलाकार व्यक्ति तथा समाज की भावनाओं को आत्मसात् कर गहन खोज में लगा हुआ है।

समसामयिक चित्रकला का जन्म वैज्ञानिक अवधारणा से हुआ है और उसमें प्रयोगवादी दृष्टिकोण है जिसके फलस्वरूप आधुनिक चित्रकला का स्वरूप विभिन्न प्रारूपों में उपस्थित हो सका है किन्तु उसमें प्रयोगवादी प्रक्रिया किसी निश्चित खोज को स्थापित नहीं कर पायी है। जिसके कारण उसका कोई निश्चित स्वरूप अभी प्रकट नहीं हो सका है लेकिन अगर हम उत्तर प्रदेश की चित्रकला का स्वरूप दर्शाना चाहे तो हम यही कहेगें कि उत्तर प्रदेश की चित्रकला 'कुछ-कुछ पाश्चात्य और अधिकतम नवीन प्रयोगवादी है' समसामयिक चित्रकारों के नवीनतम तकनीकों द्वारा समसामयिक काल में उत्तर प्रदेश के चित्रकारों ने चित्रकला को नया आयाम प्रदान किया है।

समसामयिक कला का मतलब है आज की कला, वर्तमान में प्रचलित कला, नये जमाने की कला, नये युग की कला अथवा बींसवी शताब्दी की कला यह सब कालवाची शब्द ही है। आज की कला जब कहा जाता है तो इसका मतलब यही होता है कि कला का वह रुप जो समाज में आज प्रचलित है, चल रहा है। जैसी कला हम आज देख रहे है इससे भी आधुनिक कला का अर्थ स्पष्ट नहीं होता, क्योंकि आज प्रदेश में हमारे बीच कई तरह की कलायें दृष्टिगोचर होती है। सभी को हम आधुनिक नही कह सकते जैसे हमारे बीच में ऐसे भी चित्रकार है जो महज अजन्ता, राजस्थानी, पहाड़ी अथवा मुगल कालीन चित्रों की हुबहू नकल उतार रहे है अथवा उन्हीं की तर्ज पर चित्र बना रहे है। ऐसे चित्रों अथवा चित्रकारों को हम समसामयिक नहीं कह सकते उन्हें पुरानी परिपाटी का चित्रकार ही कहा जा सकता है। इसी प्रकार गाँवों में भी कहीं-कहीं घर की स्त्रियों में चित्र बनाने की एक परम्परा चली आ रही है, वह भी समसामयिक कला नही है जो माँ से बेटी सीख कर परम्परागत तरीकों से चित्र बनाती है। यह भी ग्राम्य चित्रकला ही कही जायेगी आधुनिक कला नहीं इसी प्रकार आदिम जातियों में परम्परागत रुप से जो कला की परिपाटी चली आ रही है वह भी आधुनिक कला

नहीं है। अर्थात जो भी कला के रुप में आज के जमाने से पूर्व की कला की परम्परा या परिपाटी में बनते आ रहे या बन रहे हैं उन्हें हम पारम्परिक कला ही कह सकते है, समसामयिक कला नहीं।

उत्तर प्रदेश की समसामयिक चित्रकला :

उत्तर प्रदेश जनसख्यां की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यह विश्व के अनेक देशों से आकार में और आबादी में बहुत बडा है। सम्पूर्ण देश की संस्कृति और विरासत के प्रतीक इस राज्य ने अकेले ही भारत के इतिहास और समसामयिक चित्रकला में जो स्थान प्राप्त किया है, वैसा दूसरा किसी अन्य राज्य ने नही किया है। उत्तर प्रदेश की कला के आधुनिक युग का इतिहास सन् 1925 के बाद से ही प्रारम्भ होता है और इस अर्द्धशताब्दी तक तो प्रमुख रुप से लखनऊ आर्ट स्कूल के इतिहास से ही जुड़ता है क्योंकि प्रदेश के समसामयिक प्रसिद्ध कलाकारों में से कुछ को छोड़कर अधिकांश इसी कला विद्यालय से जुड़े रहे हैं।

उत्तर प्रदेश की कला तथा चित्रकला विश्वप्रसिद्ध मानी जाती है। उत्तर प्रदेश में काफी चित्रकारों ने भारत में एक प्रसिद्धि प्राप्त की है। उत्तर प्रदेश में चित्रकला के उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के कन्दरा या मिर्जापुर शैली के शैलाश्रयों में निर्मित चित्र से लेकर आधुनिक युग तक विद्यमान हैं। उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद तथा बनारस के मध्य वाले मिर्जापुर में पहाड़ी अंचलों से चित्र मिले हैं। इनके विषय पशु, पक्षी, शिकार आदि हैं। यहाँ चित्र दीवारों तथा छतों पर बने हैं। उत्तर प्रदेश राज्य में कला एवं कलाकारों के पोषण की हमेशा व्यवस्था रही है। वाराणसी, लखनऊ, जौनपुर आदि की मुग़ल, राजपूत, एवं ब्रिटिश शैली के चित्र इस बात के प्रमाण है।

21वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यदि हम उत्तर प्रदेश की कला का अवलोकन करें तो हमें अत्यधिक निराश होना पडेगा। जो प्रदेश प्राचीन काल से ही अपने महान सांस्कृतिक केन्द्रों- मथुरा, प्रयाग, वराणसी, कौशाम्बी, आदि की उत्कृष्ट कला एवं शिल्पों के लिए प्रसिद्ध रहा है, वहीं उत्तर मध्यकाल में मुगल शासन के मध्य पनपे, अपने नगरों-लखनऊ, आगरा, फ़र्रुखाबाद, रामपुर, मुरादाबाद, मऊ, मिर्जापुर आदि की कलाओं हस्तकलाओं चिकन, किमखाब, पत्थर व पीतल के वर्तन, छपे बुने वस्त्र, कालीन, हाथी दांत पर नक्काशी व अन्य अनेक शिल्पों के लिए अभी भी विख्यात है। वास्तुकला के क्षेत्र में बनारस, सारनाथ, मथुरा, वृन्दावन के मन्दिर, फतेहपुर सीकरी, ताजमहल, एतमातुद्दौला का मकबरा, लखनऊ के इमामबाड़े व कितने ही अन्य भवन विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाये हुये हैं। प्रदेश के कला भंडार को फतेहपुर सीकरी और आगरा में मुगल दरबार के संरक्षण में रस सिद्ध चित्रकारों-दशवंत, बसावन, केसूदास, चिन्तामन, गोवर्धन, उस्ताद मंसूर तथा अन्य अनेकों ने अपनी उत्कृष्ट कला से समृद्ध किया और आगे आने वाले काल में जहां लखनऊ, बनारस और गढ़वाल में स्थानीयता की छाप लिये अनेक चित्रकारों द्वारा सुन्दर कलात्मक चित्रों का निर्माण हुआ जिनमें गढ़वाल के चित्रकार मौलाराम काफी विख्यात हुये। उत्तर प्रदेश में मुगल शासन के अन्त और ब्रिटिश सत्ता के आरम्भ के साथ 19वीं शताब्दी का अंत आते-आते राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उथल-पुथल, संरक्षण और जीविका के अभाव में कला अपनी उन्नत परम्पराओं से दूर होकर निम्नस्तरीय तथा समाप्त प्रायः सी हो गयी थी।

इस सोचनीय स्थिति के प्रति ब्रिटिश शासक भी उदासीन न रहे और सन् 1907 में आयोजित औद्योगिक कान्फ्रेंस में लिए गये निर्णय के अनुसार प्रदेश में कला एवं शिल्प को प्रोत्साहित एवं विकसित करने के लिए सन् 1911 में लखनऊ में राजकीय कला एवं शिल्प विद्यालय की स्थापना हुई। जिसके प्रथम प्रधानाचार्य श्री नेथनियल हुर्ड नियुक्त हुये।

उत्तर प्रदेश में भी 1948-49 के लगभग कुछ युवा कलाकार नयी दिशा पाने की तलाश में प्रयोगशील थे। इनमें मूर्तिकला में स्व॰ जे॰ एन॰ सिहं जिन्होने यथार्थवादी शैली में भी कार्य किया किन्तु अपने मौलिक नये प्रयोगों के लिए वे स्मरण किये जायेगें

तथा चित्रकला के क्षेत्र में जीतेन्द्र कुमार, विश्वनाथ खन्ना जैसे लेखक खूब सक्रिय रहे। प्रदेश में 1950 के आस-पास कला के पतन, नवजन्म और विकास के यशशिखर को छूकर फिर रुढ़िग्रस्त होकर कला जगत में स्वीकार किये जाने की स्थिति तक पहुंचकर पुनः नये सिरे से नये धरातल की खोज के संघर्ष का इतिहास देखने को मिलता है किन्तु सृजनात्मक विधायें चाहे वह किसी भी क्षेत्र की हो सीमाबद्ध कदापि नहीं हो सकती विकास का क्रम अनादि है जो अनन्त काल तक चलता है। जहां भी एक काल में विकसित किसी विधा को पूर्ण सीमा मानकर, मोह अथवा पूर्वाग्रहण, जो उसी से बन्धकर नवयुग की चेतना और परिस्थितियों को नकार देती हैं, वे रुढ़ हो जाते हैं, पिछड़ जाते है। इस सत्य को स्वीकार करने की स्थिति का लखनऊ कला विद्यालय ने भी सामना किया और एक लम्बी अवधि तक उत्तर प्रदेश के कलाकारों को उपलब्धि की दिशा में सतत् संघर्ष करना पड़ा।

किन्तु आज स्थिति सर्वथा भिन्न है विगत तीस वर्षो में प्रदेश के कलाकारों की कला विषयक जागरुकता एवं निज को खोज पाने के लिए निरन्तर प्रयोगशील रहने के फलस्वरुप चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक्स आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनेक ऐसे नाम उभर कर सामने आए जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपने को स्थापित किया है। पिछले वर्षो में हुये सर्वेक्षणों के आधार पर यह तथ्य स्पष्ट हुये है कि इस बीच प्रदेश के उपरोक्त विभिन्न क्षेत्रों के कलाकार राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्य अखिल भारतीय स्तर की प्रमुख कला प्रदर्शनियों में न केवल भाग लेते रहे वरन् उनमें से कितने ही पुरस्कारों से सम्मानित भी होते रहे हैं। इसके अतिरिक्त समय-समय पर प्रदेश के अनेक कलाकार ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलरशिप, यूनेस्को फेलोशिप तथा विदेशी सरकारों के आमंत्रण पर विदेशों में अध्ययन एवं भ्रमण कर आये है। अनेक नवयुवक कलाकार अपनी रचनात्मक प्रतिभा के आधार पर राष्ट्रीय सांस्कृतिक छात्रवृत्ति तथा जूनियर फैलोशिप प्राप्त कर चुके और कर रहे है।

समसामयिक कला में दो दशकों के बदलाव विषय एवं सामग्री, माध्यम और नवीन प्रयोगों द्धारा प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करने के लिए समर्पित है क्योंकि समसामयिक कला का अभ्यास बहुत गतिशील है, तथा तकनीक के साथ सांस्कृतिक प्रभावों से अधिक से अधिक जागरूकता के साथ बदल रहा है। आर्ट गैलरी, कला संस्थान, कला संग्रहालय आदि समसामयिक कला अभ्यास एवं नव प्रयोगधर्मिता के लिए एक बड़ी भूमिका निभा रहे हैं और इंटरनेट के उपयोग ने सोच के तरीकों और कलाकारों तथा उनके काम करने की प्रकिया पर भी प्रभाव डाला है। वर्तमान कलाकारों द्वारा बड़े पैमाने पर विभिन्न देशों की यात्रा, अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लेना, अंतर्राष्ट्रीय कला रेजिडेंसी में हिस्सा लेने और कला की घटनाओं को स्वाभाविक रुप से अपनाने के लिए तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों में परस्पर बातचीत से नव प्रयोगधर्मिता को बल मिला है। कला संस्थान भी उपयुक्त वातावरण, समय और स्थान की आवश्यकता को पूरा करने के लिए रचनात्मक प्रयासों के साथ कलाकारों की कृतियों में वैकल्पिक तरीकों और माध्यमों में प्रयोग करने की कोशिश करने के लिए स्वतंत्रता प्रदान करते है। साथ ही कला मेले, कला बिनाले और कला शिखर आदि चुनौतियों का सामना करने एवं कला के निर्माण में कलाकारों का नवीन दृष्टिकोण विकसित करने के लिए नया आकाश प्रदान कर रहे है।

उत्तर प्रदेश की संस्कृति के अन्तर्गत यहाँ चित्रकला का विकास प्रागैतिहासिक काल से लेकर समसामयिक चित्रकला में भी दिखायी देता है। लखनऊ में कला एवं शिल्प महाविद्यालय की स्थापना एवं भारतीय चित्रकार असित कुमार हल्दार के माध्यम से उत्तर प्रदेश में परम्परागत भारतीय चित्रकला का विकास शुरू हो गया। उत्तर प्रदेश में चित्रकला के विकास हेतु इसके विभिन्न क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में कला की शिक्षा दी जाने लगी। चित्रकला के विकास के सन्दर्भ में ही बहुत से कला विथिकाओं,

ललित कला अकादमी, कला संस्थाओं, कला संग्रहालयों आदि के महत्वपूर्ण योगदान से आज हम समसामयिक चित्रकला के विकसित रूप को देखते हैं। जिससे विद्यार्थी, कलाकारों/चित्रकारों को कला के साथ ही इससे सम्बन्धित होने वाली कला की क्रियाएँ जैसे-चित्रों की प्रदर्शनियों, उनके संग्रहों, कला शिविर की क्रियाएँ जैसे चित्रों को पुरस्कृत, सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित करने के विभिन्न माध्यमों से चित्रकला का विकास उत्तर प्रदेश में हो रहा है।

उत्तर प्रदेश की चित्रकला में रेखाओं रुपों, धरातलों के साथ-साथ रंगों का भी अपना प्रमुख स्थान है। इनकी दो विशेषताएं है पहली रेखाओं में लयात्मक सौन्दर्य और दूसरी विशेषता सूक्ष्मता के साथ मिश्रित रंग योजना अर्थात कोमल रंगों की विभिन्न स्तरीय मिश्रित प्रयोगों की प्रभावोत्पादकता। यद्यपि जल रंगों का प्रयोग ही सर्वोच्च रहा है। लेकिन बाद में जल रंगों का स्थान टेम्परा ने ले लिया। कुछ पारम्परिक चित्रकार चित्रों के निर्माण में एक्रेलिक रंगों का प्रयोग सहजता से कर रहे है। क्योंकि खनिज रंग तैयार होने में परिश्रम और समय अधिक लगता है।

भारतीय चित्रकला प्रारम्भ से ही अपनी एक खास तकनीक और विषय के लिए जानी जाती है। तकनीक और विषय चित्रकला का वो पहलु है जिसने भारतीय चित्रकला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ला खड़ा किया है। समस्या यह है की इसका ज्ञान अभी तक कला प्रेमियों, कला साधकों एवं शोधार्थियों को पूर्णतः नहीं हो पाया है, क्यूंकि इस विषय पर अभी तक कोई साहित्य या शोध कार्य देखने को नहीं मिलता है। शोध का यह एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसे हमने अपने शोध के लिए चुना है। युग परिवर्तन के साथ ही चित्रों के विषय और तकनीक में विविधता का स्पष्ट रूप देखा जा सकता है। शोध के दौरान इसी परिवर्तनशीलता को समझने का प्रयास किया गया है।

समसामयिक कला का विस्तार व उनके कलाकारों द्वारा दिये गये योगदान में कला संगठनों की विशेष भूमिका है किन्तु वर्तमान में इस अनछुये प्रसंग पर व्यापक शोध का अभाव हैं। यह शोध समसामयिक कला के अनेक अनछुये पहलुओं का उद्घाटन करेगा साथ ही उत्तर प्रदेश में परम्परागत व आधुनिक कला के विस्तार व कलाकारों को मान्यता दिलाने आदि में कला संगठनों की महत्ता सिद्ध करने में उपयोगी होगा तथा आने वाले समय में इस क्षेत्र में अध्ययन व शोध के नये आयाम विकसित होगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ 15.
2. कक्कड़ कृष्णनारायण (सं.)-समकालीन कला संदर्भ तथा स्थिति ललित कला अकादमी, नई दिल्ली-1980.
3. वशिष्ठ राधाकृष्ण- राजस्थान के तैल चित्रकार कलाभूषण मास्टर कुन्दनलाल मिस्त्री, इलाहाबाद।
4. भारद्वाज विनोद - बृहद आधुनिक कला कोश दिल्ली-2015.
5. हाउजर आर्नल्ड (अनुवादक गोपाल प्रधान) कला इतिहास का दर्शन ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली- 2008.
6. प्रो॰ सक्सेना बी॰एल॰, डॉ. आनन्द लखटकिया, कला सिद्धान्त एवं परम्परा, पृष्ठ- 159-160.
7. अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ- 121-122.
8. गोस्वामी प्रेमचन्द- आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ रा॰ हि॰ ग्रं॰ अ॰ जयपुर- 1995.
9. Experience.(n.d.). Gov.In. Retrieved October 18, 2022, from https://www.uptourism.gov.in/en/page/arts-crafts